लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका

लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ उन्तालीसवां अंक जनवरी–मार्च, 2022



भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली–110124



सरसों के खेतों में वसंत ऋतु के आगमन पर खुशी मनाती हुई महिलाएँ



पारंपरिक रीति–रिवाजों के अनुसार लोहड़ी के पर्व को मनाती हुई महिलाएँ



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ उन्तालीसवां अंक

हिंदी त्रैमासिक पत्रिका
(जनवरी–मार्च, 2022)

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
नई दिल्ली–110124

सरकारी कामकाज हिंदी में करना कोई बहुत मुश्किल काम नहीं है।

आप शुरू तो कीजिए धीरे-धीरे आपको लगने लगेगा ये तो बहुत ही आसान है।



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ उन्तालीसवां अंक (जनवरी–मार्च, 2022)

अनुक्रमणिका

		पृ.सं.
	पत्रिका परिवार एवं संपादकीय	5
	पाठकों के नाम संदेश	6
	आपके पत्र	7

लेख

		पृ.सं.
1.	सुर–साम्राज्ञी लता मंगेशकर *सुश्री राजकुमारी शर्मा*	12
2.	वसंत ऋतु *सुश्री सं.ग. श्रीमती*	15
3.	लोहड़ी *सुश्री पूनम रानी*	17
4.	भारतीय संस्कृति के विकास में हिंदी का योगदान *अभय राम सिंह*	19
5.	मानव जीवन में प्राकृतिक पर्यावरण का महत्व *सुश्री मीना भारद्वाज*	25
6.	सूचना का अधिकार अधिनियम : अवरोध एवं भविष्य *विनोद कुमार शर्मा*	28
7.	वर्तमान में हिंदी का बढ़ता प्रभाव *संजीव कुमार*	30
8.	संसदीय राजभाषा समिति की कार्यविधि और कार्य–संचालन नियमावली *किरन पाल सिंह*	32
9.	केंद्रीय स्वायत्त निकायों की लेखापरीक्षा का अवलोकन *सुश्री आरती शर्मा*	35

पृ.सं.

10. हिमाचल की वादियों–पहाड़ियों का सैर–सपाटा 37
ललित कुमार वर्मा

11. शहीद दिवस : जरा याद करो कुर्बानी 44
सुश्री नेहा यादव

12. अनुतान अथवा सुर लहर 47
गौरव हारिथ

कहानी

13. नो... थैंक्स... 50
सुश्री मीनाक्षी

14. हमरो बचपन 53
देवानन्द कुमार सिंह

कविताएँ

15. कैसी ये उलझनें 55
सुश्री कल्पना वर्मा

16. नया साल नयी आशा : कोविड के साथ जिंदगी की भाषा 56
सय्यद शैबान फैजल

17. अनुरोध 57
सुश्री नीतू सिंह

पृ.सं.

18. गोमाता के दोहे 58
डॉ. प्रवीण कुमार

19. समझ 60
मेहरबान सिंह नेगी

20. दो बूँदें 61
पंकज अरोरा

21. धरती का दर्द 62
मुनीष भाटिया

22. प्रयोगवादी कविताएँ 63
संजय कुमार सिंह

23. दो कविताएँ 64
ए.एम. सालवे

24. जीवन और तुम 65
योगेश कुमार मिश्र

25. दो ग़ज़लें 66
सुश्री मनजीत शर्मा 'मीरा'

यात्रा वृत्तांत

26. आँखों देखी बाबा आदम की धरती : अफ्रीका (भाग–3) 68
कमलजीत सिंह रामुवालिया



स्वत्वाधिकार
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

प्रकाशन
''लेखापरीक्षा प्रकाश''
(त्रैमासिक हिंदी पत्रिका)

प्रकाशक
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली–110124

एक सौ उन्तालीसवां अंक
(जनवरी–मार्च, 2022)

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री गिरीश चंद्र मुर्मू
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

संरक्षक

श्री के.एस. सुब्रमण्यन
अपर उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

संपादक मण्डल

प्रधान संपादक

श्री कमलजीत सिंह रामुवालिया
प्रधान निदेशक (राजभाषा)

संपादक

श्री अनिल कुमार पिलानी
वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी

सहायक संपादक

सुश्री मीनाक्षी
सहायक प्रशासन अधिकारी

श्री हीरा बल्लभ भट्ट
सलाहकार

रचना चयन समिति

श्री अनिल कुमार पिलानी
वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी

सुश्री मीनाक्षी
सहायक प्रशासन अधिकारी

सुश्री रेखा
सहायक प्रशासन अधिकारी

मुद्रक : आकांक्षा इम्प्रेशंस
जी–194, सेक्टर–2, बवाना, दिल्ली

मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा

नोट– पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के साथ संपादक मंडल का सहमत होना जरूरी नहीं है।



संपादकीय

आपकी अपनी त्रैमासिक गृह पत्रिका का एक सौ उन्तालीसवां (जनवरी–मार्च, 2022) अंक आपको सौंपते हुए मुझे एक सुखद अनुभूति हो रही है। इस राजभाषा यज्ञ में रचनाकारों और सुधी पाठकों के अनवरत सहयोग से ही यह पत्रिका शिखर पर विराजमान है और कई विद्वानों की प्रशंसा का पात्र बनी हुई है।

पत्रिका के इस अंक में हमने 'सुर–साम्राज्ञी लता मंगेश्कर' के जीवन परिचय, 'वसंत ऋतु', 'वैश्विक भाषा के रूप में हिंदी', 'भारतीय संस्कृति के विकास में हिंदी का योगदान' और 'सूचना का अधिकार अधिनियम : अवरोध एवं भविष्य' इत्यादि लेखों एवं कविताओं का समावेश किया है। हम यह आशा करते हैं कि यह अंक आपकी रूचि में खरा उतरे।

प्रत्येक मानव का एक अपना व्यक्तित्व होता है। इस व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति करने का सर्वोत्तम माध्यम भाषा है। मनुष्य के विभिन्न समुदायों के अपने–अपने आदर्श, भावनाएं, विचार, कर्मविधियां और संस्कृति होती हैं। इनकी अभिव्यक्ति के लिए भाषा ही एकमात्र साधन है। भाषा माध्यम ही दर्शन, साहित्य और काव्य में किसी विशिष्ट मानव समुदाय अथवा राष्ट्र की अपनी पहचान प्रतिबिंबित होती है। भाषा वैश्विक समन्वय का सूत्र है। भाषा के प्रयोग से ही व्यक्ति समाज का सार्थक सदस्य बनता है। राष्ट्रीय एकता के दृष्टिकोण का निर्माण राष्ट्रभाषा के द्वारा ही होता है। राष्ट्रभाषा राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीय चेतना तथा राष्ट्रीयता का प्रतीक है। साथ ही साथ यह आध्यात्मिक चिंतन, मनुष्य के भावों और विचारों की संवाहिका भी है।

राजभाषा हिंदी अब अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी अमिट छाप छोड़ने की दिशा की ओर अग्रसर है। हमें अपने राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रगान की भांति ही अपनी राजभाषा हिंदी को सम्मान देना चाहिए तथा इसके व्यापक, विस्तृत एवं विकसित रूप को स्वीकार कर शासकीय कामकाज में इसके प्रयोग को और अधिक बढ़ाने के लिए अपने नैतिक एवं संवैधानिक दायित्व का पालन करना चाहिए तथा हिंदी भाषा का प्रयोग करते हुए स्वयं को गौरवान्वित महसूस करना चाहिए। यही हमारा राजभाषा एवं राष्ट्र के प्रति सच्चा प्रेम एवं सम्मान का परिचायक होगा।

आपका शुभाकांक्षी
(कमलजीत सिंह रामुवालिया)
प्रधान संपादक

नई दिल्ली

पाठकों के नाम संदेश

प्रिय पाठकों,

जय हिंद! विभागीय त्रैमासिक हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा प्रकाश" का यह एक सौ उन्तालीसवां (जनवरी–मार्च, 2022) अंक आपके समक्ष है। इस पत्रिका से रचनात्मकता व भावात्मकता से जुड़े विभागीय व विभागेत्तर रचनाकारों ने अपनी नवीनतम सरसतापूर्ण कविताओं व सरल रचनाओं में अविरल भावों को समेट कर अपने बहुमूल्य विचार आप तक पहुंचाए हैं। इन रचनाकारों व उद्दीयमान रचनाधर्मियों की सुन्दरतम कृतियों की प्राप्ति से संपादक मण्डल को अत्यंत प्रसन्नता होती है। यह प्रसन्नता का विषय है कि इसके माध्यम से नवांकुरण हो रहा है। आशाएं तो अनंत हैं तथा राष्ट्रीय व पाठकीय हित में समुचित सार्थक प्रयास भी जारी हैं।

'आपके पत्र' स्तम्भ में आप जैसे पाठकों की प्रतिक्रिया हिंदी के पठन–पाठन में पाठकों की बढ़ती अभिरूचि के संकेतों के साथ–साथ राजभाषा के प्रति अथाह प्रेम व राष्ट्रीय चिंतन भाव परिलक्षित होता है। आपकी दक्ष लेखनी से निकली निष्पक्ष समालोचनात्मक भाषा–शैली, शब्द चयन व अपनी भाषा में भावाभिव्यक्ति की कुशलता से हार्दिक प्रसन्नता होती है। आपके पत्रों से हम एक ओर यह आकलन करते हैं कि किस प्रकार की कविताएं, कहानियां, लेख आदि पाठकों को अच्छे लगे तो दूसरी ओर आपके पत्रों में समाहित शब्दों से सम्मिलित ऊष्म भावों से रचना शिल्पियों को निरंतर उत्साहवर्धक ऊर्जा प्राप्त होती है। आपके उत्साहवर्धन से हम रचनाकारों की रचनाओं में निरंतर सुधार पा रहे हैं।

अतः हम यही कहते हैं कि हमारी इस पत्रिका का यह स्तम्भ महत्वपूर्ण व बहुउद्देशीय है। हर बार हम सरकारी कार्यालयीन पत्रिका प्रकाशन की रीति–नीति के मद्देनजर राजभाषा धर्म का पालन करते हुए एवं पाठकों की प्रतिक्रिया को ध्यान में रखते हुए पठन–पाठन में उनकी रूचि बनाए रखने के प्रति भी सतर्क हैं। यह इसलिए है क्योंकि पत्रिका–प्रकाशन वास्तव में पाठकों के लिए ही तो है।

आपका शुभाकांक्षी
(अनिल कुमार पिलानी)
संपादक

नई दिल्ली



रचनाओं के मध्य छायाचित्र अत्यन्त सार्थक, सुन्दर एवं विषयानुकूल हैं

पत्रिका "लेखापरीक्षा प्रकाश" के 137वें अंक का ई–संस्करण प्राप्त हुआ है, एतदर्थ धन्यवाद। ई–पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की हैं। रचनाओं के मध्य छायाचित्र अत्यन्त सार्थक, सुन्दर एवं विषयानुकूल हैं। 'मातृभाषा की जीवंतता : मूक और बधिर के संदर्भ में', 'राष्ट्र निर्माण में युवाओं का योगदान', 'रानी अब्बक्का चौटा – भारत की प्रथम महिला स्वतंत्रता सेनानी' आदि रचनाएं हमें देश–भक्ति का संदेश देती हैं तथा 'प्रदूषण की समस्या एवं उसका निदान', 'हिंदी उपन्यास', 'हार्ट अटैक', 'निर्झर गान', 'अल्पविराम', 'अभिलाषा', आदि रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजक हैं। पत्रिका राजभाषा कीर्ति पुरस्कार को चरितार्थ करती है। उत्कृष्ट श्रेणी की संयोजन एवं संपादन के लिए संपादक मण्डल को बधाई। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाण, चण्डीगढ़

पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं पठनीय, सराहनीय एवं बधाई के पात्र हैं

हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के 137वें अंक की ई–संस्करण इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्ति हुई है। अंक का प्रस्तुतीकरण आकर्षक है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं पठनीय, सराहनीय एवं बधाई की पात्र हैं। पत्रिका में मुख्यतः आँखों देखी बाबा आदम की धरती : अफ्रीका, मुख्यालय में, अभिलाषा, उपभोक्तावाद तथा हार्ट अटैक आकर्षण का केंद्र हैं। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं कुशल संपादन के लिए 'संवाद' परिवार की ओर से ढेर सारी शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी अनुभाग)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (इन्फ्रास्ट्रक्चर)
नई दिल्ली

पत्रिका राजभाषा के प्रचार–प्रसार के लिए अत्यंत सराहनीय प्रयास है

राजभाषा हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के 137वें अंक की प्रति प्राप्त हुई है जिसके लिए हार्दिक धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित किसी एक रचना की प्रशंसा करना, पत्रिका में प्रकाशित अन्य रचनाओं की उपेक्षा करना होगा, क्योंकि पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं प्रभावशाली, रोचक एवं उच्चकोटि की हैं जिसके लिए सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आपकी यह पत्रिका राजभाषा के प्रचार–प्रसार के लिए अत्यंत सराहनीय प्रयास है, जिसकी निरंतर प्रगति एवं सफलता के लिए पत्रिका समूह के संपादन एवं प्रकाशन मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई।

उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.)
हिमाचल प्रदेश, शिमला

पत्रिका का यह अंक उत्कृष्ट और श्रेयस्कर है तथा समस्त रचनाएं प्रेरणास्पद, मनोरंजक एवं विविधतापूर्ण है

हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' की 137वें अंक की प्रति प्राप्त हुई है, अनेक धन्यवाद। सदैव की भांति

पत्रिका का यह अंक भी उत्कृष्ट और श्रेयस्कर है तथा समस्त रचनाएं प्रेरणास्पद, मनोरंजक एवं विविधतापूर्ण है। श्री अभय राम सिंह की रचना 'मातृभाषा की जीवंतता' भाव, रस, ज्ञान और लोक संस्कृति के उदाहरण से परिपूर्ण हैं तथा बार–बार पठन योग्य है। श्री गौरव हारिथ का लेख 'ध्वनि विज्ञान' भाषा के जानकारों के लिए एक रोचक लेख हो सकता है। श्री मेहरबान सिंह नेगी का लेख 'वेदी की विधवा' स्वतंत्रता पूर्ण ग्रामीण भारत के लोकाचार, सामाजिक परिस्थितियों एवं दृश्य घटनाओं का सुंदर चित्रण करती है। अन्य रचनाएं भी पठनीय हैं। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को बधाई एवं इसकी प्रगति और अगले अंक के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हि.क.)
कार्यालय महालेखाकार, गोवा

पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषयानुसार रचनाओं का बड़ी खूबसूरती से वर्णन किया है

हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' की 137वें अंक की ई–प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। सर्वप्रथम कार्यालय को सर्वश्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए राजभाषा कीर्ति पुरस्कार 2020–21 की प्राप्ति पर बहुत–बहुत बधाई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषयानुसार रचनाओं का बड़ी खूबसूरती से वर्णन किया है। इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में, सुश्री अनामिका अंतिल की रचना 'देश के सांस्कृतिक विस्तार में हिंदी की भूमिका', सुश्री पूनम रानी की रचना 'स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी की भूमिका', श्री अभय राम सिंह की रचना 'मातृभाषा की जीवंतता : मूक और बधिर के संदर्भ में', श्री उदय प्रताप सिंह की रचना 'लेखापरीक्षा का बढ़ता महत्व', श्री विनोद कुमार शर्मा की रचना 'अभिव्यक्ति एवं संवाद का सशक्त माध्यम–भाषा', सुश्री सं.ग. श्रीमती की रचना 'रानी अब्बक्का चौटा–भारत की प्रथम महिला स्वतंत्रता सेनानी', श्री गौरव हारिथ की रचना 'ध्वनि विज्ञान', श्री बी. एस. चौहान की रचना 'हार्ट अटैक', श्री मेहरबान सिंह नेगी की रचना 'वेदी की विधवा', श्री रविन्द्र की रचना 'वजूद', सुश्री मनजीत शर्मा की रचना 'गजल' और श्री अमित कुमार की रचना 'उपभोक्तावाद', विशेष रूप से ध्यानाकर्षित करती है। पत्रिका के मुख पृष्ठ पर मुख्यालय द्वारा राजभाषा कीर्ति पूरस्कार 2020–21 की प्राप्ति का और अंतिम पृष्ठ पर प्राप्त राजभाषा शील्ड का चित्र सुंदर एवं प्रेरणादायक है, जो भविष्य में और भी अधिक बेहतर तरीके से कार्य करने की प्रेरणा देते हैं। पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मंडल को बहुत–बहुत बधाई। पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.)
गुजरात, राजकोट

पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएं

हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के 137वें अंक की ई–पत्रिका ई–मेल द्वारा इस कार्यालय को प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण आकर्षक है साथ ही इसकी साज–सज्जा मुद्रण भी अति उत्तम है। श्री उदय प्रताप सिंह, सहायक निदेशक (रा.भा.) का लेख 'लेखापरीक्षा का बढ़ता महत्व', श्री सुभाष कुमार नेमा, वरिष्ठ लेखाधिकारी की कविता 'निर्झर गान' एवं सुश्री नीतू सिंह, वरिष्ठ लेखाकार की कविता 'आज का इंसान' अत्यंत ही प्रशंसनीय है। पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं ज्ञानवर्धक, लाभप्रद तथा पूर्ण रूप से पठनीय हैं। श्रेष्ठ संपादन के लिए पत्रिका परिवार को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (गृ.शि. एवं कौ.वि.)
नई दिल्ली

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं न केवल उच्चकोटि की ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी व पठनीय हैं बल्कि सामाजिक पक्षों से जुड़े कई संदेश भी देती है।

हिंदी त्रैमासिक पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के 137वें अंक की ई–संस्करण की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई।

सर्वप्रथम इसके लिए सहर्ष आभार व्यक्त करते हैं। राजभाषा हिंदी के विकास में योगदान स्वरूप पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के 137वें अंक का ई–संस्करण डिजीटल रूप में आज सहजता से भी पाठकों के हाथों में पहुंच चुका है जो स्वयं में एक विकास क्रांति है। पत्रिका की साज–सज्जा, विषय एवं आवरण पृष्ठ स्वतः ही पाठकों का ध्यान आकर्षित करते हैं। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं न केवल उच्चकोटि की ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी व पठनीय हैं बल्कि सामाजिक पक्षों से जुड़े कई संदेश भी देती है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं में श्री अभय राम सिंह जी की 'मातृभाषा की जीवंतता : मूक और बधिक के संदर्भ में', श्री कमलजीत सिंह रामुवालिया जी की 'आँखों देखी बाबा आदम की धरती : अफ्रीका', सुश्री राजकुमारी शर्मा जी की 'प्रदूषण की समस्या और उसका निदान', श्री अमित कुमार जी की 'उपभोक्तावाद', एवं श्री विनोद कुमार शर्मा जी की 'अभिव्यक्ति एवं संवाद का सशक्त माध्यम – भाषा' विशेषरूप से उल्लेखनीय है। आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार– प्रसार के साथ–साथ कार्यालय के अधिकारियों/ कर्मचारियों की हिंदी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के उत्तम संपादन हेतु पत्रिका परिवार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के सतत् प्रकाशन एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (प्रशा./हि.)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व हक.)
बिहार, पटना

इस अंक की सभी रचनाएं उच्चस्तरीय, बहुआयामी, सुसंपादित और मन–आत्मा पर गहरा प्रभाव डालने वाली है।

हिंदी त्रैमासिक पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के 137वें अंक की ई–संस्करण की प्राप्ति हुई। अतः आभार स्वीकार करें। ई–पत्रिकाओं का प्रकाशन पर्यावरण की दृष्टि से आवश्यक एवं वर्तमान में प्रासंगिक दोनों ही हैं, अतः इस संबंध में संपादक मंडल विशेषरूप से बधाई के पात्र हैं। सदैव की भांति इस अंक की सभी रचनाएं उच्च स्तरीय, बहुआयामी, सुसंपादित और मन–आत्मा पर गहरा प्रभाव डालने वाली है। पत्रिका की छपाई, साज–सज्जा और रचनाएं प्रेरणास्पद, सौंदर्य बोध से युक्त व ज्ञानवर्धक हैं और साथ ही पत्रिका के मुख्य आवरण पृष्ठ बड़ी ही सुंदरता से चयनित किया गया है जोकि अनायास ही पाठकों का ध्यान आकर्षित करते हैं। इसके अतिरिक्त पत्रिका में बड़ी ही सुंदरता के साथ ऐनिमेशन का प्रयोग भी किया गया है, जिससे पत्रिका में चार–चांद लग गये हैं। पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं समान रूप से अच्छी हैं परन्तु श्री उदय प्रताप सिंह जी का लेख 'लेखापरीक्षा का बढ़ता महत्व', श्री गौरव हारिथ जी का लेख 'ध्वनि विज्ञान', सुश्री नीतू सिंह जी की कविता 'आज का इंसान' और श्री रविन्द्र सिंह जी की कविता 'वजूद' पत्रिका में विशेष रूप से अपनी ओर ध्यान आकर्षित करती हैं। पत्रिका के संपादक मंडल व रचनाकारों को पत्रिका के सफल संपादन के लिए हार्दिक बधाई। यह पत्रिका इस प्रकार 'नभः स्पर्श दिप्तम' के प्रतिमान को साकार करती रहे। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ उप महालेखाकार
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक.)
असम, गुवाहाटी

रचनाएं ज्ञानवर्धक, पठनीय एवं प्रभावपूर्ण हैं एवं पत्रिका की साज–सज्जा और मुद्रण भी उत्कृष्ट है।

हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के 137वें अंक की ई–प्रति प्रेषित करने हेतु आभार एवं धन्यवाद। पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित रचनाएं ज्ञानवर्धक, पठनीय एवं प्रभावपूर्ण हैं। पत्रिका की साज–सज्जा और मुद्रण भी उत्कृष्ट है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ राजभाषा कीर्ति पुरस्कार 2020–21 के प्रथम पुरस्कार से सम्मानित भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय पर केन्द्रित है, जो सम्पूर्ण विभाग के लिए प्रेरणादायी है। राष्ट्र को सांस्कृतिक एकता के सूत्र में एकताबद्ध करने और सशक्त बनाने में राजभाषा हिंदी की ऐतिहासिक भूमिका पर केन्द्रित सुश्री अनामिका अंतिल रचित 'देश के सांस्कृतिक विस्तार में हिंदी की भूमिका', राष्ट्र के सर्वांगीण

विकास हेतु युवा शक्ति की महती उपयोगिता पर केंद्रित सुश्री मीना भारद्वाज रचित 'राष्ट्र निर्माण में युवाओं का योगदान', सार्वजनिक कोष के संरक्षण और समूचित नियंत्रण के लिए लेखापरीक्षा की प्रासंगिकता पर केंद्रित श्री उदय प्रताप सिंह रचित 'लेखापरीक्षा का बढ़ता महत्व' तथा दक्षिण भारत की वीरांगना 'स्वतंत्रता सेनानी रानी अब्बक्का चौटा के अदम्य शौर्य और त्याग की गाथा पर केंद्रित सुश्री सं.ग. श्रीमती रचित 'रानी अब्बक्का चौटा–भारत की प्रथम महिला स्वतंत्रता सेनानी' विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं। विभागीय कार्मिकों की रचनात्मकता को उचित मंच प्रदान करने और राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के अभियान में 'लेखापरीक्षा प्रकाश' सदैव अग्रगण्य रहा है। इसका भविष्य और उज्ज्वल हो इसी कामना के साथ समस्त संपादक मंडल और रचनाकारों को बधाई एवं शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
बिहार, पटना

सभी रचनाएं रूचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं

पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' का 137वां अंक प्राप्त हुआ। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रूचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अति मनोहर एवं आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र भी अति मनमोहक हैं। सुश्री पूनम रानी की 'स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी की भूमिका', श्री अभय राम सिंह की 'मातृभाषा की जीवंतता : मूक और बधिर के संदर्भ में', सुश्री कुसुमलता की 'कोरोना एवं पर्यावरण', श्री रविन्द्र सिंह की 'वूजद', श्री कमलजीत सिंह रामुवालिया की 'आँखों देखी बाबा आदम की धरती : अफ्रीका' रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं। पत्रिका को सुरूचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने के लिए संपादकीय परिवार को बधाई। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.)
पंजाब, चण्डीगढ़

पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं

त्रैमासिक हिंदी ई–पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' का 137वां अंक सहर्ष प्राप्ति हुई है। राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में अग्रणी भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक कार्यालय को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार 2020–21 (प्रथम पुरस्कार) से सम्मानित किया जाना अत्यंत हर्ष का विषय है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि राजभाषा हिंदी के सफल कार्यान्वयन के लिए राजभाषा विभाग द्वारा प्रदान की गई 12 'प्र', रणनीति–रूपरेखा से संबंधित प्रमुख बिन्दुओं अर्थात – प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, प्राइज (पुरस्कार), प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रमोशन (पदोन्नति), प्रतिबद्धता, प्रयास की समुचित विकास एवं अनुपालना की दिशा में यह सम्मानित पुरस्कार मुख्यालय सहित सभी अधीनस्थ कार्यालयों के लिए प्रेरणादायक सिद्ध होगा एवं कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए राजभाषा हिंदी में कार्य करने हेतु नवीन ऊर्जा का संचार करेगा। पत्रिका का मुखपृष्ठ की साज–सज्जा आकर्षणीय और प्रेरणादायक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं सुरूचिपूर्ण, ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। हिंदी त्रैमासिक ई–पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक.)
मेघालय, शिलांग

राजभाषा हिंदी के विकास में पत्रिका अपनी महत्ती भूमिका का निर्वाह कर रही है

पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' की एक सौ सैंतीसवां अंक की ई–पत्रिका प्राप्त हुई, तदहेतु धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है, पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपने विषयों के अनुकूल रचनाओं का बहुत ही सुंदर तरीके से वर्णन किया है। इसके लिए सभी रचनाकार

बधाई के पात्र हैं। राजभाषा हिंदी के विकास में पत्रिका अपनी महत्ती भूमिका का निर्वाह कर रही है। सुश्री अनामिका अंतिल की 'देश के सांस्कृतिक विस्तार में हिंदी की भूमिका', सुश्री पूनम रानी की 'स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी की भूमिका', सुश्री राजकुमारी शर्मा की 'प्रदूषण की समस्या और उसका निदान' एवं श्री कमलजीत सिंह रामुवालिया जी का 'यात्रा वृतांत' आदि रचनाएं विशेष सराहनीय हैं। रचनात्मकता एवं संकलन हेतु संपादक मंडल के सभी सदस्यों एवं सभी रचनाकारों को 'कुरिंजि' परिवार की तरफ से बधाई देती हूँ तथा 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के सफल प्रकाशन एवं सुंदर छपाई के लिए हमारी हार्दिक शुभकामनाएं।

हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा–।।)
तमिलनाडु एवं पुदुचेरी, चेन्नई

पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं हमारे भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के सदस्यों की सृजनात्मकता को बढ़ावा देती है

'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ सैतीसवें अंक का ई–संस्करण अग्रेषित करने हेतु हार्दिक शुभकामनाएं। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं हमारे भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के सदस्यों की सृजनात्मकता को बढ़ावा देती है। सभी रचनाएं सुरूचिपूर्ण तथा ज्ञानप्रद हैं। विशेषकर श्री उदय प्रताप सिंह की 'लेखापरीक्षा का बढ़ता महत्व', सुश्री मीना भारद्वाज की 'राष्ट्र निर्माण में युवाओं का योगदान', श्री गौरव हारिथ की 'ध्वनि विज्ञान', सुश्री सं.ग. श्रीमती की 'रानी अब्बक्का चौटा–भारत की प्रथम महिला स्वतंत्रता सेनानी' तथा श्री मेहरबान सिंह नेगी की 'वेदी की विधवा' अति प्रभावी है। इस पत्रिका के प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को बधाईयां एवं शुभकामनाएं।

उप निदेशक (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
केन्द्रीय, चेन्नै

पत्रिका उत्तरोत्तर इसी प्रकार गुणवत्ता का प्रदर्शन करती रहे

'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ सैतीसवें अंक का ई–संस्करण प्राप्त हुआ। पढ़कर प्रसन्नता हुई। पत्रिका का मुख्यचित्र बहुत आकर्षक है। सुश्री पूनम रानी का लेख 'स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी की भूमिका' हिंदी के महत्व पर प्रकाश डालती है। श्री गौरव हारिथ की रचना 'ध्वनि विज्ञान' हिंदी व्याकरण के विविध रूपों पर प्रकाश डालती है। सुश्री राजकुमारी शर्मा की 'प्रदूषण की समस्या एवं उसका निदान' एक अच्छी रचना है। श्री मेहरबान सिंह नेगी की रचना 'वेदी की विधवा' एवं श्री बी.एस. चौहान की 'हार्ट अटैक' अच्छी कहानियां हैं। श्री सुभाष कुमार नेमी की 'निर्झर गान' एक अच्छी कविता है। सुश्री नीतू सिंह की 'आज का इंसान' एवं श्री अमित कुमार का 'उपभोक्तावाद' भी अच्छी कविताएं हैं। अन्य रचनाएं भी बहुत प्रशंसनीय हैं। संपादक मंडल को अच्छी पुस्तक प्रकाशन के लिए साधुवाद। पत्रिका उत्तरोत्तर इसी प्रकार गुणवत्ता का प्रदर्शन करती रहे, ऐसी शुभकामनाएं।

हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक.)
तमिलनाडु, चेन्नै

पत्रिका का संपादन, कलेवर एवं रूपांकन उत्कृष्ट हैं

हिंदी गृह पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ सैतीसवें अंक का ई–संस्करण प्राप्त हुआ है, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं प्रत्येक रचना से जुड़े चित्र अत्यधिक आकर्षक हैं। इसमें समाहित रचनाओं का चयन सराहनीय है। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, कहानियां, कविताएं, यात्रा वृत्तांत आदि पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक एवं हिंदी भाषा के प्रति लगाव उत्पन्न करने वाला है। पत्रिका का संपादन, कलेवर एवं रूपांकन उत्कृष्ट हैं। इस स्तर पर सफल एवं राजभाषा के विकास एवं प्रसार हेतु उपयोगी बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं इस पत्रिका के संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व हक.)
केरल, तिरूवनन्तपुरम

सुर–साम्राज्ञी लता मंगेशकर



सुश्री राजकुमारी शर्मा
सेवानिवृत्त वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी
एम–143, साउथ सिटी–1, गुरूग्राम

सुर–साम्राज्ञी लता मंगेशकर पर माँ सरस्वती की असीम कृपा रही है, ऐसा माना जाता है। लता जी भारत की सबसे लोकप्रिय गायिका थीं जिनका छह दशकों का कार्यकाल उपलब्धियों से भरा पड़ा है। उन्होंने तीस से भी अधिक भाषाओं में फिल्मी और गैर–फिल्मी गाने गाए लेकिन भारतीय सिनेमा में उनकी पहचान एक पार्श्व गायिका के रूप में रही है। उनकी जादुई आवाज के दीवाने भारतीय उपमहाद्वीप के साथ–साथ पूरी दुनिया में हैं। लेखिका ने इस लेख में पाठकों के लिए लता जी के बारे में सुंदर प्रस्तुती पेश की है।

सुर–साम्राज्ञी लता पर माँ सरस्वती की असीम कृपा रही है। उनको बॉलीवुड की नाइटेंगेल कहा जाता है। उनका जन्म 28 सितम्बर, 1929 को इंदौर में पंडित दीनानाथ मंगेशकर तथा शेवंती के घर पर हुआ। पंडित दीनानाथ का सरनेम हार्डीकर था जिसे उन्होंने बदलकर मंगेशकर कर दिया। पांच भाई बहनों में लता जी सबसे बड़ी थीं। उनकी तीन बहनें मीना, आशा और ऊषा हैं तथा हृदयनाथ मंगेशकर उनके भाई हैं। लताजी का जन्म का नाम हेमा रखा गया था जिसे बदलकर लता कर दिया गया। उनका लता नाम उनके पिता के नाटक 'भावबंधन' के एक महिला किरदार लतिका के नाम पर रखा गया। सन् 1942 में उनके पिता की मृत्यु होने के समय लता जी की आयु केवल 13 वर्ष की थी। पिता की मृत्यु के बाद लता जी के ऊपर परिवार के भरण–पोषण का भार आ गया।



जन्म – 28.11.1929
निधन – 06.02.2022

लता जी को बचपन से ही अपने घर में गीत–संगीत और कला का माहौल मिला। पांच वर्ष की नन्हीं सी आयु में ही उनके पिता ने उनको संगीत की शिक्षा देनी प्रारम्भ कर दी थी। पांच वर्ष की आयु में उन्होंने एक नाटक में भाग लिया।

लता जी भारत की सबसे लोकप्रिय और आदरणीय गायिका थीं जिनका छह दशकों का कार्यकाल उपलब्धियों से भरा पड़ा है। उन्होंने तीस से अधिक भाषाओं में फिल्मी और गैर–फिल्मी गाने गाए हैं लेकिन भारतीय सिनेमा में उनकी पहचान एक पार्श्व गायिका के रूप में रही है। उनकी जादुई आवाज के दीवाने भारतीय उपमहाद्वीप के साथ–साथ पूरी दुनिया में हैं। उन्हें प्यार से 'लता दीदी' कहकर बुलाया जाता है।

लता जी जब पार्श्व गायन के क्षेत्र में अपना करियर बना रही थीं तब कई गायिकाओं का बोलबाला था। इन गायिकाओं का लता जी पर भी

प्रभाव था। उनको यह समझते देर नहीं लगी कि यदि उन्हें आगे बढ़ना है तो उन्हें अपनी शैली विकसित करनी होगी। उन्होंने इसी आधार पर अपनी खुद की शैली विकसित की तथा पार्श्व गायन की दुनियां में नाम कमाया।

यह लता जी की खूबी ही थी कि वो हर गाने को विशेष बना देती थीं। चाहे वो रोमांटिक गाना हो, राग आधारित हो, भजन हो, देशभक्ति से ओत–प्रोत हो। देशभक्ति के गाए गए गीत में उनका गीत 'ए मेरे वतन के लोगों' काफी चर्चित था। संगीतकारों द्वारा लाए गए कठिन से कठिन गीत भी वे आसानी से गा देती थीं।

लता जी ने कौन से गीत गाए या पसंद किए इसकी सूची बहुत लम्बी है। किसी को किसी संगीतकार के संगीत में लता जी की गायकी पसंद आई तो किसी को दूसरे संगीतकार के संगीत में उनकी गायकी पसंद आई। गिनीज़ बुक में उनका नाम शामिल किया गया था।

पुरस्कार – लता जी ने अपने जीवन में अनेकों पुरस्कार जीते जिनकी सूची इस प्रकार है :

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त पुरस्कार

1. 2001 – भारत रत्न
2. 1999 – पदम् विभूषण
3. 1989 – दादा साहेब फाल्के पुरस्कार
4. 1969 – पद्म भूषण

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार

1. 1972 – फिल्म 'परी' के गीतों के लिए सर्वश्रेष्ठ महिला पार्श्व गायिका का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार

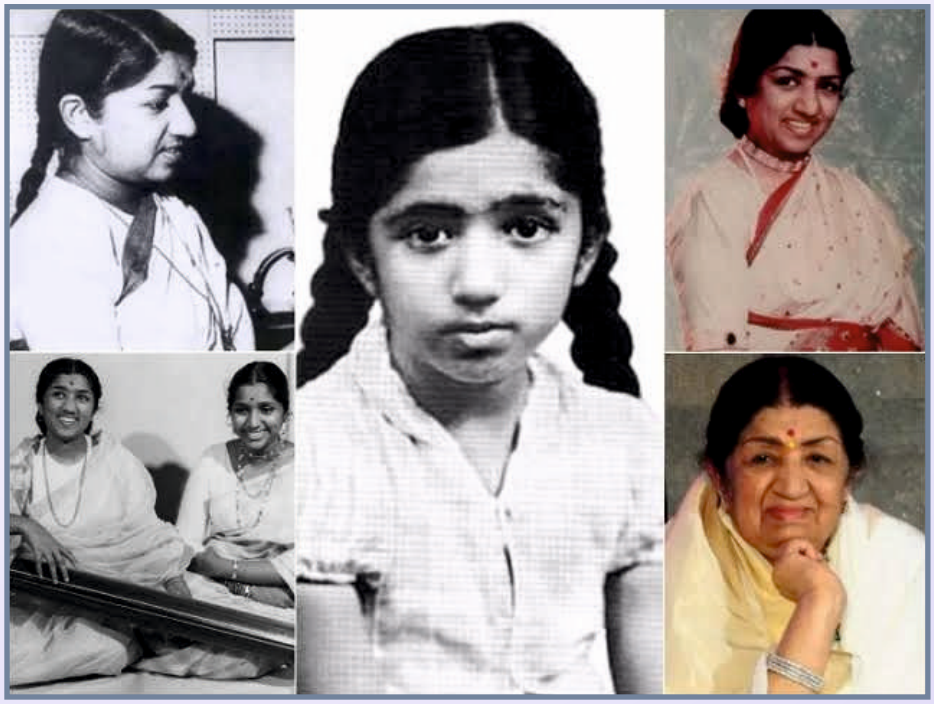
2. 1974 – फिल्म 'कोरा कागज़' के गीतों के लिए सर्वश्रेष्ठ महिला पार्श्व गायिका का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार

3. 1990 – फिल्म 'लेकिन' के गीतों के लिए सर्वश्रेष्ठ महिला पार्श्व गायिका का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार

इसके अलावा उनको सन् 1959, 1963, 1966, 1970, 1993, 1994 तथा 2004 में फिल्म फेयर अवार्ड्स से नवाजा गया।

उनको महाराष्ट्र राज्य फिल्म पुरस्कार भी प्रदान किए गए जो सन् 1966, 1977 में सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायिका के लिए थे तथा 1997 में महाराष्ट्र भूषण पुरस्कार तथा 2001 में महाराष्ट्र रत्न पुरस्कार से उन्हें सम्मानित किया गया।

इसके अतिरिक्त बंगाल फिल्म जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन ने 1964,



लता जी के जीवन की कुछ यादगार तस्वीरें

1967 से 1973, 1975, 1981, 1983, 1985, 1987, 1991 में उन्हें बेस्ट फीमेल प्लेबैक सिंगर के अवार्ड दिए।

उनके दिए गए पुरस्कारों में ढेर सारे पुरस्कार, सम्मान और ट्राफियां शामिल हैं।

लता जी की सफलता का मूलमंत्र यह रहा कि उन्होंने किसी भी काम को बड़ा या छोटा नहीं समझा। उन्होंने कहा कि हमें कार्य को महसूस करना चाहिए। हर कार्य की अपनी पहचान होती है। उन्होंने कहा कि एक बड़ा आदमी बनने के लिए सफलता आवश्यक है। सफलता केवल तभी मिल सकती है जब हमारे अंदर सीखने की चाह हो। क्योंकि कहा भी गया है जहां चाह वहां राह अर्थात् यदि सीखने की इच्छाशक्ति हो तो कुछ भी असंभव नहीं है। लता जी ने बताया कि हमें हमेशा सीखते रहना चाहिए और हमारे अन्दर सीखने की भूख होनी चाहिए।

लता जी एक लीजेंड थीं, जिन पर हर भारतवासी गर्व अनुभव करता है। वे क्रिकेट की बहुत बड़ी फैन थीं। सचिन तेंदुलकर उनके पसंदीदा खिलाड़ियों में से एक रहे।

उनको स्वर कोकिला, मां सरस्वती का अवतार, सुर–साम्राज्ञी सुरों की देवी के रूप में जाना जाता है। उनका संगीत जगत में अद्वितीय स्थान था तथा सदा रहेगा। अपनी सुरीली आवाज के माध्यम से उन्होंने देश–दुनिया पर कई दशकों तक राज किया। उनका योगदान संगीत जगत में अतुलनीय है। संगीत की दुनियां को उन्होंने अपने सुरों से नवाजा। उनकी आवाज में एक जादु था जो सभी को मंत्रमुग्ध कर देता था। संगीत साधकों के लिए वे सदैव प्रेरणा स्रोत रही। उनकी आवाज का माधुर्य जनसाधारण के सिर चढ़कर बोला तथा देखते ही देखते वे चोटी की गायिका बन गईं। कई फिल्में केवल इसलिए सफल रहीं क्योंकि उनके गाए हुए गीत लोकप्रिय रहे। उनकी मेहनत हर गाने में साफ झलकती थी। वे हर गीत को विशेष बना देती थी। उनके गाने क्वालिटी के होने के कारण ही वे सदैव सफलता के शीर्ष पर बनी रहीं।

उनके स्वभाव के बारे में यदि जिक्र किया जाए तो यही कहा जा सकता है कि वे हमेशा अपने सौम्य स्वभाव के लिए जानी गई। तमाम फिल्म, निर्माताओं, निर्देशकों, संगीतकारों, गायकों, हीरो–हीरोइनों के साथ उनके पारिवारिक रिश्ते रहे। उनको हर किसी ने अपने परिवार का हिस्सा माना। पीढ़ी दर पीढ़ी उनके सम्बन्ध मधुर रहे। वे विवादों से सदा दूर रहीं।

संसार का नियम है कि जो इस दुनिया में आया है उसे एक न एक दिन इस संसार को अलविदा कहना पड़ता है। इसी नियम का पालन करते हुए लता जी ने 6 फरवरी, 2022 को मुम्बई के ब्रीच केंडी अस्पताल में अंतिम सास ली और सभी से नाता तोड़ लिया। उनके निधन की खबर सुनते ही मधुर सुरमयी आवाज के लिए मशहूर लता जी के फैंस दुःख के सागर में डूब गए। पूरी दुनिया में एक शोक की लहर दौड़ गयी। हिमाचल प्रदेश सरकार ने लता मंगेशकर को अनूठी श्रद्धांजलि देते हुए उनके नाम पर संगीत महाविद्यालय खोलने का ऐलान किया। उनके न रहने पर मनोरंजन जगत में सन्नाटा पसर गया। उनकी महान गायकी और सुरमय आवाज के दीवाने पूरी दुनिया में हैं तथा उनके लिए लता जी का जाना एक अपूरणीय क्षति है। उनकी मौत से उत्पन्न शून्यता शायद कभी नहीं भर पाएगी।

वसंत ऋतु



सं.ग. श्रीमती
सं. 135, न्यू वी.ई.एल. रोड,
एजीज लेआऊट, बेंगलूर, कर्नाटक

वसंत ऋतु का सीधा संबंध मौसम बदलने से है। इस ऋतु में सर्दी का जोश धीरे–धीरे कम होना शुरू हो जाता है। वसंत ऋतु की महिमा को बयान करता यह लेख प्रस्तुत है।

आया ऋतुरात वसंत, शीत का हुआ अंत,
बागों में हरियाली छाई, प्रकृति मन मोहने आई,
झूम रहे हैं दिग्र दिगंत, छा रहा है आनंद अनंत।

भारत देश में ऋतुएँ क्रम से आती हैं। ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर तथा वसंत। ये ऋतुएँ नियमित रूप से आकर मानव के हृदय में अपूर्व आनंद उत्पन्न करती हैं। छः ऋतुओं में वसंत ऋतु ऋतुराज कहलाती है। यह ऋतु फाल्गुन माह में आरम्भ होकर चैत्र, वैशाख और ज्येष्ठ माह तक रहती है। वसंत ऋतु में हवा अत्यन्त सुहावनी रहती है, न अधिक सर्दी, न अधिक गर्मी, इस ऋतु में प्रकृति का वैभव मनोहर रहता है।

वसंत ऋतु में बाग–बगीचों की शोभा तो अवर्णनीय है। सुगन्ध से भरे फूल मन में अनोखी चेतन जागृत कर देते हैं। लोग इस सौंदर्य का अनुभव करने हेतु बाग–बगीचों में भ्रमण करते हैं। वृक्षों पर बैठे पक्षियों का मधुर कलरव महान भगवान् की अपूर्व लीला का गान करता सा प्रतीत होता है। रंग–बिरंगी तितलियों का फूलों पर मचलना बड़ा सुहावना लगता है। संपूर्ण प्रकृति में मादकता फैलता है। इसलिए इसे ऋतुराज कहते हैं। इस ऋतु में कवियों की भावसरिता, उमंग से भरकर फूट निकलती है।

कविवर श्री मैथिलीशरण गुप्त जी ने 'साकेत' में वसंत का सुंदर चित्रण किया है।

काली काली कोयल बोली
होली होली होली
हँसकर लाल–लाल होठों पर
हरियाली हिल–डोली,
फूटा यौवन, फाड़ प्रकृति की
पीली–पीली चोली
अलस कमलिनी ने कलरव सुन
उन्माद अंखियाँ खोली
मल दी ऊषा ने अंबर में
दिन के मुख पर रोली
होली होली होली

कवि श्रेष्ठ निराला जी की 'सखि वसंत आया' शीर्षक कविता अत्यंत प्रसिद्ध है।

सखि वसंत आया
भरा हर्ष वन के मन,
नवोत्कर्ष छाया,
किसलय वसना, नव–वय लतिका
मिली मधुर प्रिय उर तरु पतिका,
मधुप–वृन्द बन्दी
पिक–स्वर नभ सरसाया।

वसंत का अर्थ है 'फूलों का गुच्छा'। इस अर्थ से यह ज्ञात होता है कि वसंत ऋतु फूलों और खुशियों का

समय है।' पौराणिक कथाओं में वसंत को कामदेव का पुत्र माना गया है। कवि देव ने वसंत ऋतु का वर्णन करते हुए कहा है कि रूप व सौंदर्य के देवता कामदेव के घर में पुत्र जन्म के शुभ समाचार पाते ही प्रकृति झूम उठती है। फूल वस्त्र पहनाते हैं, हवा झुलाती है। वसंत ऋतु की इन्हीं खूबियों के कारण भगवद् गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है – 'ऋतुओं में मैं वसंत हूँ।'

वसंत ऋतु प्रकृति का उपहार है। यह बीमारियों को दूर भगाने का काल है। इस ऋतु में मच्छरों तथा हानिकारक कीटाणुओं का प्रकोप प्रकट हो जाता है। लोग बाज़ार में आए नए अनाज तथा नई सब्जियों का पूरा आनंद उठा लेते हैं। वसंत ऋतु का सीधा संबंध प्रकृति से है। वसंत ऋतु यही चाहती है कि नदियों में स्वच्छ जल प्रवाहित हो, धरती पर बाग–बगीचों की भरमार हो, सब लोग खुशहाल हों। इस ऋतु में ऋषियों ने ऐसे त्यौहार और नियम बनाए जिनका पालन करने से व्यक्ति सुखमय जीवन व्यतीत कर सके। इस ऋतु में होली, धुलेंड़ी, रंग पंचमी, वसंत पंचमी, नवरात्रि, रामनवमी, नव–संवत्सर, हनुमान जयंती, बुद्ध जयंती उत्सव मनाए जाते हैं। रंग पंचमी तथा वसंत पंचमी जहाँ मौसम परिवर्तन की सूचना देते हैं, वहीं नव–संवत्सर नए वर्ष की शुरूआत होती है।



होली–धुलेंडी भक्त प्रह्लाद की याद में मनाई जाती है। वहीं नवरात्रि माँ दुर्गा का उत्सव है। राम नवमी, भगवान् राम के जन्म दिवस के रूप में भक्ति और श्रद्धा से मनाया जाता है। इस त्यौहार को कलात्मक रूप से संगीतोत्सव से मनाया जाता है। हनुमान जयंती तथा बुद्ध पूर्णिमा महापुरुषों का जन्म दिवस होने के नाते भक्ति तथा उत्साह से मनाया जाता है। गुड फ्राइडे और ईस्टर जैसे महत्वपूर्ण त्यौहार भी भारत में वसंत ऋतु में मनाए जाते हैं।

भारतीय साहित्य और कला में वसंत को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। एक विशेष राग बनाया गया है जिसे बसंत और वसंत पुकारते हैं। अंग्रेजी केलेंडर के अनुसार वसंत ऋतु फरवरी से मई माह तक रहती है। यह ऋतु प्रकृति, वातावरण के तापमान में एक विशेष संतुलन बनाए रखती है। इस ऋतु में, प्राकृतिक सौंदर्य से लोगों को भौतिक और मानसिक सुख मिलता है।

वसंत ऋतु के दौरान होली त्यौहार धूमधाम से भारत में मनाया जाता है। असत्य पर सत्य की विजय और दुराचार पर सदाचार की विजय इस त्यौहार मनाने की विशेषता है। होली का त्यौहार प्रह्लाद और होलिका की कथा से भी जुड़ा हुआ है।

वसंत ऋतु किसानों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण मौसम है क्योंकि उनकी फसलें खेतों में पकने लगती हैं और यह समय उन्हें काटने का होता है। वसंत के आगमन पर किसान नई फसलों के पकने का इंतजार करने लगते हैं। सरसों के पीले–पीले फूल खिल–खिलाकर खुशी व्यक्त करते हैं। सरोवरों में कमल के फूल खिलकर आनंद के वातावरण को फैलाते हैं। आसमान में पक्षिगण किलकारियाँ मारकर वसंत का स्वागत करते हैं। मधुमक्खियाँ तथा तितलियाँ फूलों की कलियों के आसपास मंड़राती हैं।

वसंत पंचमी के दिन लोग पूजा और व्रत करके माँ सरस्वती जी से बुद्धि, विद्या और स्वर की मनोकामना करते हैं। निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि वसंत ऋतु अच्छी भावनाएँ, अच्छा स्वास्थ्य और पौधों को नया जीवन देती है। इस ऋतु का प्राकृतिक सौंदर्य हमारे स्वास्थ्य को पोषण देता है तथा मनुष्य, पशु–पक्षी स्वस्थ, सुखी और सक्रिय महसूस करते हैं। आईए, हम वसंत ऋतु का अच्छा उपयोग करें।

लोहड़ी



सुश्री पूनम रानी
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
मुख्यालय

लोहड़ी उत्तर भारत का एक प्रमुख त्यौहार है। इस समय ठंड अपनी चर्म सीमा पर होती है। मकर संक्रांति के दिन मनाये जाने वाले इस त्यौहार की ऐतिहासिक महत्ता को, इस लेख में सांझा किया गया है।

सामान्यतः त्यौहार प्रकृति में होने वाले परिवर्तन के साथ–साथ मनाए जाते हैं। जैसे लोहड़ी में कहा जाता है कि इस दिन वर्ष की सबसे लम्बी रात होती हैं। इसके अगले दिन से धीरे–धीरे दिन बढ़ने लगते हैं। साथ ही इस समय किसानों के लिए भी उल्लास का समय माना जाता है। खेतों में अनाज लहलहाने लगते हैं और मौसम सुहाना सा लगता है। जिसे मिलजुल कर परिवार एवम् दोस्तों के साथ मनाया जाता है। लोहड़ी प्रतिवर्ष मनाई जाती है। त्यौहार भारत की शान है। हर एक प्रदेश के अपने कुछ विशेष त्यौहार हैं, इनमें से एक लोहड़ी है। लोहड़ी पंजाब प्रांत के मुख्य त्यौहारों में से एक है। जिसे पंजाबी जोरों–शोरों से मनाते हैं। लोहड़ी की धूम कई दिनों पहले से शुरू हो जाती है। यह समय देश के हर हिस्से में अलग–अलग नाम से त्यौहार मनाए जाते हैं जैसे मध्य प्रदेश में मकर संक्रांति, दक्षिण भारत में पोंगल का त्यौहार एवम् पतंग उत्सव भी देश के कई हिस्सों में मनाया जाता है। मुख्यतः यह सभी त्यौहार परिवार जनों के साथ मिलजुल कर मनाए जाते हैं। जो आपसी वैर को खत्म करते हैं। पुराणों के आधार पर इसे सती के त्याग के रूप में प्रतिवर्ष याद करके मनाया जाता है। कथानुसार जब प्रजापति दक्ष ने अपनी पुत्री सती के पति महादेव शिव का तिरस्कार किया था और अपने जमाता को यज्ञ में शामिल ना करने से उनकी पुत्री ने अपने आपको अग्नि में समर्पित कर दिया था। उसी दिन को एक पश्चाताप के रूप में प्रति वर्ष लोहडी पर्व मनाया जाता है और इसके कारण घर की विवाहित बेटी को इस दिन उपहार दिए जाते हैं और भोजन पर आमंत्रित कर उसका मान–सम्मान किया जाता है। इसी खुशी के मौके पर श्रृंगार का सामान सभी विवाहित महिलाओं में बाँटा जाता है। लोहड़ी के पीछे एक ऐतिहासिक कथा यह भी है जिसे दुल्ला भट्टी के नाम से जाना जाता है। यह कथा अकबर के शासनकाल की है, उन दिनों दुल्ला भट्टी पंजाब प्रांत का सरदार था, इसे पंजाब का नायक भी कहा जाता था। उन दिनों संदलबार नामक एक जगह थी, जो अब पाकिस्तान का हिस्सा है। वहाँ लड़कियों की बाजारी की जाती थी, तब दुल्ला भट्टी ने इसका

विरोध किया और लड़कियों को सम्मानपूर्वक इस दुष्कर्म से बचाया और उनकी शादी करवाकर उन्हें सम्मानित जीवन दिया। इस विजय के दिन को लोहड़ी के गीतों में गाया जाता है और दुल्ला भट्टी को याद किया जाता है। नाच, गाना और ढोल तो पंजाबियों की शान होते हैं और इसके बिना इनके त्यौहार अधूरे होते हैं।

लोहड़ी आने से कई दिन पहले ही गांवों में युवा एवं बच्चे लोहड़ी के गीत गाते हैं। पन्द्रह दिनों पहले ही यह गीत गाना शुरू कर दिया जाता है जिन्हें घर–धर जाकर गाया जाता हैं। इन गीतों में वीर शहीदों को याद किया जाता है, जिनमें दुल्ला भट्टी का नाम विशेष रूप से लिया जाता है। लोहड़ी में खासतौर पर इन दिनों गन्ने की फसल बोई जाती है और खेतों में सरसों भी आती है। यह ठंड की विदाई का त्यौहार माना जाता है। भारत के हर त्यौहार के विशेष व्यंजन होते हैं। लोहड़ी में गजक, रेवड़ी, मूंगफली खाई जाती है और इनके पकवान भी बनाए जाते हैं। इसमें विशेष रूप से सरसों का साग और मक्की की रोटी बनाई जाती है। इस दिन नव–विवाहित जोड़े को भी पहली लोहड़ी की बधाई दी जाती है और शिशु को भी पहली लोहड़ी के उपहार दिए जाते हैं। लोहड़ी से कई दिनों पहले से कई प्रकार की लकड़ियाँ इकटट्ठी की जाती हैं, जिन्हें शहर के बीच के एक अच्छे स्थान पर, जहाँ सभी एकत्र हो सके, वहाँ सही तरह से जमाई जाती है और लोहड़ी की रात को अपनों के साथ मिलकर इस अलाव के पास बैठते हैं, गीत गाते हैं, खेल खेलते हैं, आपसी गिले शिकवे भुलाकर एक दूसरे को गले लगाते हैं और लोहड़ी की बधाई देते हैं। इस लकड़ी के ढ़ेर पर अग्नि देकर इसके चारों तरफ परिक्रमा करते हैं और अपने लिए और अपनों के लिए दुआएँ मांगते हैं। विवाहित लोग अपने साथी के साथ परिक्रमा लगाते हैं। इस अलाव के चारों तरफ बैठकर रेवड़ी, गन्ने, गजक, मूंगफली आदि का सेवन किया जाता है।

सुंदर मुंदरिए .. हो,
तेरा कौन विचारा .. हो,
दुल्ला भट्टी वाला .. हो,
दुल्ले धी ब्याही .. हो,

तोड़ी ऊपर तोड़ी,
तोड़ी ऊपर साग।
साग विच मिर्च!
मिर्च लगी कोड़ी,
देयो सानू लोहड़ी।



भारतीय संस्कृति के विकास में हिंदी का योगदान



अभय राम सिंह
सेवानिवृत्त सहायक लेखाधिकारी
ग्राम मोहम्मदपुर, पोस्ट मरहट (खुटहन)
जिला जौनपुर, उत्तर प्रदेश

साहित्य अथवा जनभाषा समाज का दर्पण होता है तथा इससे मानवीय चिन्तन में शुद्धता का परिपोषण होता है। हमें उम्मीद है कि हमारी राजभाषा हिंदी मूल भारतीय चिन्तन को अक्षुण्ण रखते हुए समाज को नित नवीनता के अनुरूप मानव के विकास में सहायक सिद्ध होगी।

संस्कृति साहित्य, राष्ट्र अथवा समुदाय के समस्त संस्कारों तथा साहित्य, कला, संगीत आदि के क्षेत्र में मानव की श्रेष्ठ उपलब्धियों का बोध कराती है। भारतीय संस्कृति धर्म एवं कर्म प्रधान है तथा इसमें 'स्व' के निराकरण और 'पर' के निस्तारण को प्रधानता दी गई है। धर्म की प्रधानता के कारण ही भारतीय संस्कृति श्रेष्ठ नैतिक मूल्यों पर आधारित है जिससे विश्व में शांति, मित्रता एवं सहयोग स्थापित करने का सतत् प्रयास किया गया है। संस्कृति (सम् + कृ + क्वितन) का तात्पर्य उस कार्य से है जो भली भांति किया गया हो तथा अलंकृत भी हो। संस्कृति परम्परा से निःसृत होने पर भी परिवर्तनशील एवं गतिशील है। प्रकृति, समाज और व्यक्ति का सरल एवं स्वाभाविक विकास तभी संभव हो सकता है जब जीवन मूल्यों की मजबूत नींव पर परिवर्तन की गतिशीलता में कोई बाधा न उत्पन्न हो।

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में सर्व प्रमुख है। उस समय मिश्र तथा मेसोपोटामिया की संस्कृतियाँ विकसित थीं परन्तु वे कालान्तर में क्षीण हो गई। इसकी दूसरी विशेषता आध्यात्मिकता की पराकाष्ठा है। इसके अनुसार मानव जीवन का परम लक्ष्य दार्शनिक पद्धतियों का अनुकरण करके ब्रह्मज्ञान प्राप्त करना या ज्ञान, भक्ति अथवा कर्म मार्ग को स्वीकार करते हुए मुक्ति प्राप्त करना है। प्रसिद्ध दार्शनिक डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार, 'भारतीय संस्कृति में मानव की तार्किक प्रवृत्ति से अधिक बल आध्यात्मिक प्रवृत्ति पर दिया गया है।'

धर्म परायणता एवं देव परायणता भारतीय संस्कृति की अन्य विशेषता है। गीता में कहा गया है –

यद्करोषि यदश्नासि, यज्जूहोषि ददासि यत्।
मत्तपस्यसि कौतेय तत्कुरुष्व मदर्पणम्।।

अर्थात् तुम जो कार्य करते हो, जो भक्षण करते हो, जो दान देते हो, जो भी तय करते हो वह सब ब्रह्मार्पण बुद्धि से करो। इस प्रकार जीवन की प्रत्येक क्रिया ईश्वरार्पण होगी। गीता में ही 'कर्मण्ये ही वाधिकारस्ते मा फलेशु कदाचन' द्वारा निष्काम भाव से सतत् कर्तव्यरत रहने का उपदेश दिया गया है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि जहाँ पश्चिम का व्यावर्त्तक गुण उसकी आध्यात्मिकता है। आध्यात्मिकता, दार्शनिकता तथा धर्म परायणता ही हमारी संस्कृति की वह विशिष्टता है जो हमें पाश्चात्य संस्कृति से अलग एक विशिष्ट स्थान प्रदान करती है।

सत्य, अहिंसा, मैत्री, सहिष्णुता, करुणा, ब्रह्मचर्य तथा अपरिगृह आदि गुणों ने ही हमारी भारतीय संस्कृति को अनुप्रमाणित किया है। वैदिक काल से आधुनिक काल तक सर्वत्र सर्वधर्म सम्भाव से अनुप्रमाणित होते हुए ही हम सहअस्तित्व की आधारशिला पर निरन्तर चलते आ रहे हैं। आज से 5000 वर्ष पूर्व विरचित अथर्ववेद में विश्व में प्रचलित विश्वासों की चर्चा करके उनके सहअस्तित्व की कामना की गई है इसके पृथ्वी सूत्र में कहा गया है –

जन विभ्रति बहुधा विवाचसम्।
नाना धर्माण पृथिवि यथौकसम।।

अर्थात् यह पृथ्वी हम सभी को सुख दे जिस पर विभिन्न विश्वास और चेतना के लोग एक शांति पूर्व घर के समान रहते हैं। सह अस्तित्व एवं मित्रता का पोषण यजुर्वेद की निम्न पंक्तियों से भी किया गया है –

'मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्र स्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षा गहे।'

इसी आधार पर हमने सब कुछ आत्मसात करने की क्षमता अर्जित की है। भारतीय संस्कृति की सबको आत्मसात कर लेने की विलक्षण क्षमता है। चिरकाल में हूण, शक, कनिष्क आदि आक्रान्तता इस देश में आकर विलीन हो गए और हमने सबको आत्मसात कर लिया। आज भी शक संवत् का चलन इसका श्रेष्ठ उदाहरण है। वस्तुतः भारतीय संस्कृति की समस्त शक्ति ही इसकी अविच्छिन्न निरंतरता को बनाए रखने में सहायक सिद्ध हुई है।

भाषा मानव जीवन से सीधा उत्पन्न होकर उसे प्रत्यक्षतः प्रभावित करता है। इसीलिए संस्कृति के प्रवाह में देशवासी सोते भी मिलते हैं। पूर्व में धर्मग्रंथ देवभाषा संस्कृत में ही लिपिबद्ध थे। परन्तु स्वामी रामानन्द ने देश की लोकभाषा हिंदी को राम भक्ति परम्परा के प्रचार–प्रसार का माध्यम बनाया जिससे हिंदी (जनभाषा) सर्वत्र स्थापित हो सकी तथा साथ ही राम भक्ति को भी लोकप्रियता प्राप्त हुई। इनके शिष्य राजा की कोटि से लेकर समाज के निम्नतम श्रेणी तक के रहे। जहाँ इनके शिष्य पीपा राजा की श्रेणी में आते थे वहीं कबीरदास जुलाहे, रैदास हरिजन, सेन नाई तथा घना जाट जाति के थे। इन शिष्यों ने हिंदी में ग्रंथ रचनाएँ प्रारंभ की तथा निरन्तर हिंदी को महत्व दिया। हिंदी साहित्य के विकास से सारे देश में शिक्षा के प्रचार–प्रसार का नवीन युग प्रारंभ हुआ तथा इनके ग्रंथों से देश में सांस्कृतिक उत्थान का उज्ज्वल मार्ग प्रशस्त हुआ। भक्तिकालीन हिंदी साहित्य के सूर्य सन्त तुलसीदास भी रामानन्द जी की शिष्य परम्परा के उज्ज्वल प्रतिबिम्ब है। संत कबीर ने राम नाम की महिमा पर विशेष जोर देते हुए कहा है –

'दशरथ सुत तिहुँ लोक बरबाना,
राम नाम का मरम न जाना।'

कबीरदास निर्गुण ब्रह्म के उपासक थे। अतः उन्होंने निर्गुण राम की उपासना पर बल दिया है। जिस प्रकार वैदिक साहित्य में 'एक सत् विप्रा बहुधा वदन्ति' द्वारा एकेश्वरवाद पर बल दिया गया है उसी प्रकार हिंदी भाषा के आरंभिक चरण में निम्न पंक्तियों द्वारा एकेश्वर पर बल दिया गया है –

'काली बल कृष्ण बल,
किछु तेई छति नाई।
चित्त परिष्कार रेखे,
एक मने ढाका जाय।'

अर्थात् चाहे काली जी का नाम लो, चाहे कृष्ण जी का, राम को पुकारो चाहे श्याम को, प्रभु का जो नाम तुम्हें प्यारा हो, वही नाम लो, इसमें कोई हर्ज नहीं। वेदों का एकेश्वरवाद, उपनिषदों का ब्रह्मवाद तथा पुराणों का अवतारवाद तथा बहुदेववाद हमारी संस्कृति के मूल श्रोत 'सर्वधर्म समभाव' तथा इसके धर्मनिरपेक्ष स्वरूप की जननी है जो हिंदी भाषा में भी सजीव ढंग से परिलक्षित हुई है। इसी आध्यात्मिकता की प्रचुरता से ही हिंदी भाषा में पवित्र भावनाओं और जीवनोपयोगी गहन एवं गंभीर विचारों की प्रचुरता दृष्टिगोचरित हुई है। इसी प्रकार हिंदी के वैष्णव साहित्य में सूरदास और मीरा आदि की सरस रचनाओं में भी परोक्ष भाव की ही अधिकता दृष्टव्य है।

हमारी सभ्यता में भोग को भी त्याग कर अवलंबित माना गया है। जनक्षुति 'तेन तक्तेन भुंजीथा' द्वारा हम व्यक्ति–व्यक्ति के बीच का विरोध, व्यक्ति और समाज के बीच का विरोध, समाज और समाज के बीच का विरोध तथा देश और देश के बीच का विरोध मिटाना चाहते हैं। हमारी सारी नैतिक चेतना इसी तत्व से ओत–प्रोत है।

हिंदी भाषा का उत्कर्ष उस काल में हुआ जब विदेशी शासन से पीड़ित तथा अनेक क्लेशों से संतप्त देश निराशा की चरम सीमा तक पहुंच चुके थे तथा उसके सभी अवलंबों की इतिश्री हो चुकी थी। ऐसे समय पर भक्त कवियों कबीर, सूर, तुलसी, मीरा आदि ने अपने विकार रहित हृदय से समस्त जाति को आनन्द की अनुभूति दिलाने का प्रयास किया। कबीरदास ने हिंदू और मुसलमान दोनों जातियों के कर्मकाण्डीय पक्ष को धिक्कारते हुए केवल राम नाम की महत्ता पर ही बल दिया। आत्मा और परमात्मा को साथ–साथ आनंदित होने एवं परस्पर मिलने की कल्पना की। इसके विपरीत सूर और तुलसी ने निर्गुण ब्रह्म की दुरुहता के कारण सगुण ब्रह्म की उपासना की। सूरदास ने स्पष्ट शब्दों में कहा है –

अविगत–गति कछु कहत न आवै।
ज्यों गूंगे मीठे फल को रस अन्तर्गत ही भावै।
सब विधि अगम विचारहिं तातैं सूर सगुन पद गावैं।।

अर्थात् जिस प्रकार एक गूँगा मीठा फल खाकर उसके अनुभव का आनन्द तो ले सकता है परन्तु उसको शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता उसी प्रकार निर्गुण ब्रह्म का उसकी महिमा की अनुभूति का आनन्द तो ले सकता है परन्तु उसका वर्णन नहीं कर सकता। इसी अगमता के कारण ही सूरदास सगुण उपासना के पक्षधर हुए परन्तु उन्होंने निर्गुण ब्रह्म का कहीं विरोध नहीं किया। ईश्वर की महिमा का वर्णन करते सूरदास जी कहते हैं –

चरण कमल बन्दौ हरिराई।

जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधे को सब कछु दरसाई।
बहिरो सुनै, गँग पुनि बोलै, रंक चलै सिर क्षत्र धराई।
सूरदास स्वामी करणामय, बार–बार वन्दौ तेहि पाई।।

अर्थात् सूरदास जी अपने ईष्टदेव श्री कृष्ण के उस कमल रूपी चरण की वन्दना करते हैं जिसकी कृपा से एक लँगड़ा पर्वत माला पार कर सकता है, अंधा सब कुछ देख सकता है, गूँगा बोल सकता है तथा दीन राज क्षत्र लेकर चल सकता है। ऐसे करुणामय स्वामी की वे बार–बार वन्दना करते हैं।

जिस प्रकार सूर और मीरा ने श्री कृष्ण के रूप में सगुण उपासना की उसी प्रकार तुलसीदास जी ने भगवान राम के रूप में सगुण उपासना की। वे कहते हैं, 'मन

मधुकर पन करि तुलसी रघुपति पद कमल वसै हौं।' तुलसीदास जी ने स्पष्ट रूप से कहा है कि 'अगुणहि सगुणहि नहिं कछु भेदा।' इस प्रकार निर्गुण और सगुण उपासना में किसी प्रकार का कहीं भी विरोध नहीं हुआ है। तुलसीदास जी के अनुसार सभी कष्टों की जननी अभिमान है। जब तक अभिमान का परित्याग नहीं किया जाता, मनुष्य तब तक सुख का अनुभव नहीं कर सकता है। इसे उन्होंने विनय पत्रिका में निम्नवत् वर्णित किया है –

'हे हरि कस न हरहु भ्रम भारी।

तुलसीदास 'मैं–मोर' गए बिनु
जिय सुख कबहुं न पावै।'

इस प्रकार 'स्व' का परित्याग कर प्रभु के चरण बिन्दु में लवलीन हो जाने से ही मानव के सुख शांति की कल्पना की गई है। मनुष्य जब चारों ओर से निराश होता है तब उसका झुकाव ईश्वर के चरण बिन्दु में होता है जिसकी गोद में दैहिक, दैविक, भौतिक सभी ताप दूर हो जाते हैं और शांति के अद्भुत सागर में निमज्जन करता है। इस ईश्वर परायणता का वर्णन सूर के पद 'निर्बल के बलराम' में निम्नवत है –

'जब लगि गज अपने बल वरत्यो
नेक सरयों नहिं काम।
निर्बल ह्वै बलराम पुकार्‌यो
आए आधे नाम।।'

अर्थात् हाथी जब अपनी पूरी शक्ति लगा चुकता है और फिर भी गहराई में धँसता जाता है तब वह महसूस करता है कि अब तो उसकी सामर्थ्य समाप्त हो चुकी है। अब उसे यदि कोई बचा सकता है तो प्रभु ही। वह प्रभु की कृपा पर अपने आप को छोड़ देता है। बस पलक मारते ही क्षण भर में द्वारिका नाथ दौड़ आते हैं तथा उसकी रक्षा हो जाती है। इस प्रकार शांति ईश्वर की शरण में ही 'अहं' के भ्रम से दूर होकर जाने में है। इसी प्रकार निम्न पंक्तियों में सूर ने ईश्वर की शरण में ही सुख एवं शांति की कल्पना की है –

'मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै।
जैसे उड़ि जहाज को पंछी पुनि जहाज पै आवै।।'

महाकवि तुलसीदास ने भी कहा था – 'निर्मल मन सोइ जन मोंहि पावा, मोहि कपट छल छिद्र न भावा।' अर्थात् भगवान राम को छल–कपट विहीन व्यक्ति ही प्यारा है। इसी प्रकार तुलसीदास के राम ने अपने भक्त को सब कुछ छोड़कर उनकी शरण में जाने का आह्वान किया है। दूसरे के दुःख को देखकर दुःखित होना ही करुणा है। ईश्वर करुणामय है तथा अपने भक्तों की सहायता करना उसकी तत्परता है। मानव जीवन में यही करुणा, सह अस्तित्व एवं सेवा भाव को उद्वेलित करती है। तुलसी ने रामचरित मानस में स्पष्ट कहा है –

'परहित सरिस धरम नहिं भाई।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।'

अर्थात् दूसरों की सेवा एवं भलाई करने से बड़ा कोई धर्म नहीं है तथा दूसरों को पीड़ा देने से बड़ा कोई भी पाप नहीं है। इसी भावना से ही नैतिक मूल्यों का निर्माण होता है जो समाज को शांत, स्थिर एवं आनन्दमय बनाने में सहायक होता है। करुणा की भावना से ही मित्रता, भ्रातृ–प्रेम एवं देशप्रेम का सुद्धरीकरण होता है। कृष्ण जी द्वारा उनके बाल सखा श्री सुदामा के मिलने पर मित्रता का भाव निम्न पंक्तियों में स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है –

'हाय महादुःख पायो सखा,
तुम आए इतै न कितै दिन खोए।'

गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरित मानस में लक्ष्मण शक्ति लगने पर श्रीराम द्वारा की गई कारूणिक विह्वलता एवं धैर्य के अनुशीलन का जो सजीव चित्रण किया है उसे अन्यत्र पाना दुर्लभ है जो निम्न पंक्तियों में व्यक्त है –

'जौ जनतऊँ बन बंधु बिछोहू,
पिता वचन मनतऊँ नहिं ओहू।
सुत वित नारि भवन परिवारा,
मिलि जैहैं जग बारहिं बारा।'
अस विचारि करि जागहु ताता,
मिलहिं न जग सहोदर भ्राता।'

इस प्रकार सहोदर भ्राता को रामचन्द्र जी ने पिता वचन, पुत्र, धन, नारि सर्वोपरि माना है।

तुलसीदास जी ने माँ सीता की आराधना करते हुए नारीत्व की पूजा का समर्थन किया है। बिहारी ने अपने नीतिपरक दोहों द्वारा भारतीय नैतिक मूल्यों की प्राचीनता को ही निरुपित किया है। उन्होंने जयपुर नरेश राजा जयसिंह को निम्न श्रृंगारिक अन्योक्ति से ही सचेत करते हुए पुनः कर्तव्य पथ पर अग्रसर कर दिया –

'नहिं पराग नहिं मधुर मधु,
नहिं विकास यहि काल।
अली कली ही ते वंध्यो,
आगे कवन हवाल।।'

कबीर, रहीम एवं मलिक मोहम्मद जायसी के मुसलमान होते हुए भी उनके द्वारा हिंदी साहित्य की महान सेवा करना स्वयं में भारतीय सहिष्णुता का परिचायक होकर इस संस्कृति के विकास में परिलक्षित हुआ है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से लेकर आधुनिक कवियों ने हिंदी साहित्य में भारतीय संस्कृति को सजीवता प्रदान करने का सतत् प्रयास किया है। जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी' में नारी को श्रद्धा का प्रतीक मानकर उसे उच्च स्थान प्रदान किया है। उनका खण्ड काव्य 'आँसू' करूणा का मर्मस्पर्शी चित्रण करता है। महाकवि निराला ने तो करुणा का अद्‌भुत चित्रण किया है। वे कहते हैं –

'वह आता
दो टूक कलेजे के करता
पछताता पथ पर आता।'

उनकी दानवृत्ति उनकी करूणा का प्राकट्य है जिसमें दूसरों के दुःख को अपनाने की तत्परता के लक्षण विद्यमान हैं। इसकी अभिव्यक्ति उनके 'भिक्षुक' नामक कविता में निम्नवत् है –

'ठहरो, अहो मेरे हृदय में है अमृत
मैं सींच दूँगा
अभिमन्यु जैसे हो सकोगे तुम
तुम्हारे दुःख मैं अपने हृदय में खींच लूँगा।'

शोषण के विरुद्ध उनकी कविता 'बादल राग' वास्तविकता का बोध कराती है जो निम्न पंक्तियों में दृष्टव्य है –

'अट्टालिका नहीं रहे – आतंक भवन।
सदा पंक पर ही होता जल विप्लव पावन।।

'राम की भक्ति पूजा' अप्रहित ओज, सशक्त संगीत, तल स्पर्शी नारी सम्मान एवं विराट शक्ति के कारण संसार की कविताओं में पांक्तेय है। उनकी देशपरक कविताओं में भी भाषण नहीं अपितु अनुभूति है।

सुमित्रानन्दन पन्त के संकलन 'स्वर्ण धूलि', 'उत्तरा' आदि में महर्षि अरबिन्द के प्रभाव स्पष्ट रूप से झलकते हैं। उनका विद्रोही स्वरूप 'युगवाणी' और 'ग्राम्या' संकलनों में झलकता है। मैथिलीशरण गुप्त की कविताएँ देश–प्रेम से ओत–प्रोत हैं जिसके अनुरूप ही उन्हें राष्ट्रकवि की उपाधि से विभूषित किया गया था। मानवीय सहयोग की भावना उनकी पंक्ति 'मनुष्य है वही जो मनुष्य के लिए मरे' में स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित है। अपने महाकाव्य 'साकेत' में गुप्त जी ने एक सहज नारी को उच्च गौरव प्रदान करने का प्रयास किया है। रामधारी सिंह 'दिनकर' की रचनाएँ देश प्रेम से भरी पड़ी हैं। इस परिपेक्ष्य में उनका महाकाव्य 'कुरूक्षेत्र' अद्वितीय सिद्ध हुआ है।

हिंदी भाषा में गद्य के विकास ने इसे जन–जन की वाणी बनाने का पूर्ण प्रयास किया है। इस कारण इसमें भारतीय संस्कृति का चित्रण सहज और स्वाभाविक हो गया है। मुंशी प्रेमचन्द ने अपनी गद्य रचनाओं में शोषण के विरुद्ध आवाज उठाई है। उन्होंने शिष्टाचार, मानव–प्रेम, करूणा, दया, न्याय–प्रियता, सहिष्णुता एवं सहअस्तित्व का मनोहारी चित्रण करते हुए अपने गद्य साहित्य को सदैव परिष्कृत किया है। इसी प्रकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, अज्ञेय, डॉ. संपूर्णानन्द आदि गद्यकारों ने अपनी रचनाओं में मर्मस्पर्शी मानव चित्रण करते हुए भारतीय संस्कृति को निरन्तर सजीवता प्रदान करने में सहयोग किया है।

किसी भी क्षेत्र में रमणीयता लाने के लिए नित नवीनता की आवश्यकता होती है जैसा कि माघ ने कहा है – 'क्षणे–क्षणे यन्नवतामुपैति सदैव रूपम रमणीयतायाः' अर्थात नवीनता और नित्य नूतन अन्योन्याश्रित है तथा रमणीयता के अभाव में कोई चीज मान्य नहीं होती है। भारतीय संस्कृति की नित्य नवीन परिस्थितियों में परिष्कृत होती हुई अपने मूल को नित्य संजोए रखती हैं। आज भारत देश आतंकवाद, अलगावाद, साम्प्रदायिक उन्माद से ग्रसित है। एक दूसरे का छिद्रान्वेषण, व्यक्ति आक्षेप तथा छुद्र मनोवृत्ति देश और समाज के लिए खतरनाक है। आज आवश्यकता सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक समता, न्याय एवं परंपरागत भारतीय संस्कृति से संबंध रखने की है। साहित्य अथवा जनभाषा समाज का दर्पण होता है तथा इससे मानवीय चिन्तन में शुद्धता का परिपोषण होता है। हमें उम्मीद है कि हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी मूल भारतीय चिंतन को अक्षुण्ण रखते हुए समाज को नित नवीनता के अनुरूप मानव के विकास में सहायक होगी तथा विश्व में अपने देश के गौरव को प्रतिष्ठापित करने में सक्षम होगी एवं हमें रहीम की निम्न पंक्तियों से सह–अस्तित्व की अनुप्रेरणा सदा मिलती रहेगी –

टूटे सुजन मनाइए, जो टूटे सौ बार।
रहिमन फिर–फिर पोहिए, टूटे मुक्ताहार।।

संत कबीर ने अपनी निम्न पंक्तियाँ उकेरी हैं –

कबीर जब हम पैदा हुए, जग हँसा हम रोए।
ऐसी कर चलो, हम हँसें जग रोए।।

निश्छल सेवा भाव ही भारतीय संस्कृति की मूल अवधारणा है। हम आशान्वित हैं कि हम अपने संतों, ऋषियों की साधना 'सत्यमेव जयते' को अंगीकार करते हुए हम भारतीय राष्ट्र, संस्कृति को अक्षुण्ण रखकर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा को फलीभूत कर सकेंगे। हिंदी द्वारा पुष्पित एवं पल्लवित भारतीय संस्कृति चिरस्थायी एवं अक्षुण्ण है जो लता मंगेशकर के स्वर 'रहें ना रहें हम, महका करेंगे' का एक प्रतिबिंब है।

मानव जीवन में प्राकृतिक पर्यावरण का महत्त्व



सुश्री मीना भारद्वाज
सहायक लेखाधिकारी
कार्या. महालेखाकार (ले. एवं हक.)
हरियाणा, चंडीगढ़

पर्यावरण प्रकृति का उत्कृष्ट उपहार है। पर्यावरण के अभाव में जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। प्राकृतिक पर्यावरण का मानव जीवन तथा अन्य सजीव प्राणियों के लिए बहुत ही महत्व है। इसलिए लेखिका ने राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण को स्वच्छ तथा शुद्ध बनाने के लिए ठोस तथा सटीक कदम उठाए जाने की आवश्यकता पर बल दिया है।

पर्यावरण दो शब्दों से मिलकर बना है – परि + आवरण। 'परि' का अर्थ है चारों ओर तथा 'आवरण' का अर्थ है घिरा हुआ अर्थात् चारों ओर से घिरा हुआ। पर्यावरण हमारे चारों तरफ का वह प्राकृतिक आवरण होता है जो हमें सफलतापूर्वक जीवन यापन करने में सहायता प्रदान करता है। पर्यावरण में वह हर संसाधन उपलब्ध होता है जो किसी भी सजीव प्राणी को जीने के लिए आवश्यक होता है। पर्यावरण से हमें वायु, जल, प्रकाश, जंगल, भूमि, खाद्य पदार्थ, अनुकूल वातावरण उपहार के रूप में प्राप्त हुए हैं। ये तत्व सजीव और निर्जीव दोनों प्रकार के हैं। पर्यावरण, प्रकृति का उत्कृष्ट उपहार है।

पर्यावरण के अभाव में जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। पृथ्वी ही एक ऐसा ग्रह है जिस पर जीवन है तथा जीवन के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए पर्यावरण मौजूद है।

मानव जीवन में प्राकृतिक पर्यावरण का निम्नलिखित क्षेत्रों में महत्त्व है–

सभी सजीवों के अस्तित्व के लिए – स्वच्छ वायु व वातावरण सभी सजीवों के अस्तित्व के लिए नितान्त आवश्यक है। हमारे जीवित रहने के लिए जितना खाना और पानी आवश्यक है उतना ही हमारे लिए स्वच्छ पर्यावरण आवश्यक है। अगर हम जीवन को स्वच्छ और रोगमुक्त होकर गुजारना चाहते हैं तो उसमें पर्यावरण का बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। जो हमारे आसपास में हैं वे चाहे सजीव हों या निर्जीव सभी पर्यावरण से जुड़े हुए होते हैं। यदि पर्यावरण अनुकूल नहीं होगा तो हमारा जीवित रहना मुश्किल होगा। प्रकृति ने हमें स्वच्छ और शुद्ध पर्यावरण प्रदान किया है जोकि हमारे अस्तित्व को बनाए रखने के लिए अत्यंत आवश्यक है। हम सभी का यह सतत प्रयास होना चाहिए कि स्वच्छ और शुद्ध पर्यावरण को हम हर हाल में बनाए रखें।

जीवित प्रजातियों के विकास और पोषण के लिए – प्रकृति द्वारा उपहार स्वरूप प्रदान किया गया स्वच्छ तथा शुद्ध पर्यावरण जीवित प्रजातियों के विकास और पोषण में मदद करता है। एक अच्छा पर्यावरण हमें बेहतर जीवन जीने में सहायक होता है। हम सांस लेते समय ऑक्सीजन ग्रहण करते हैं तथा सांस छोड़ते समय कार्बन डाईआक्साइड छोड़ते हैं। ऑक्सीजन हमें पेड़–पौधों से मिलती है तथा वे हमारे द्वारा छोड़ी

गई कार्बन डाईआक्साइड को ग्रहण करते हैं। आज मानव इन्हीं पेड़–पौधों, जंगलों को काटकर गगनचुंबी इमारतें बना रहा है, फैक्टरी–कारखाने लगा रहा है। ऐसा करते समय मानव यह बात भूल जाता है कि उसे जीवित रहने के लिए ऑक्सीजन इन्हीं पेड़–पौधों से प्राप्त होती है जिन्हें वह काट रहा है।

जीवन की सभी मूलभूत वस्तुएं प्राप्त होने में पर्यावरण का योगदान – जीवन की मूलभूत वस्तुएं प्राप्त करने में अच्छे तथा स्वस्थ पर्यावरण का बहुत बड़ा योगदान है। इनमें जल, वायु, खाद्य पदार्थ सभी शामिल हैं जो हमारे जीवन की मूलभूत आवश्यकताएं हैं। भोजन और पानी के लिए प्राकृतिक परिदृश्यों पर हमारी निर्भरता इतनी अधिक है कि हम इन संसाधनों की रक्षा किए बिना जीवित नहीं रह सकते। जीवन को बचाए रखने के लिए पर्यावरणीय सुरक्षा को सुनिश्चित करना आवश्यक है। पृथ्वी पर विद्यमान विभिन्न चक्र नियमित रूप से पर्यावरण तथा जीवित वस्तुओं के माध्यम से पृथ्वी का संतुलन कायम रखते हैं। इन चक्रों के विक्षुब्ध होने पर पर्यावरणीय संतुलन भी बिगड़ जाता है जिससे मानव जीवन भी प्रभावित होता है।

जलवायु संतुलन में पर्यावरण का महत्त्व – प्रकृति के निर्माण में असंख्य तत्वों का योगदान होता है। ये सभी तत्व एक दूसरे पर निर्भर होते हैं। इन की मात्रा सीमित तथा सुनिश्चित होती है। इनका एक दूसरे से सरल और प्रत्यक्ष सम्बन्ध ही नहीं होता बल्कि इनका अप्रत्यक्ष और जटिल सम्बन्ध भी होता है। पेड़–पौधे आक्सीजन प्रदान करते हैं तथा मनुष्य और अन्य जीव–जन्तु जीवित रहते हैं। साथ ही पेड़–पौधे स्वयं के लिए कार्बन डाई–आक्साइड ग्रहण करते हैं। मिट्टी के बैक्टीरिया एवं सूक्ष्म जीव पेड़–पौधों के लिए लाभकारी होते हैं एवं भूमि की उर्वरकता बनाए रखते हैं। जंगलों के कारण वर्षा भी होती है। अधिक संख्या में पेड़ों की कटाई से ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं। कई वन्य जीव व प्रजातियां विलुप्त होने के कगार पर हैं। पर्यावरण, वायु और जलवायु को विनियमित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मानवता की संपूर्ण जीवन समर्थन प्रणाली सभी पर्यावरणीय कारकों की भलाई पर निर्भर करती है।

मानव और पर्यावरण का संबंध – मानव और पर्यावरण का निकटता वाला सम्बन्ध है। प्रकृति को मनव की सहचरी माना गया है। प्रकृति द्वारा संतुलित पर्यावरण रखते हुए मानव को स्वस्थ जीवन प्रदान किया जाता है। पुराने समय में ऋषि–मुनियों द्वारा यज्ञ करके पर्यावरण को शुद्ध किया जाता था जिसमें उनके द्वारा वायु प्रदूषण को समाप्त किया जाता था। जीव और पर्यावरण एक दूसरे पर आश्रित हैं। सभी जीवों का अस्तित्व चारों ओर से पर्यावरण पर निर्भर करता है। पर्यावरण द्वारा जीवों को केवल आधार ही प्रदान नहीं किया जाता बल्कि वह उनकी विभिन्न क्रियाओं को करने के लिए एक माध्यम के रूप में भी कार्य करता है।

आज की इस दौड़ में मानव प्रकृति के साथ छेड़छाड़ करके पर्यावरण को बिगाड़ रहा है। इससे नाना प्रकार के विकार उत्पन्न हो रहे हैं। आज वनों की अंधाधुंध कटाई से न तो वन बचे हैं तथा न ही वन्यजीवन सुरक्षित रहा है। आज मानव पर्यावरण के महत्त्व को भूल गया है जिसका सीधा प्रभाव हमारे जीवन तथा स्वास्थ्य पर पड़ रहा है। पहले मनुष्य को प्राकृतिक रूप से उत्पन्न फल, सब्जियां तथा अन्य खाद्य पदार्थ प्राप्त होते थे परन्तु अब मानव द्वारा दवाइयों तथा कीटनाशकों के प्रयोग से उनके पौष्टिक तत्व नष्ट हो चुके हैं जिनका सीधा प्रभाव हमारे स्वास्थ्य पर पड़ता है। ऐसे खाद्य–पदार्थों

का प्रयोग करने से हमारे शरीर में अनेकों व्याधियां और बीमारियां उत्पन्न हो रही हैं। कई बीमारियां आज के वैज्ञानिक युग में भी लाइलाज हैं। इससे न केवल मानव जीवन दु:खदायी बन रहा है बल्कि आयु भी कम होती जा रही है। आज वनों को काटकर औद्योगिकीकरण हो रहा है जिससे फैक्टरियां, कारखाने इत्यादि लगाए जा रहे हैं। उनसे निकलने वाली जहरीली गैसें, धुआं तथा अपशिष्ट पदार्थों से न केवल वायु प्रदूषण फैलता है बल्कि जल भी प्रदूषित होता है। इससे न केवल मानव जीवन ही प्रभावित होता है बल्कि, जल में रहने वाले जीवों का भी जीवन खतरे में पड़ता है। वनों की अंधाधुंध कटाई से वन्यजीवों का जीवन भी प्रभावित हुआ है। कई प्रजातियां तो विलुप्त होने के कगार पर हैं। भूमि की उर्वरकता भी वनों को काटने से प्रभावित हुई है। इससे भूमि कटाव जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। ग्लोबल वार्मिंग तथा कई जहरीली गैसें वातावरण को प्रदूषित कर रही हैं।

अत: यह आवश्यक है कि प्राकृतिक पर्यावरण का मानव जीवन तथा अन्य सजीव प्राणियों के लिए महत्त्व को ध्यान में रखते हुए अब ठोस उपाय करने की आवश्यकता है ताकि स्वच्छ पर्यावरण बनाया जा सके। इसके लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं –

1. अधिक से अधिक पेड़ लगाए जाएं।

2. फैक्टरियों, कारखानों आदि से निकलने वाले धुएं पर नियंत्रण किया जाए। कारखानों से निकलने वाले दूषित जल को नदियों, तालाबों में न छोड़ा जाए।

3. अपशिष्ट पदार्थों को जलाने से बचा जाए क्योंकि ये कार्बन डाईआक्साइड की मात्रा को बढ़ाते हैं।

4. ठोस तथा खतरनाक कचरे की री–साइक्लिंग को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

5. वर्षा के पानी का संरक्षण किया जाए तथा पानी का अपव्यय कम किया जाए।

6. ऊर्जा संरक्षण करके तथा बिजली की खपत कम करके पर्यावरण की वास्तविकता बनाए रखने के मुहिम की ओर कदम बढ़ाया जा सकता है।

7. लोगों में जागरूकता फैलाने और पर्यावरण की स्वच्छता और सुरक्षा के लिए प्रतिवर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। इसी प्रकार का कोई अन्य कार्यक्रम भी सरकार द्वारा चलाया जाना चाहिए।

अंत में यह कहा जा सकता है कि पर्यावरण को स्वच्छ तथा शुद्ध बनाने की मुहिम में सभी का योगदान तथा भागीदारी आवश्यक है। इसके लिए राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ठोस तथा सटीक उपाय किए जाने की आवश्यकता है।



सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 : अवरोध एवं भविष्य



विनोद कुमार शर्मा
वरिष्ठ लेखाधिकारी (सेवानिवृत्त)
12ए, स्वास्तिक प्लाजा
बंजारावाला, देहरादून

सूचना का अधिकार अधिनियम एक सशक्त कानून है जिसने सरकार के कार्यों में पारदर्शिता लाने, जवाबदेही बढ़ाने एवं जनता का विश्वास बढ़ाने में उल्लेखनीय कार्य किया है। इस कानून के तहत जिन सूचनाओं को प्राप्त करने हेतु आम जनता को दर–दर भटकना पड़ता था, आज वह अधिकारपूर्वक उन्हें प्राप्त करने हेतु स्वतंत्र हैं।

सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 इस सदी का सबसे सशक्त कानून है जिसने सरकार के कार्यों में पारदर्शिता लाने, जवाहदेही बढ़ाने एवं जनता का विश्वास बढ़ाने का उल्लेखनीय कार्य किया है। उक्त कानून के कारण प्रशासनिक कार्यों में पारदर्शिता आई है जो अन्ततः आम जनता के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुआ है। हमारे देश की पुरानी पीढ़ी को वह समय अच्छी तरह याद होगा जब जनता के कार्यों के सम्बन्ध में होने वाले प्रशासनिक आदेशों/निर्णयों की जानकारी आमजन को नहीं हो पाती थी। किसी मामले में संबंधित बाबू द्वारा पत्रावली पर अधिकारी द्वारा क्या आदेश पारित किया गया, यह जानने या देखने का अधिकार सामान्य जन को नहीं था। आज के समय में यह गुजरे जमाने की बात बन गई है। आज जनता को अपने मामले में फाईल नोटिंग मांगने का कानूनन हक है तथा कोई भी उसे गुमराह नहीं कर सकता।

सूचना का अधिकार अधिनियम ने वर्ष 2005 से इस कानून के बनने तथा लागू होने से लेकर अब तक की अपनी यात्रा सफलतापूर्वक पूरी की है। लेकिन इसके मार्ग में आने वाली दिक्कतों की यदि बात की जाए तो यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि दिन–प्रतिदिन में होने वाली कुछ समस्याएं हैं जिन पर विचार किया जाना समीचीन प्रतीत होता है। उपर्युक्त अधिनियम के मार्ग में आने वाली कुछ समस्याओं का उल्लेख संक्षेप में निम्नानुसार किया जा सकता है–

1. सरकार के समस्त विभागों/कार्यालयों में सूचना का अधिकार अधिनियम के क्रियान्वयन से जुड़े कार्मिकों/लोक सूचना अधिकारियों एवं प्रथम अपीलीय प्राधिकारियों के लिए उचित प्रशिक्षण का अभाव होना।

2. विभागीय नियमावली के अनुसार समय सीमा पार कर चुके अभिलेखों की छंटाई समयबद्ध तरीके से न किया जाना जिसके लिए समस्त विभागों/कार्यालयों में उचित प्रबंधन की आवश्यकता है।

3. अधिकांश विभागों/कार्यालयों में स्टाफ की कमी के कारण पहले से ही कार्य की अधिकता है तथा सूचना का अधिकार अधिनियम के अंतर्गत प्राप्त होने वाले प्रकरणों को देखने के लिए पृथक रूप से स्टाफ का अभाव है।

4. कुछ अनुरोधकर्ताओं द्वारा बिंदुवार जानकारी मांगने के स्थान पर विस्तृत पत्र प्रेषित किया जाना तथा कई मामलों में अनावश्यक रूप से निजी हित को साधने/परेशान करने के उद्देश्य से किसी कार्मिक की व्यक्तिगत जानकारियां मांगा जाना। इसके कारण विभागों/कार्यालयों में ऐसे

सूचना अनुरोध–पत्रों को निर्धारित समयावधि में निस्तारित करने के लिए अनावश्यक रूप से कार्य का भार बढ़ता है।

5. कतिपय पेशेवर लोगों के द्वारा अधिनियम का दुरूपयोग किए जाने की घटनाएं।

6. लोक प्राधिकारी द्वारा एक बार सूचना उपलब्ध कराने के पश्चात भी प्रथम अपील प्रस्तुत न करके समान बिंदुओं पर बार–बार संबंधित प्राधिकारी (लोक सूचना अधिकारी) को अनुरोध–पत्र प्रेषित किया जाना।

7. प्रथम अपीलीय प्राधिकारी द्वारा एक बार अपीलीय आदेश पारित करने के पश्चात भी पुनः प्रथम अपीलीय प्राधिकारी को अपील प्रस्तुत किया जाना जबकि अधिनियम में इसका कोई प्रावधान नहीं है।

8. कई प्रकरणों में प्रपत्रों की छायाप्रतियां सूचना अनुरोधकर्ता को उपलब्ध कराने हेतु अतिरिक्त शुल्क की मांग किए जाने पर काफी समय तक कोई उत्तर प्राप्त न होने पर प्रकरण का लंबित रहना।

9. तृतीय पक्ष की सूचना उपलब्ध कराने हेतु सूचना अनुरोधकर्ता के अनुरोध को एक बार अस्वीकार करने के पश्चात बार–बार सूचना प्रदान करने हेतु अनुरोध करना।

10. केंद्र सरकार के कार्यालयों में सूचना मांगने हेतु शुल्क के निर्धारित तरीके (पोस्टल आर्डर, बैंक ड्राफ्ट/बैंकर्स चैक या नकद) के स्थान पर नॉन–ज्यूडिशियल स्टाम्प पेपर प्रेषित किया जाना। उल्लेखनीय है कि नॉन–ज्यूडिशियल स्टाम्प पेपर मद में धनराशि की प्राप्ति राज्य सरकार की प्राप्ति होती है तथा केंद्र सरकार के कार्यालयों से सूचना मांगने हेतु शुल्क प्रदान करने का यह मान्य तरीका नहीं है।

उपर्युक्त कठिनाइयां सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 के क्रियान्वयन में दिन–प्रतिदिन होने वाली कठिनाइयां हैं जिन्हें कार्मिकों को उचित प्रशिक्षण प्रदान करके, अभिलेखों के उचित प्रबंधन द्वारा काफी हद तक दूर किया जा सकता है। कुछ बिंदु ऐसे हैं जिन पर अनुरोधकर्ताओं को जागरूक किए जाने की आवश्यकता है तथा कुछ बिंदुओं पर अधिनियम में जरूरी अपेक्षित संशोधन करके उसका दुरूपयोग, यदि किसी भी स्तर पर होता है, तो उस पर रोक लगाया जाना आवश्यक है। सूचना अनुरोधकर्ताओं में जागरूकता बढ़ने के साथ ही सूचना का अधिकार कानून में और मजबूती आ रही है तथा इसके मार्ग में आने वाली दिक्कतें भी धीरे–धीरे काफी हद तक दूर हो रही हैं। अतः यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि इस कानून का भविष्य उज्ज्वल है। इस कानून ने सरकारी काम–काज में पारदर्शिता लाने, जवाबदेही बढ़ाने का उल्लेखनीय कार्य किया है। जिन सूचनाओं को प्राप्त करने हेतु आम जनता को दर–दर भटकना पड़ता था, आज वह अधिकारपूर्वक उन्हें प्राप्त करने हेतु स्वतंत्र है।



वर्तमान में हिंदी का बढ़ता प्रभाव

संजीव कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, चण्डीगढ़

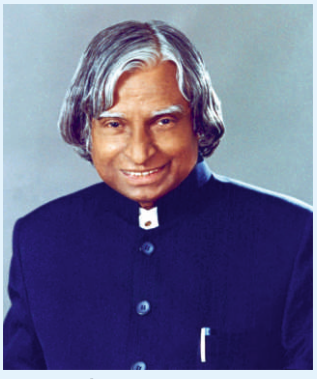
इसमें कोई संदेह नहीं है कि वर्तमान में हिंदी का प्रत्येक क्षेत्र में प्रभाव बढ़ रहा है। भारत की अधिकांश जनसंख्या हिंदी बोलती और समझती है। इसलिए वर्तमान में चाहे कोई भी क्षेत्र हो अर्थात विज्ञान, आर्थिक, खेल, विधि और राजनीतिक इन क्षेत्रों में कार्य करने वाले पुरजोर हिंदी पर ज्यादा से ज्यादा जोर दे रहें हैं, क्योंकि बिना हिंदी के वे बहुत बड़ी जनसंख्या से न तो जुड़ पायेंगे और न ही जोड़ पायेंगे। हिंदी को 14 सितम्बर 1949 को संवैधानिक रूप से राजभाषा का दर्जा मिलने के बाद निरंतर सरकारी कार्यालयों में उसकी उपयोगिता बढ़ी है। इसका सबसे बड़ा कारण इस भाषा ने निरंतर विकास किया है। इस भाषा ने सरल, सहज, सुगम तथा आधुनिकता के साथ लोगों के बीच प्रचलित अन्य भाषाओं के शब्दों को आत्मसात किया है। किसी भी भाषा का सबसे ज्यादा प्रचार–प्रसार लोगों के द्वारा किया जाता है, कोई भी भाषा जितनी लचीली होगी उसका प्रचार–प्रसार उतना ही आसान होगा। हमारी सरकारी व्यवस्था काफी समय तक अंग्रेजों के अधीन रही, परिणामस्वरूप सरकारी व्यवस्था पर अंग्रेजी का बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। आज भी अगर देखा जाए तो कार्यालयों में बहुत से कर्मचारी कार्यालयीन कार्य करने के लिए अंग्रेजी भाषा को वरीयता देते हैं। प्रत्येक कार्मिक का यह नैतिक व संवैधानिक दायित्व बनता है कि वह अंग्रेजी के 'स्टेटस सिंबल' को छोड़कर तथा भारत के जनमानस की भावनाओं का सम्मान करते हुए अपना शासकीय कार्य ज्यादा से ज्यादा राजभाषा हिंदी में ही करें।

आधुनिक समय सूचना और प्रौद्योगिकी का समय है, इसमें कोई संदेह नहीं है कि पश्चिमी देशों का इस पर वर्चस्व है। जैसे गूगल, यूट्यूब, फेसबुक और ट्विटर आदि का संचालन करने वालों ने भी यह माना है कि भारत में अगर वे अपना अस्तित्व बना कर रखना चाहते हैं तथा बहुत बड़ी आबादी से जुड़ना चाहते हैं, तो उनके लिए हिंदी का प्रचार–प्रसार बहुत जरूरी है। 2024 तक हिंदी में इंटरनेट का उपयोग करने वाले लोगों की संख्या अंग्रेजी में इंटरनेट का उपयोग करने वालों से अधिक हो जाएगी। गूगल के अनुसार हिंदी में डिजिटल सामग्री पढ़ने वालों की संख्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। यह बहुत ही प्रशंसनीय है

कि कंप्यूटर, मोबाइल और दूसरे डिजिटल उपकरणों में हिंदी की उपस्थिति बढ़ रही है। आज उपयोगकर्ताओं की रूचि के अनुसार हिंदी टंकण, बोलकर टाइप करने, लिखा हुआ सुनने, अनुवाद करने, हिंदी सॉफ्टवेयर आदि तमाम सुविधाओं से संबंधित एप्लीकेशन की भरमार हो गई है, जिससे हिंदी के प्रचार–प्रसार को विश्व स्तर पर ज्यादा से ज्यादा बल मिला और हिंदी की गहराई का पता चला कि यह भाषा वर्तमान में हर क्षेत्र में अपना लोहा मनवा रही है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि आज हिंदी भाषा ने अपने आपको इतना विकसित कर लिया है कि वह एक दिन सरकारी व्यवस्था में व्याप्त अंग्रेजी की जड़ों को पूरी तरह उखाड़ फेंकेगी। इसके लिए हम सभी को मिलकर प्रयासरत होना पड़ेगा।



- **जीवन में पहली सफलता के बाद रूकें नहीं, क्योंकि यदि आप दूसरे प्रयास में असफल हो गये, तो लोग यही कहेंगे कि आपकी पहली सफलता भाग्य की वजह से मिली।**
- **जब हम परेशानियों में फँसे होते हैं तो हमें अहसास होता है कि एक छुपा हुआ साहस हमारे अंदर है जो हमें तब ही दिखाई देता है जब हम असफलता का सामना कर रहे होते हैं। हमें उसी छुपे हुए साहस और शक्ति को पहचानना है ।**



डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

- **"ब्लैक" कलर भावनात्मक रूप से बुरा होता है लेकिन हर ब्लैकबोर्ड विद्यार्थियों की जिंदगी "ब्राइट" बनाता है ।**

संसदीय राजभाषा समिति की कार्यविधि और कार्य–संचालन नियमावली



किरन पाल सिंह
हिंदी अधिकारी
मुख्यालय

1. **लघु शीर्षक** – यह नियमावली "संसदीय राजभाषा समिति की कार्यविधि और कार्य–संचालन नियमावली" कही जाए।

2. **परिभाषाएं** – इस नियमावली में अगर प्रसंग के कारण कोई अन्य अर्थ अपेक्षित न हो तो

(क) **"अध्यक्ष"** का अर्थ है – संसदीय राजभाषा समिति का अध्यक्ष और कोई अन्य सदस्य, जो किसी समय स्थानापन्न अध्यक्ष बने।

(ख) **"समिति"** का अर्थ है – संसदीय राजभाषा समिति।

(ग) **"संयोजक"** का अर्थ है – संसदीय राजभाषा समिति की किसी भी उप–समिति का संयोजक, जिसे अध्यक्ष ने नामित किया हो और वह सदस्य, जिसे संयोजक ने अपनी अनुपस्थिति में संयोजक के रूप में कार्य करने के लिए नामित किया हो।

(घ) **"उपाध्यक्ष"** का अर्थ है – संसदीय राजभाषा समिति का कोई भी सदस्य, जिसे अध्यक्ष ने "उपाध्यक्ष" के रूप में नामित किया है।

(ङ) **"सदस्य"** का अर्थ है – संसदीय राजभाषा समिति का सदस्य।

(च) **"सचिव"** का अर्थ है – संसदीय राजभाषा समिति का सचिव और कोई अन्य व्यक्ति, जो किसी समय भी सचिव के कर्तव्य का पालन करे।

3. **सदस्यों को बैठकों की सूचना** – सचिव प्रत्येक सदस्य को समिति या उसकी उप समिति की बैठकों की तारीख और जगह की सूचना देगा।

4. **समिति का अध्यक्ष** – यदि समिति का अध्यक्ष किसी बैठक में अनुपस्थित हो या समिति की बैठक के दौरान उस समय बैठक छोड़ कर चला जाए, तो उपाध्यक्ष **अध्यक्ष** के रूप में कार्य करेगा। यदि उपाध्यक्ष उपलब्ध न हो तो अध्यक्ष किसी भी अन्य सदस्य को उस बैठक के अध्यक्ष के रूप में कार्य करने के लिए नामित कर सकता है। यदि अध्यक्ष के रूप में काम करने वाला उपाध्यक्ष किसी बैठक के दौरान बैठक से चला जाए, तो वह किसी भी सदस्य को उस बैठक के अध्यक्ष के रूप में कार्य करने के लिए नामित कर सकता है। किसी अन्य आकस्मिक स्थिति में बैठक में उपस्थित सदस्य उस बैठक के लिए एक अध्यक्ष चुन सकते हैं।

5. **कोरम** –

(1) समिति की बैठक होने के लिए 10 का कोरम होगा।

(2) यदि समिति की किसी बैठक के लिए निश्चित किए गए समय पर या किसी ऐसी बैठक के दौरान किसी समय कोरम पूरा नहीं है, तो अध्यक्ष या तो कोरम पूरा होने तक बैठक निलम्बित कर सकता है या किसी दूसरे दिन के लिए बैठक स्थगित कर सकता है।

परन्तु, जब समिति की बैठक इस प्रकार लगातार दो तारीखों पर स्थगित कर दी गई हो, तब समिति अध्यक्ष द्वारा निश्चित की गई अगली तारीख तक कोरम न रहते हुए भी कार्य–संचालन कर सकती है।

6. **मतदान** – समिति या उप–समिति का किसी भी बैठक में सभी प्रश्नों पर निर्णय सभी उपस्थित और मत देने वाले सदस्यों के बहुमत से किया जाएगा।

7. **अध्यक्ष का निर्णायक मत** – किसी भी मामले के पक्ष–विपक्ष में बराबर–बराबर मत होने पर अध्यक्ष या अध्यक्ष के स्थान पर काम करने वाले व्यक्ति का एक अतिरिक्त या निर्णायक मत होगा।

8. **उप–समिति की नियुक्ति** –

(1) समिति एक या एक से अधिक उप–समितियां नियुक्त कर सकती है और उन्हें जांच के लिए कुछ विशिष्ट मामले सौंप सकती है। ये उप–समितियां उन मामलों की जांच करेंगी और अपनी रिपोर्ट समिति के सामने प्रस्तुत करेंगी।

(2) उप समिति की रिपोर्ट पर समिति विचार करेगी।

(3) यदि समिति किन्हीं मामलों की जांच के लिए कोई उप–समिति नियुक्त करती है, तो उस उप–समिति की रिपोर्ट उसके संयोजक के हस्ताक्षर से निर्धारित तारीख तक दी जायेगी और उप–समिति की उस रिपोर्ट पर विचार करने से पहले उसकी प्रतियां समिति के सभी सदस्यों को दे दी जाएंगी।

9. **समिति की बैठक** – समिति की बैठकें अध्यक्ष द्वारा निर्धारित दिन और समय पर होंगी।

10. **उप–समिति की बैठक** – किसी उप–समिति की बैठकें उसके संयोजक द्वारा निर्धारित दिन और समय पर होगी।

परन्तु यदि संयोजक उपलब्ध न हो तो अध्यक्ष या उपाध्यक्ष बैठक का दिन और समय निश्चित कर सकता है।

11. **समिति या उप–समिति के सम्मुख दिया गया साक्ष्य** – किसी भी व्यक्ति को वैयक्तिक रूप में या किसी संस्था के प्रतिनिधि के रूप में समिति या उसकी उप–समितियों के सम्मुख साक्ष्य देने के लिए कहा जा सकता है और ऐसा साक्ष्य गोपनीय माना जाएगा। इन व्यक्तियों में केन्द्रीय/राज्य सरकार, सरकारी उपक्रम, स्वायत्त, अर्द्ध–स्वायत्त निकाय/संगठन और सांविधिक निकाय का कर्मचारी भी शामिल है।

12. **समिति और उप–समितियों की बैठकें** –

(1) समिति और उप–समितियों की बैठकें सार्वजनिक नहीं होंगी।

(2) समिति या उप–समितियों की कार्यवाहियां गोपनीय समझी जाएंगी। समिति/उप–समितियों के किसी सदस्य अथवा समिति की कार्यवाहियों तक पहुंच रखने वाले किसी अन्य व्यक्ति को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से समाचार पत्रों को अथवा अन्य किसी व्यक्ति को समिति की कार्यवाहियों के बारे में सूचना देने की अनुमति नहीं होगी। इन कार्यवाहियों में समिति की रिपोर्ट और अस्थायी या अंतिम निष्कर्ष शामिल हैं।

(3) जब कभी कोई पत्र या प्रलेख जिस पर 'गुप्त' या 'गोपनीय' अंकित हो, समिति के सदस्यों में बांटा जाए, तो सदस्यगण उस पत्र या प्रलेख की विषय–वस्तु किसी भी रूप में प्रकट नहीं कर सकेंगे।

13. **बैठकों का स्थान** – समिति या इसकी उप–समितियों की बैठकें किसी भी सुविधाजनक स्थान पर की जा सकती हैं।

14. **बैठकों में विशेष रूप से आमंत्रित व्यक्ति** – राजभाषा विभाग के सचिव, समिति या उसकी उप–समितियों की सभी बैठकों में अस्थायी रूप से आमंत्रित व्यक्ति होंगे। अध्यक्ष किसी अन्य व्यक्ति को भी समिति या उसकी उप–समितियों की बैठक में भाग लेने के लिए आमंत्रित कर सकता है।

15. **समिति या उप–समितियों द्वारा विचार–विमर्श के समय सभी बाहरी व्यक्तियों का बाहर जाना** – जब भी समिति या उप–समितियां विचार–विमर्श कर रही हों, समिति के सदस्यों, समिति के सचिवालय के अधिकारियों/रिपोर्टरों और आमंत्रित व्यक्तियों के अलावा सभी व्यक्ति बाहर चले जायेंगे।

16. **प्रलेख संबंधी शर्त** – कोई भी प्रलेख, जो समिति या उप–समितियों को प्रस्तुत किया जा चुका है, बिना समिति या उप–समिति की, जैसी भी स्थिति हो, जानकारी और अनुमति के वापस नहीं लिया जा सकता है।

17. **निर्णयों का रिकॉर्ड** – समिति की कार्यवाहियों का यथा संभव शब्दशः रिकार्ड रखा जाएगा। इसके अलावा, अध्यक्ष के निदेशानुसार सचिव एक कार्यवृत पुस्तक रखेगा और किसी बैठक का कार्यवृत उससे अगली बैठक में पढ़ा जाएगा तथा अध्यक्ष उस पर हस्ताक्षर करेगा।

18. **समिति की रिपोर्ट** –

(1) समिति की रिपोर्ट पर अध्यक्ष/उपाध्यक्ष और समिति के अन्य सदस्य हस्ताक्षर करेंगे। परन्तु यदि कोई सदस्य रिपोर्ट पर हस्ताक्षर करने के समय अनुपस्थित है, तो सचिव उसकी लिखित सहमति या असहमति प्राप्त करेगा।

इसके अतिरिक्त यह भी शर्त है कि यदि रिपोर्ट पर हस्ताक्षर करे समय अनुपस्थित रहने वाले किसी सदस्य को सचिव रिपोर्ट भेजता है और रिपोर्ट भेजे जाने के 15 दिन के भीतर उससे कोई उत्तर नहीं मिलता है, तो आगे और उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही रिपोर्ट राष्ट्रपति को प्रस्तुत की जा सकती है।

(2) समिति का कोई भी सदस्य रिपोर्ट में आये हुए किसी भी ऐसे मामले या मामलों पर अपना असहमति पत्र दे सकते हैं जिनके बारे में रिपोर्ट में राय व्यक्त की गई हो।

(3) असहमति–पत्र की भाषा संयत और शिष्ट होगी और उसमें न तो समिति के सदस्यों द्वारा व्यक्त विचारों का हवाला दिया जाएगा और न ही समिति या उसके सदस्यों पर कोई दोषारोपण किया जाएगा।

(4) यदि अध्यक्ष की राय में किसी असहमति–पत्र में ऐसे शब्द, वाक्यांश या मुहावरे हैं, जो अशिष्ट हैं या अन्यथा अनुपयुक्त हैं तो वह ऐसे शब्दों, वाक्यांशों या मुहावरों को असहमति–पत्र में से निकालने का आदेश दे सकता है।

19. **किसी प्रश्न को फिर से उठाने के लिए इच्छुक सदस्य या अध्यक्ष की अनुमति लेना** – यदि कोई सदस्य किसी ऐसे प्रश्न को दुबारा रखना चाहता है, जिस पर समिति पहले ही निर्णय ले चुकी है, तो उसे ऐसा करने से पहले अध्यक्ष की अनुमति लेनी होगी।

20. **अवशिष्ट शक्तियां** – जिन मामलों की इन नियमों में स्पष्ट रूप से व्यवस्था नहीं की गई है, वे और इन नियमों के पालन से संबंधित सारे प्रश्न समय–समय पर अध्यक्ष द्वारा निर्दिष्ट ढंग से विनियमित होंगे।

केंद्रीय स्वायत्त निकायों की लेखापरीक्षा का अवलोकन



सुश्री आरती शर्मा
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्या. प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
(कृषि, खाद्य एवं जल संसाधन)
10, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली–110124

केंद्रीय स्वायत्त निकाय का अर्थ है एक सरकारी एजेंसी, प्राधिकरण, आयोग या संस्था, जो सार्वजनिक सेवा का हिस्सा है, लेकिन जो इसे स्थापित करने वाले कानून के आधार पर या जिसके तहत इसे स्थापित किया गया है, के पास अपने स्वयं के मामलों का अन्य नियंत्रण है या अन्यथा स्वतंत्र है।

केंद्रीय स्वायत्त निकायों की लेखापरीक्षा

सांविधिक निगमों, स्वायत्त निकायों और प्राधिकरणों की लेखापरीक्षा से संबंधित प्रावधान नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (कर्तव्य, शक्तियां और सेवा की शर्तें) अधिनियम, 1971 की धारा 14, 19 (2), (3) और 20 में निहित हैं।

अधिनियम की धारा 14, 15, 19 और 20 भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक को निकायों/प्राधिकारियों की लेखापरीक्षा करने और अधिनियम के तहत निर्धारित उनके संबंध में इस तरह के कर्तव्यों का

कुछ प्रमुख केंद्रीय स्वायत्त निकाय

केंद्रीय स्वायत्त निकायों का वित्तपोषण

केंद्रीय स्वायत्त निकाय मूल रूप से अनुदान आधारित संगठन हैं और केंद्रीय बजटीय आवंटन के माध्यम से अनुदान प्राप्त करते हैं। मंत्रालयों के अधीन 61 मंत्रालयों/विभागों के अंतर्गत लगभग 300 केंद्रीय स्वायत्त निकाय थे जिनके लिए केंद्रीय बजट 21–22 के तहत बजटीय आवंटन किया गया था।



पालन करने और ऐसी शक्तियों का प्रयोग करने का अधिकार देते हैं।

नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (कर्तव्य, शक्तियाँ और सेवा की शर्तें) अधिनियम 1971 (अधिनियम) की धारा 19 (2)। संसद द्वारा या बनाए गए कानून के तहत स्थापित निकायों से संबंधित है।

इनमें भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक द्वारा लेखापरीक्षा के लिए विशिष्ट प्रावधान हैं।

ऐसे निकायों या प्राधिकरणों में शामिल हैं: –

1. प्रमुख बंदरगाह न्यास 2. केंद्रीय विश्वविद्यालय 3. राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान 4. भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान 5. भारतीय प्रबंधन संस्थान 6. अन्य शैक्षणिक और सांस्कृतिक संस्थान, स्वास्थ्य और अनुसंधान संस्थान, आदि।

सेपरेट (अलग) ऑडिट रिपोर्ट

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की धारा 14, 19(2) और धारा 20(1) के तहत विभिन्न मंत्रालयों और विभागों के तहत केंद्रीय स्वायत्त निकायों के खातों में अलग–अलग लेखापरीक्षा रिपोर्ट तैयार की जाती हैं।

खातों का एक समान प्रारूप

भारत सरकार के तहत स्वायत्त निकायों को लेखा वर्ष 2001–02 से खातों के एक समान प्रारूप में अपने खातों को संकलित करने की आवश्यकता है।

खातों के समान प्रारूप की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं –

1. खातों का एक मानक प्रारूप 2. अनुसूचियां जो वित्तीय विवरणों का हिस्सा बनती हैं 3. एक्रुअल सिस्टम ऑफ अकाउंटिंग और गोइंग कंसर्न की अवधारणाएं 4. अचल संपत्तियों पर मूल्यह्रास

वित्तीय विवरणों के घटक

1. बैलेंस शीट 2. आय और व्यय खाता 3. उपरोक्त वित्तीय विवरणों की अनुसूचियां 4. महत्वपूर्ण लेखानीतियों' का प्रकटीकरण 5. 'नोट्स टू अकाउंट्स' के माध्यम से अन्य सूचनाओं का प्रकटीकरण 6. प्राप्तियों और भुगतानों का विवरण

अनुपालन लेखापरीक्षा का हिस्सा बनने वाले विभिन्न लेखापरीक्षा निष्कर्ष

केंद्रीय स्वायत्त निकायों की अनियमितताओं पर सीएजी की रिपोर्ट में विभिन्न उदाहरणों द्वारा प्रकाश डाला गया है जैसे 1. कोडल प्रावधानों का पालन न करना 2. परियोजना प्रबंधन में कमियां 3. खराब आंतरिक नियंत्रण 4. अनियमितताओं के कारण परिहार्य 5. अतिरिक्त व्यय की बकाया राशि की वसूली नहीं करना 6. खराब वित्तीय प्रबंधन

ये लेखापरीक्षा निष्कर्ष क्या दर्शाते हैं?

अनुपालन रिपोर्ट में लेखापरीक्षा निष्कर्ष, आंतरिक नियंत्रण और बजट प्रबंधन की मौजूदा प्रणाली को और मजबूत करने के साथ–साथ अनियमितताओं की पुनरावृत्ति को रोकने के लिए निकाले गए लेखापरीक्षा निष्कर्षों पर त्वरित और प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित करने की आवश्यकता को दर्शाते हैं।

हिमाचल की वादियों– पहाड़ियों का सैर–सपाटा



ललित कुमार वर्मा
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय निदेशक लेखापरीक्षा
रक्षा सेवायें, दिल्ली

कुल्लू घाटी में लगभग ढाई हजार मीटर की ऊँचाई पर स्थित मनाली न केवल प्राकृतिक सुषमा से भरपूर है अपितु स्कीइंग, ट्रैकिंग, रिवर राफ्टिंग, पर्वतारोहण, पैराग्लाइडिंग, मंदिरों, गर्म जल के स्रोतों इत्यादि के लिए भी विश्वविख्यात है। यही कारण है कि वर्ष भर यहां देश विदेश से सैलानी पहुँचते हैं व यहां की शीतल पहाड़ियों, वादियों का भरपूर आनन्द उठाते हैं। मनाली मतलब मनु का घर, जहां की पहाड़ियां बरबस ही अपने नैसर्गिक सुषमा में हर एक को बांध लेती हैं।

मनाली के प्रमुख दर्शनीय स्थलों में हिडिम्बा मंदिर, मनु मंदिर, वशिष्ठ मंदिर, सोलंग वैली, नेहरू कुंड, जोगणी फाल, बौद्ध मंदिर, जगत सुख के अलावा रोहतांग पास इत्यादि शामिल हैं।

हिडिम्बा मंदिर मनाली बाजार से लगभग डेढ़ कि.मी. की दूरी पर एक पहाड़ी में हरे भरे देवदार इत्यादि के वृक्षों के बीच डुंगरी में स्थित है। स्थानीय लोग इसे ढगरी देवी के नाम से जानते हैं। कहा जाता है कि सन् 1553 में कुल्लू के राजा बहादुर सिंह ने इस मंदिर का निर्माण करवाया था। यह मंदिर अपनी ऐतिहासिक व पौराणिक वास्तुकला के लिए भी प्रसिद्ध है। दरअसल यह मंदिर हिडिम्बा नामक उस राक्षसी के नाम पर है जिसने पाण्डु पुत्र भीम से विवाह किया था। माना जाता है कि इसी स्थान पर भीम व हिडिम्बा की मुलाकात हुई थी। भीम व हिडिम्बा का पुत्र घटोत्कच था जिसने पाण्डव–कौरव युद्ध में वीरगति पाई थी। हिडिम्बा मंदिर के पास डुंगरी वन विहार भी है। यहां पर याक इत्यादि की सवारी के अलावा हिमाचली परिधान पहनकर फोटो खिंचवाये जाते हैं। यहां बच्चों के खेलने के लिए भी झूले इत्यादि लगे हुए हैं।

हिडिम्बा मंदिर से 75 मीटर की दूरी पर घटोत्कच पूजा स्थान है। कहा जाता है कि हिडिम्बा अपने भाई हिडिम्ब के साथ यहां रहती थी। उसका भाई हिडिम्बा काफी शक्तिशाली भी था। हिडिम्बा ने प्रण लिया था कि जो उसके भाई हिडिम्ब को युद्ध में हरा देगा वह उसी से विवाह करेगी।

पांडव जब अज्ञातवास के दौरान यहां पहुंचे, तब भीम ने हिडिम्ब को युद्ध में हरा दिया और हिडिम्बा से विवाह कर लिया। हिडिम्बा और भीम से घटोत्कच पैदा हुआ जो बहुत शक्तिशाली योद्धा था।



हिडिम्बा मंदिर, मनाली

पाण्डव–कौरव युद्ध में वह पाण्डवों की ओर से लड़ा और युद्ध में कर्ण ने अमोघ अस्त्र का प्रयोग कर उसे मारने के लिए किया जिसे उसने अर्जुन को मारने के लिए रखा था। पैगोडा शैली में बने इस मंदिर के प्रवेश द्वार (दायीं) पर बेलबूटे पशुओं जैसे हाथी, मगर इत्यादि उकेरे गये हैं। गणेश जी की प्रतिमा प्रवेश द्वार पर है दायें प्रवेश द्वार पर हाथ जोड़े भक्त नन्दी में उमा महेश्वर व बायीं ओर द्वार में गरुण में लक्ष्मी नारायण प्रदर्शित हैं। ऊपरी भाग में कांस्य कलश व त्रिशूल हैं। इस मंदिर की ढलवां काष्ठ निर्मित छत चार भागों में बटी हुई है। गर्भगृह में हिडिम्बा की कांस्य प्रतिमा है। यहां स्थित बौद्ध मंदिर में टांकरी लिपि के अनुसार 1553 में कुल्लू के राजा बहादुर सिंह ने इसे बनवाया था। यह मंदिर आधार से 80 फीट ऊंचा है। कुल्लू घाटी में हिडिम्बा को दुर्गा व काली के अवतार के रूप में काफी मान्यता प्राप्त है। कहा जाता है कि कुल्लू के प्रथम राजा भंगमनी जोकि एक कुम्हार के नौकर थे, को स्वप्न में हिडिम्बा के दर्शन हुए थे।

हिडिम्बा मंदिर के उपरांत मनु मंदिर जाया जा सकता है। यह मनाली गांव के पास स्थित है। यह गांव काफी खूबसूरत व पहाडी वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है। यहां पहुंचने के लिए दो मार्ग हैं। एक मार्ग में जंगल से भी होकर यहां का भ्रमण का रोमांच बढ़ाया जा सकता है। माना जाता है कि ब्रह्माजी के पुत्र मनु ने यहां तपस्या की थी। और इन्हीं के नाम पर क्षेत्र का नाम मनाली पड़ा। मनु मंदिर के बारे में कहा जाता है कि एक बार जब यहां एक महात्मा आये तो उन्होंने वहां एक औरत से दूध मांगा। उस औरत के पास गाय नहीं थी इसलिए उसने उस महात्मा को दूध के लिए मना कर दिया। यह सुनकर उस महात्मा ने उस औरत



मनु मंदिर, मनाली



मनाली के पास सोलंग वैली में पैरा ग्लाइडिंग का लुत्फ उठाते हुए सैलानी

से गोशाला में बंधी बछिया से दूध निकालने के लिए कहा। तब उस औरत ने उस बछिया से दूध निकाला जिसे उस महात्मा ने दही में बदल दिया। महात्मा ने तब अपना परिचय मनु के रूप में दिया और उस औरत से खुङ (पशुओं को बांधने का स्थान) में खुदाई करने को कहा। खुदाई करने पर वहां से प्राचीन मूर्तिया इत्यादि मिली। कहा जाता है कि इन मूर्तियों को वर्तमान में आधुनिक मंदिर में रखा गया है लेकिन मंदिर के गर्भगृह को प्राचीन रूप में ही रखा गया है।

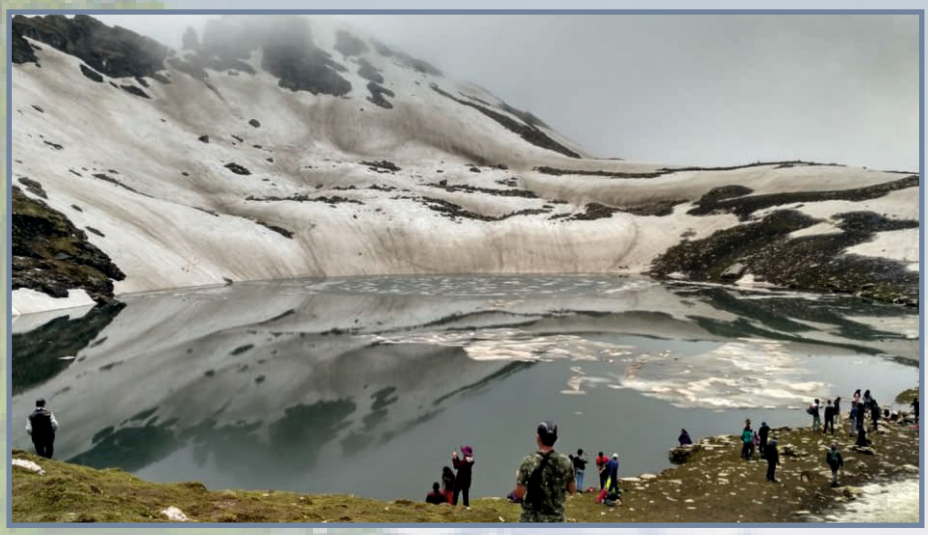
मनाली से वशिष्ठ मंदिर जाया जा सकता है। यह मनाली बाजार से लगभग तीन कि.मी. की दूरी पर है यहां गर्म जल का स्रोत है जिसमें दूर दराज से लोग नहाने का आनन्द उठाते हैं। कहा जाता है कि जब लक्ष्मण, ऋषि श्रृंगी के साथ अश्वमेघ यज्ञ में भाग लेने के लिए यहां पहुंचे तो लक्ष्मण ने अपने बाण से यहां गर्म जल की धारा पैदा की। ऋषि वशिष्ठ ने उन दोनों को इस जल में स्नान करने के लिए कहा और यह भी कहा कि जो भी इससे स्नान करेगा, वह थकान से दूर होगा।

मनाली से सोलंग घाटी के लिए जाया जा सकता है। यह मनाली से लगभग तेरह कि.मी. की दूरी पर है। यहां घाटी में सैलानी पैराग्लाइडिंग व अन्य साहसिक खेलों का लुफ्त तो उठाते ही हैं साथ ही यहां हिममंडित चोटियों को भी निहारा जा सकता है। यहां जोरिबिंग बाल में बैठकर पहाड़ से नीचे लुढकने का भी आनन्द सैलानी उठाते हैं। यह पारदर्शक एक बाल होती है जिसमें दो लोग एक साथ बैठ सकते हैं। इसमें सभी उम्र के लोग बैठकर आनन्द उठा सकते हैं।

मनाली बाजार में ही बौद्ध मंदिर है जहां जाकर एक अनुपम आध्यात्म की लहर जाग उठती है। यहां भगवान बुद्ध की प्रतिमाएं व मंदिर में बने थंका चित्र बरबस ही अपनी ओर खींचते हैं। यहां पास में ही



तिब्बती मार्किट में खरीदारी करते सैलानी



भृगु झील का लुभावना दृश्य

एक तिब्बती मार्किट भी है जहां हमेशा खरीददारों की भीड़ रहती है।

नेहरू कुंड में भ्रिगु झील से पानी आता है मनाली में सेवन सिस्टर पाक, हामटा पीक भी देखा जा सकता है।

मनाली भ्रमण के दौरान मृग झील भी देखा जा सकता है। जनश्रुति है कि साल में एक बार देवता इस झील में स्नान करने पहुंचते हैं। लगभग चौदह हजार फुट की ऊंचाई पर स्थित इस झील तक पहुंचने के लिए गुलाबा मोड़ से पैदल ही खड़ी चढ़ाई तय करनी पड़ती है। यह झील रोहतांग दर्रे के दायीं ओर स्थित हैं। भृगु झील हरे भरे पहाड़ों के बीच स्थित है। यहां मखमली बुग्याल व स्वच्छ सुन्दर झील एक अनुपम आभा बिखरते हैं जिससे तरोताजा मन नाच सा उठता है। यहां स्थानीय श्रद्धालु भी समय–समय पर स्नान व पूजा अर्चना के लिए भी पहुंचते हैं।

मनाली से लगभग पचास कि.मी. की दूरी पर रोहतांग पास है। लगभग चार हजार मीटर की ऊंचाई पर स्थित यह दर्रा गर्मियों में सैलानियों से भरा रहता है। यहां बक्करवाल सैकड़ों भेड़ों के साथ इधर–उधर पहाड़ियों में घूमते दिखाई देते हैं। यहां सैलानी स्कीइंग का आनन्द उठाते हैं तो इससे पहले कोठी व उसके आसपास पैराग्लाइडिंग का लुफ्त लेते हैं।

मनाली बाजार से व्यास नदी के दूसरी ओर से एक मार्ग प्रीणी जगतसुख को जाता है। व्यास नदी में पीर्णी से झिरही तक रिवर राफ्टिंग के लिए विश्व प्रसिद्ध है। देश–विदेश के सैलानी इसका आनन्द उठाते हैं।

जगतसुख व उसके आगे 15 कि. मी. की दूरी पर नग्गर है, जो अन्तर्राष्ट्रीय रोरिक मेमोरियल ट्रस्ट



नग्गर में गौरी शंकर मंदिर का दृश्य



मणिकर्ण गुरुद्वारा साहिब जहां पर गर्म पानी में लंगर तैयार किया जाता है

के लिए प्रसिद्ध है। यहां हिमालयन म्यूजियम भी है। यहां के हरे भरे पहाड़ भी दर्शनीय हैं।

जगतसुख को कुल्लू रियासत की राजधानी होने का गौरव प्राप्त है और यह मनाली से लगभग छह कि.मी. की दूरी पर है। यहां कई प्राचीन मंदिर देखने योग्य हैं। गौरी शिव मंदिर परिहार शैली में आठवीं नवीं सदी निर्मित है। यहां गायत्री मंदिर भी है।

जगतमुख से करजा, हरिपुर होते हुए सरसेई पहुँचा जाता है, यहां एक प्राचीन मंदिर है। सरसेई के उपरांत छाक्की व फिर नग्गर पड़ता है। नग्गर 1400 वर्षों तक कुल्लू की राजधानी रही है। नग्गर 1460 तक कुल्लू के राजाओं की राजधानी रही थी। इसकी स्थापना राजा विशुधपाल ने की थी। नग्गर में प्रसिद्ध चितकार निकोलई रोरिक की आर्ट गैलरी तो दर्शनीय है ही, साथ ही यहां से प्राकृतिक नजारों का आनन्द तो तरोजाता कर देता है। सन् 1460 में नग्गर से कुल्लू राजधानी राजा जगतसिंह ने स्थानांतरित किया था। नग्गर में भगवान शिव को समर्पित गौरी शंकर मंदिर है। यह विशिष्ट स्थापत्य कला के लिए प्रसिद्ध है। यहां पैगोडा शैली में त्रिपुरा सुन्दरी मंदिर भी दर्शनीय है। इसके अलावा यहाँ आसपास कई अन्य मंदिर भी हैं जिनमें विष्णु मंदिर, कृष्ण मंदिर शामिल है।

नग्गर से घुडदौड़, लराकेली, कराङसु, काईस, सेऊबाग होते हुए कुल्लू पहुंचा जाता है। कराडसु से काईस 3 कि.मी. की दूरी पर है। सेऊबाग से कुल्लू की दूरी 6 कि. मी. है।

मनाली से भुन्तर होते हुए मणिकर्ण पहुंचा जाता है। भुन्तर से मणिकर्ण 33 कि.मी. की दूरी पर है। भुन्तर व्यास व पार्वती नदियों के संगम पर बसा है और इसे पार्वती घाटी का प्रवेश द्वार भी माना जाता है।

भुंतर से 6 कि.मी. की दूरी पर हरोड़ नाला है। हरोड़ नाला से 4 कि.मी. की दूरी पर सरसाड़ी है, सरसाड़ी से 2 कि.मी. की दूरी पर छन्नीखोड़ है। छन्नीखोड़ से 5 कि. मी. की दूरी पर जरी है। जरी में कुछ दुकानें हैं, यहां से एक मार्ग मलाना गांव को जाता है। यहां तक पहुंचने में लगभग पांच घंटे पैदल चलना पड़ता है। यहां सभी फैसलों में देवता की इच्छा होती है। कहा जाता है कि यहां उत्तम किस्म की भांग पैदा होती है जिसे खरीदने के लिए दूर–दूर से लोग आते हैं।

जरी से 9 कि.मी. की दूरी पर कसोल है। जरी से कसोल तक का सड़क मार्ग यात्रा एक अनुपम उल्लास से भर देता है। कसोल में भी कुछ दुकानें है। यहां विदेशी पर्यटक काफी संख्या में घूमते नजर आते हैं। यहां पास में ही कसोल नारायण का मंदिर है जो यहां के आराध्य देवों में से एक है।

कसोल से मणिकर्ण 3 कि.मी. की दूरी पर है। यह मार्ग सौन्दर्य और



नैना देवी मंदिर का दृश्य

रोमांच से भरा हुआ है। मार्ग में विविध प्रजातियों के छोटे बड़े पौधों, वृक्षों के अलावा भोले भाले स्थानीय ग्रामीण, हंसते, बतियाते दिखाई देते हैं।

मणिकर्ण या मणिकरण 1650 मीटर की ऊंचाई पर स्थित हरे भरे पहाड़ों से घिरा हुआ है। पार्वती नदी का निश्छल सौंदर्य और देवदार के ऊंचे–ऊंचे पेड़ यहां के सौंदर्य को चार चांद लगाते हैं।

मणिकरण पहुंचने के लिए पुल से होकर दाहिनी ओर जाना पड़ता है। पुल के पास खड़े होकर दूर तक फैली हरी भरी संकरी घाटी को देखना, निहारना एक अनोखा अनुभव करता है।

कहा जाता है कि पहले यहां नौ शिव मंदिर थे, यह भी कहा जाता है कि किरात रूप में आकर महादेव शिव ने पांडु अर्जुन से यही युद्ध कर उनकी परीक्षा ली थी और तदुपरान्त उन्हें पशुपति अस्त प्रदान किया था। यह भी माना जाता है कि ऋषि वशिष्ठ से शिक्षा दीक्षा के उपरांत भगवान रामचन्द्र और लक्ष्मण ने यहां महादेव शिव की आराधना की थी।

यहां कई धार्मिक स्थल भी हैं जिसमें नयना देवी मंदिर, रघुनाथ मंदिर, शिव मंदिर, राम मंदिर, हनुमान मंदिर व गुरूद्वारा प्रमुख हैं। नयना देवी मंदिर के बारे में कहा जाता है कि यहां माता नयना देवी का जन्म हुआ था। कहा जाता है कि भगवान शिव का यहां तीसरा नेत्र खोलने से नयना देवी प्रकट हुई थी। रघुनाथ मंदिर में भगवान विष्णु कमलासन पर स्थापित है। शिखर शैली में निर्मित मंदिर काफी आकर्षक है जिसकी छत भी पहाड़ी क्षेत्रों में पाये जाने वाले स्लेटों से ढकी हुई है।

राम मंदिर भी शिखर शैली से बना हुआ है, कहा जाता है कि पहले यहां अर्धनारीश्वर मंदिर था। इसे सन् 1653 में बनवाया गया था। इसके ठीक सामने पूर्वाभिमुख हनुमान मंदिर है। शिव मंदिर के पास ही प्रसिद्ध मणिकर्ण गुरूद्वारा है।

यहां एक ओर जहां ग्लेशियरों से निकलकर पार्वती नदी में कंपकपा देने वाला पानी बहता है वही यहां कई गर्म कुण्ड में पानी खौलता नजर आता है। यहां नहाने के लिए पुरुष व महिलाओं के लिए दो कुण्ड रामकुण्ड व सीताकुण्ड हैं। श्रद्धालु इसमें स्नानकर न केवल धन्य होते हैं अपितु कई तरह की बीमारियों से भी मुक्ति पाते हैं। माना जाता है कि यहां के गर्म कुण्डों में स्नान करने से जोड़ों का दर्द, गठिया या पेट की बीमारियां दूर होते हैं। श्रद्धालु इन कुण्डों में चावल की पोटली बांधकर पन्द्रह बीस मिनट तक रखते हैं और पक जाने पर इसे प्रसाद स्वरूप ग्रहण करते हैं और अपने घर परिवार में बांटते हैं। शिव मंदिर के पास

स्थित कुण्ड में भोजन पकाने के लिए श्रद्धालुओं में होड़ मची रहती है। कहा जाता है कि यहां पार्वती नदी के लगभग 35 कि.मी. में कई गर्म कुण्ड हैं।

यहां से रूपी घाटी भी जाया जा सकता है। रूपी घाटी में मणिकर्ण के साथ लगती ऊंची चोटियां, चन्द्रखणी जोत, मलाणा पीक, तोष जोत, ब्रह्मसरोवर व मानतलाई के अलावा बंजार, सैंज व मणिकर्ण की ऊंची चोटियां भी हैं जो एक अनुपम सौंदर्य बिखेरती हैं।

मनाली से 29 कि.मी. की दूरी पर रायसन है जहां रोमांचकारी खेलों के शौकीन टैंट लगाकर रहते हैं। कुल्लू से यह 12 कि.मी. की दूरी पर मनाली राजमार्ग पर है।

मनाली से भृगु लेक भी जाया जा सकता है, 4270 मीटर की ऊंचाई पर स्थित यह लेक भृगु पर्वत के नीचे है। यहां से गुलाबा या विशिष्ठ गांव से जाया जाता है।

ऊना जनपद के कुटलैहड़ क्षेत्र की उच्च पर्वत श्रृंखलाओं से ध्यूंसर सदाशिव मंदिर स्थित है। यह मंदिर लगभग साढ़े पांच हजार वर्ष पुराना माना जाता है। लगभग 800 मीटर की ऊंचाई पर स्थित इस मंदिर के बारे में मान्यता है कि महाभारत काल में यहां ऋषि धौम्य ने शंकर भगवान की तपस्या की थी। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शंकर ने जब उनसे वरदान मांगने के लिए कहा तो ऋषि धौम्य ने यह वरदान मांगा कि जो भी श्रद्धालु यहां शिवलिंग की पूजा अर्चना करेगा उसकी सारी मनोकामनाएं पूरी होंगी। मान्यता है कि तब से यहां पर आने वाले श्रद्धालु की सारी कामनाएं पूरी होती है। यहां महाशिवरात्रि के अवसर पर शिवरात्रि महोत्सव मनाया जाता है जिसमें दूर दराज के क्षेत्रों में काफी संख्या में श्रद्धालु पहुंचते हैं।

नादौन में व्यास नदी के तट पर लवणेश्वर महादेव का मंदिर है। यहां स्थित शिवलिंग साढ़े चार फुट ऊंचा है। मान्यता है कि प्रतिवर्ष महाशिवरात्रि के अवसर पर शिवलिंग एक तिल के बराबर बढ़ता है। यहां महाशिवरात्रि व श्रावण माह में काफी संख्या में श्रद्धालु पहुंचते हैं।

कहा जाता है कि नादौन के राजा को स्वप्न में व्यास नदी में बहते इस शिवलिंग को यहां स्थापित कर पूजा अर्चना का आदेश दिया था तब यहां मंदिर बनाकर पूजा अर्चना हुई। यह भी कहा जाता है कि कुछ दशकों पहले तक ब्रह्ममुहुर्त में इस मंदिर की घंटिया स्वयं ही बज उठती थी।

मैड़ी (अम्ब) में प्रतिवर्ष बाबा वड़भाग सिंह मेले का आयोजन होता है। इस अवसर पर चरण गंगा तक सड़क के दोनों किनारों पर कई दुकानें भी लगी रहती है। कहा जाता है कि इस मेले में लगभग 25 लाख श्रद्धालु देश विदेश से पहुंचते हैं।

गारेट से लगभग एक कि.मी. की दूरी पर स्थित शिवबाड़ी है जहां शिव का ज्योर्तिलिंग जमीन से ऊपर उठे होने के बजाय अंदर धंसा हुआ है। यहां अन्य ज्योर्तिलिंग के विपरीत आधी परिक्रमा न कर ज्योर्तिलिंग की पूरी परिक्रमा की जाती है।

कहा जाता है कि सोमभद्रा नदी के किनारे स्थित इस स्थान पर गुरू द्रोणाचार्य की पुत्री जयाति की तपस्या से प्रभावित होकर भगवान शिव यहां पिंडी के रूप में बस गये थे और यह भी वचन दिया था कि बैसाखी के दूसरे शनिवार को यहां मेला लगेगा जिसमें वे स्वयं शामिल होंगे। कहा जाता है कि तब से यहां प्रतिवर्ष बैसाखी के दूसरे शनिवार को बहुत बड़ा मेला जुटता है।

शहीद दिवस 23 मार्च : जरा याद करो कुर्बानी



सुश्री नेहा यादव
कनिष्ठ अनुवादक
मुख्यालय

23 मार्च, 1931 को शहीदी दिवस पर समर्पित यह लेख हमारे वीर जवानों ने देश के लिए दिए गए बलिदान को याद करता है। हम उनकी लासानी शहीदी को कोटि–कोटि नमन करते हैं।

"शहीदों की चिताओं पर लगेगें हर बरस मेले
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशाँ होगा

कभी वह दिन भी आएगा जब अपना राज देखेंगे
जब अपनी ही जमीं होगी और अपना आसमाँ होगा"

कवि जगदंबा प्रसाद मिश्र 'हितैषी' की कविता की यह पंक्तियां किसी शहीद के स्मारक को देख कर साकार हो उठती हैं। साथ ही इस तथ्य का अहसास भी होता है कि यदि उन शहीदों ने देश की आजादी के लिए अपनी जान न्योछावर नहीं की होती, तो यह संभव है कि हम आज भी गुलामी की बेड़ियों में जकड़े होते और तब, न तो रहने के लिए यह धरती अपनी होती और न ही खुली हवा में सांस लेने के लिए ये आजाद आसमान नसीब होता। इसलिए भारत में प्रतिवर्ष उन लोगों को श्रद्धांजलि देने के लिये शहीद दिवस मनाया जाता है, जो भारत की आजादी, कल्याण और प्रगति के लिये लड़े और अपने प्राणों का बलिदान दे दिया।

भारत कई वर्षों तक अंग्रेजों के अत्याचारों के अधीन रहा। 200 सालों की गुलामी के बाद भारत ने 1947 में अंग्रेजों से अपनी स्वतंत्रता प्राप्त की थी। लेकिन क्या यह आजादी इतनी आसान थी? बिल्कुल नहीं। आजादी की कीमत के रूप में भारत को एक नहीं, दो नहीं, बल्कि लाखों कुर्बानियां देनी पड़ी थी। आज हम स्वतंत्र रूप से अपना मनचाहा कार्य कर सकते हैं, जो सिर्फ हमारे अमर शहीदों के कारण ही संभव हो पाया है। क्रांतिकारियों की बहादुरी की जितनी मिसाल दी जाए, उतनी कम होगी।

वैसे तो देश की आजादी की लड़ाई में कई स्वतंत्रता सेनानी हुए, लेकिन इनमें तीन ऐसे वीर सपूत हैं, जिनकी शहादत ने देश के नौजवानों में आजादी के लिए अभूतपूर्व जागृति का शंखनाद किया। वे तीन असाधारण, ब्रिटिश शासन से लोहा लेने वाले स्वतंत्रता सेनानी थे – भगत सिंह, शिवराम राजगुरु और सुखदेव थापर। 23 मार्च 1931 की रात भगत सिंह को सुखदेव और राजगुरु के साथ लाहौर षडयंत्र के आरोप में अंग्रेजी सरकार ने फांसी पर लटका दिया था। यही वजह है कि हर वर्ष 23 मार्च का दिन इन तीनों शहीदों की याद में शहीद दिवस के तौर पर मनाया जाता है।

भगत सिंह का जन्म 28 सितंबर, 1907 में अविभाजित पंजाब के लायलपुर (अब पाकिस्तान) में हुआ था। वे

स्वतंत्रता सेनानी के परिवार में पले बढ़े और बहुत छोटी उम्र से ही आजादी की लड़ाई में शामिल हो गए थे। राजगुरु का जन्म 1908 में पुणे में हुआ था। वे हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी में भी शामिल हुए थे। सुखदेव का जन्म 15 मई 1907 में हुआ था। उन्होंने पंजाब और उत्तर भारत में क्रांतिकारी सभाएं की और लोगों के दिलों में जोश पैदा किया था।

लाला लाजपत राय की हत्या के बाद भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, चंद्रशेखर आजाद और कुछ अन्य क्रांतिकारियों ने आजादी के लिए संग्राम का मोर्चा संभाल लिया था। अंग्रेजों के बढ़ते हुए अत्याचार से सबसे पहले भगत सिंह ने लाहौर में सांडर्स की गोली मार कर हत्या कर दी। उसके बाद अंग्रेजी शासन की हुकूमत के खिलाफ आवाज उठाते हुए उन्होंने पब्लिक सेफ्टी और ट्रेड डिस्ट्रीब्यूटर बिल के विरोध में 8 अप्रैल, 1929 को सेंट्रल असेंबली में बम फेंके थे। हालांकि, उनका मकसद केवल अंग्रेजों तक अपनी आवाज पहुंचाना था, किसी की हत्या करना नहीं। 'इंकलाब जिंदाबाद' का नारा लगाते लगाते भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को गिरफ्तार कर लिया गया और उन पर हत्या का आरोप लगाया गया। उस समय जब अंग्रेजों के सामने किसी की बोलने की हिम्मत नहीं होती थी, तब भारत माता के शेरों ने लाहौर के सेंट्रल असेंबली में धमाका किया।



इन क्रांतिकारियों की गिरफ्तारी के कारण देश में कई जगह पर प्रदर्शन किए गए, परंतु उससे कोई बड़ा बदलाव नहीं आया। लोगों को यह शक हो गया था कि अंग्रेज कोई कायरता पूर्वक हरकत अवश्य करेंगे, और हुआ भी वही। भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को 24 मार्च को फांसी दी जाने वाली थी, परंतु उसके एक दिन पहले ही 23 मार्च 1931 के करीब शाम 7.33 बजे इन क्रांतिकारियों को फांसी पर चढ़ा दिया गया, और उनके शवों को उनके घर वालों को न सौंप कर सतलुज नदी के तट पर जला दिया गया। पूरी फांसी की प्रक्रिया को गुप्त रखा गया था। इस घटना से पूरा देश आहत था और क्रोधित भी। अब तक उनके जन्म स्थान में हुसैनीवाला या भारत–पाक सीमा पर शहीदी मेला या शहादत मेला आयोजित किया जाता है।

भगत सिंह जीवन के लक्ष्य को महत्व देते थें। उनका मानना था कि हमें अपने जीवन का लक्ष्य पता होना चाहिए। अगर हमें अपने लक्ष्य का पता होगा और हम अपने लक्ष्योन्मुख से कार्य करेंगे तो हमें सफल होने से कोई ताकत नहीं रोक सकती है। वतन के लिए त्याग और बलिदान उनके लिए सर्वोपरि रहा। वे कहते थे कि एक सच्चा बलिदानी वही है जो आवश्यकता पड़ने पर सब कुछ त्याग दे। भगत सिंह स्वयं अपनी निजी जिंदगी से प्रेम करते थे, उनकी भी महत्वाकांक्षाएं थी,

सपने थे। लेकिन वतन पर उन्होंने अपना सबकुछ कुर्बान कर दिया। जब भगत सिंह को फांसी पर चढ़ाया गया उस समय भगत सिंह की उम्र मात्र 23 वर्ष थी। परंतु उनके क्रांतिकारी विचार बहुत व्यापक और आला दर्जे के थे। न केवल उनके विचारों ने लाखों भारतीय युवाओं को आजादी की लड़ाई के लिए प्रेरित किया, बल्कि आज भी उनके विचार युवाओं का मार्गदर्शन करते हैं।

इंकलाब का नारा बुलंद करने वाले भगत सिंह अपने आखिरी समय में भले ही अंग्रेजी हुकूमत की बेड़ियों में जकड़े थे, परंतु उनके विचार स्वतंत्र थे। उनके कुछ क्रांतिकारी विचार इस प्रकार हैं:

1. बम और पिस्तौल से क्रांति नहीं आती, क्रांति की तलवार विचारों की सान पर तेज होती है।
2. निष्ठुर आलोचना और स्वतंत्र विचार, ये दोनों क्रांतिकारी सोच के दो अहम लक्षण हैं।
3. राख का हर एक कण मेरी गर्मी से गतिमान है, मैं एक ऐसा पागल हूं जो जेल में आजाद है।
4. प्रेमी पागल और कवि एक ही चीज से बने होते हैं और देशभक्तों को अक्सर लोग पागल कहते हैं।
5. जिंदगी तो सिर्फ अपने कंधों पर जी जाती है, दूसरों के कंधे पर तो सिर्फ जनाजे उठाए जाते हैं।
6. व्यक्तियों को कुचलकर भी आप उनके विचार नहीं मार सकते हैं।

भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव के जीवन से हमें देशभक्ति की प्रेरणा मिलती है। साथ में उन महान क्रांतिकारियों के जीवन से हम यह भी सीख सकते हैं कि अगर देश की आन, बान और शान के खिलाफ कोई ताकत खड़ी होती है, तो हमें बल के साथ–साथ वैचारिक रूप से भी उसे कुचलने की आवश्यकता है।

प्रतिवर्ष शहीद दिवस के अवसर पर करोड़ों भारतीय अपने महान क्रांतिकारियों अथवा सुरक्षाबलों को श्रद्धांजलि अर्पित करके उनका आभार व्यक्त करते हैं और राष्ट्रप्रेम की भावना लेकर वापस लौटते हैं।

आज भारत दुनिया में बहुत तीव्रता से प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़ रहा है। देश के सौहार्द और सफलता को नजर लगाने वाली कुछ नापाक शक्तियां सदैव ही देश की तरफ घात लगाए बैठे रहती हैं। लेकिन दुश्मनों की सारी कोशिशें हमारे जवानों के सामने नाकामयाब हो जाती हैं। जिस तापमान में रहने के लिए आम मनुष्य कल्पना भी नहीं कर सकता, उसके दोगुने तापमान में हमारे नौजवान सेना बल प्रतिदिन देश की सरहद पर पहरा देते हैं।

किसी ना किसी कारणवश कई बार कुछ खुशहाल घरों के दीपक बुझ जाते हैं, लेकिन इन्हें देश कभी भी भुला नहीं सकता। इसीलिए हर वर्ष हमारे देश के लिए शहीद होने वाले प्रत्येक नौजवान को शहीद दिवस के दिन भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है। इस दिन संपूर्ण भारत में देशप्रेम का कुछ अलग ही नजारा देखने को मिलता है। उन महान नौजवानों को इस दिन याद किया जाता है, जिन्होंने अपने रक्त से हिंदुस्तान की मिट्टी को सींचा है। एक कविता की पंक्तियों में सच ही लिखा है कि:

"देशभक्तों में कुछ ही खुश नसीब होते हैं,
वो कभी मरते नहीं, जो शहीद होते हैं।"

अनुतान अथवा सुर लहर



गौरव हारिथ
वरिष्ठ अनुवादक
राजभाषा अनुभाग
मुख्यालय

सुर स्वरतंत्रियों के कंपन के कारण उत्पन्न एक ध्वनि गुण है जो स्वरतंत्रियों के प्रति सैकेण्ड कंपनावृत्ति पर निर्भर करता है। सुर किसी एक ध्वनि का होता है किंतु जब हम एक से अधिक ध्वनियों की इकाई का उच्चारण करते हैं तो हर ध्वनि का सुर प्रायः अलग–अलग होता है और इस प्रकार सुरों में उतार–चढ़ाव की लहर बनती है जिसे 'सुर लहर' अथवा 'अनुतान सुर' कहते हैं। दूसरे शब्दों में अनुतान या सुर लहर सुरों के उतार–चढ़ाव या आरोह अवरोह का क्रम है जो एकाधिक ध्वनियों की भाषिक इकाईयों के उच्चारण में सुनाई देती है। उदाहरण के लिए –

दो व्यक्ति आपस में बात कर रहे हैं, दूसरा व्यक्ति पहले व्यक्ति की किसी बात को सुनकर स्वीकृति सूचक 'अच्छा' कहता है। कुछ देर बार वही दूसरा व्यक्ति पहले व्यक्ति की किसी ऐसी बात को सुनकर, जिसे सुनने की वह अपेक्षा नहीं कर रहा था, सुनकर सहसा अच्छा कहता है। यह 'अच्छा' निश्चय ही पहले वाले 'अच्छा' से भिन्न है। यह 'अच्छा' उत्सुकता व आश्चर्य को अभिव्यक्त कर रहा है। जब पहले व्यक्ति की बातें खत्म हो जाती हैं तो दूसरा व्यक्ति 'अच्छा' कह कर चलने का उपक्रम करता है। यह तीसरा 'अच्छा' पहले दोनों 'अच्छा' से भिन्न है इसमें विदा होने का संकेत है। इसी तरह और भी प्रकार्य हो सकते हैं जो 'अच्छा' द्वारा व्यक्त हो रहे हो। यह सभी प्रकार्य स्वराघात के उतार–चढ़ाव से सीधा संबंध रखते हैं और यह स्वराघात का उत्तम उतार–चढ़ाव स्वर तंत्रियों के झंकृति का परिणाम है। इस उदाहरण में उच्चारण 'अच्छा के खंड्य ध्वनियों में कोई परिवर्तन नहीं किया गया इसे ही अनुतान कहते हैं।

विश्व भाषाओं को अनुतान की दृष्टि से दो भागों में रखा जा सकता है :–

तान भाषाऐं – चीनी, बर्मा आदि।

अतान भाषाऐं – हिंदी, अंग्रेजी आदि।

तान भाषाओं में अनुतान से शब्द का अर्थ बदल जाता है तथा उसका व्याकरणार्थ भी। किंतु अतान भाषाओं में केवल आश्चर्य, प्रश्न, अनिच्छा, आज्ञा आदि का अतिरिक्त भाग ही आ पाता है जो अभिव्यक्ति के सामान्य अर्थ के ऊपर एक प्रकार से आरोपित रहता है। इस प्रकार अनुतान के मुख्यतः तीन प्रकार हैं :–

1. कोशार्थ परिवर्तन –

तान भाषाओं में अनुतान से शब्दों के अर्थ (कोशार्थ) बदल जाते हैं। उदाहरणार्थ – चीनी शब्द 'मा' का एक अर्थ है 'माता' और दूसरे में 'घोड़ा'।

2. व्याकरणार्थ परिवर्तन –

अफ्रीका में पाउंडे भाषा में 'मेगायेन' एक अनुतान में भूतकाल का रूप है (मैंने देखा) तो दूसरे अनुतान भविष्य का (मैं देखूंगा)।

3. सामान्य कथन, प्रश्न, आश्चर्य का द्योतन –

राम गया। (सामान्य कथन)
राम गया? (प्रश्न वाचक)
राम गया! (आश्चर्य)

ऐसे ही विभिन्न अनुतानों में 'अच्छा' शब्द से 'हाँ' तुम भी आना – अच्छा। आ जाऊँगा।

आश्चर्य – वह पास हो गया – अच्छा!

अनिच्छा – शाम को मेरे साथ चाय पियो – अच्छा

आदि में भाव व्यक्त होते हैं।

संहिता :–

बोलने में एक ध्वनि के बाद दूसरी ध्वनि आती रहती है। वक्ता एक ध्वनि के बाद दूसरे का उच्चारण करता है। यह एक ध्वनि से दूसरे पर जाकर दो प्रकार का होता है कभी तो हम सीधे चले जाते हैं और दोनों ध्वनियों के बीच कुछ नहीं आता। उदाहरणार्थ – 'तुम्हारे' शब्द में 'म' के बाद 'ह' सीधे आता है। किंतु कभी–कभी एक ध्वनि से दूसरी पर जाना ऐसा नहीं होता है। उदाहरणार्थ – 'तुम' 'हारे' में ध्वनियां वही हैं किंतु के बाद 'ह' सीधे नहीं आ जाता वरन् थोड़ा अवकाश, विराम या मौन है। इसी विराम या को संगम संहिता, विवृति या योजक मौन कहते हैं। यही कारण है कि तुम्हारे, तुम हारे का अर्थ अलग है इसे भाषा विज्ञान में धन (+) चिन्ह द्वारा व्यक्त करते हैं अतः इसे धन (+) संगम भी कहते हैं। जैसे – तुम + हारे।

संगम शब्दों के बीच में आता है अतः कुछ लोग इसे 'आंतरिक संगम' भी कहते हैं। जब यह संगम दो रूपिमों के बीच में होता है तो इसे 'रूपिक संगम' कहते हैं। तुम + हारे में 'रूपिनिक संगम' है। व्याकरणिक शब्दों के बीच में आने पर 'व्याकरणिक संगम' कहते हैं और जब दो अक्षरों के बीच में यह संगम आता है तो उसे 'आक्ष संगम' कहते हैं।

संगम बहुत सी भाषाओं में न किसी रूप में सार्थक होता है अर्थात इसका स्वनितिक महत्व होता है। स्वनिमित महत्व से तात्पर्य है कि इसके होने या न होने से अर्थ बदल जाता है अर्थात इसकी उपस्थिति अर्थ को बदल देती है। उदाहरणार्थ –

1. तुम खूब हंस + आया करो (स + आ)।

   तुम खूब हंसाया करो।

2. घास फिर से उग + आई है। (ग + आइ)।

   घास फिर से उगाई है।

3. जल + सा स्थिर लग रहा है (ल + सा)

   जलसा स्थिर लग रहा है।

4. हल + की चोट ठीक है (ल + का)

   हलकी चोट ठीक है।

मात्रा :–

किसी भी ध्वनि के उच्चारण में या उच्चारण छोड़ कर मौन रहने के समय की जो मात्रा लगती है उसे भाषा के अध्ययन में भाषा काल कहते हैं। किसी ध्वनि के उच्चारण में समय कम लगता है, किसी में ज्यादा, किसी में बहुत ज्यादा और

किसी में बहुत कम। कम समय वाली मात्रा ह्रस्व अधिक समय वाली मात्रा दीर्घ और उससे भी अधिक समय वाली मात्रा प्लुत कहलाती है। इसी आधार पर मात्रा के मोटे तौर पर पांच भेद किए जा सकते हैं।

1. ह्रस्वार्द्ध, 2. ह्रस्व, 3. ईषत्–दीर्घ, 4. दीर्घ, 5. प्लुत

प्राचीन भारत में मात्रा का अच्छी तरह भेद किया गया था। भारतीय भाषा शास्त्रीय इसके महत्व से अच्छी तरह परिचित थे कुछ लोगों के समान एक बार चुटकी बज जाने में जितना समय लगता है उतना समय ह्रस्व का है और उससे दोगुना तथा तीन गुना क्रम से दीर्घ तथा प्लुत का वस्तुतः ऐसी बात नहीं है। ह्रस्व की तुलना में दीर्घ में अधिक समय लगता है किंतु दुगुना नहीं। संस्कृत में सामान्य रूप से ह्रस्व या दीर्घ का ही प्रयोग देखने को मिलता है। प्लुत का प्रयोग बहुत कम देखने को मिलता है। 'ओ३म' में 'ओ' प्लुत है इसीलिए 'ओ के बाद 'इ' लिखते हैं जो (ह्रस्व के बीन गुने) प्लुत का द्योतक है। किसी को बुलाने में इसका प्रायः प्रयोग होता है। उदाहरण – 'राऽऽऽम' मैं यहां 'रा' का 'आ' प्लुत है।

मात्रा, स्वर, अर्द्धस्वर और व्यंजन सभी की होती है। कुछ लोगों का विचार है कि भारत में व्यंजन की मात्रा नहीं मानी जाती है किंतु वस्तुत ऐसी बात नहीं है स, श, ज आदि ऐसे व्यंजन है जिनका उच्चारण देर तक किया जा सकता है। इनकी मात्रा घट–बढ़ सकती है। व्यंजन का द्वित्व वस्तुतः दो व्यंजन न होकर व्यंजन का मात्रा की दृष्टि से दीर्घ रूप ही है। जैसे – गुडडी, बग्गी, सच्चा, धक्का जैसे शब्दों में यदि ध्यान दिया जाए तो ये एक ध्वनि के ही दीर्घ रूप हैं।

स्रोत : अज्ञात

वाणी राष्ट्र की आत्मा है। वाणी ही यह विज्ञापित करती है कि हम भारतीय हैं। वाणी ही हमारी एक अलग पहचान स्थापित करती है, चाहे वह अहिंसा हो, पंचशील हो, सह–अस्तित्व हो या गुटनिरपेक्षता। राष्ट्रभाषा के रूप में तो हिंदी स्वतंत्रता आंदोलन में प्राण फूँक कर अपनी शक्ति प्रदर्शित कर ही चुकी है। राजभाषा के रूप में हम सबको उसके माध्यम से जन–आकांक्षाओं की पूर्ति करके हिंदी को प्रचलित करना है।

– शिवराज वि. पाटील

नो... थैंक्स



सुश्री मीनाक्षी
सहायक प्रशासन अधिकारी
मुख्यालय

मम्मी ... नाश्ते में क्या खिला रही हो?" कहते–कहते गुनगुन उसके पास आ गई ... "ओह नो ... नहीं ... मैं नहीं खाऊँगी स्टफ़्ड परांठा! क्या मम्मी आप भी ना!! संडे है आज ... छुट्टी के दिन भी बेकार सी चीजें क्यों बना रही हो?"

बेकार! अचानक उसे गुस्सा आ गया, खाने को बेकार सी चीज कह रही है। बेटे के लिए मूली के, पति के लिए दाल के और बेटी के लिए गोभी के परांठे की तैयारी की हुई है। अपने लिए तो सोचा ही नहीं ... जो भी मसाला बच जाएगा उसी से बना लेगी अपने लिए तो ... उस पर बनाने से पहले ही मूड खराब हो गया उसका ... उसने भी तमक कर कहा "कब खाया था स्टफ़्ड परांठा!" याद भी है, इतने दिनों बाद बना रही हूँ ... फिर दोपहर को तुम्हारी पसंद के राजमा चावल भी बना रही हूँ मेरी भी संडे की छुट्टी होती है ...

इंसान हूँ मैं भी कोई भी मदद नहीं करते तुम लोग ... थोड़ा आक्रोश कम होने पर नरमी से पूछा क्या आलू परांठा खाएगी वो? लेकिन जवाब आया "नो ... थैंक्स भूख नहीं है मुझे बहुत खिला दिया आपने अभी अभी मुझे" कहती हुई गुनगुन अपने कमरे में जा बैठी ...

सन्न सी रह गई ... ओपन किचन के साथ ही ड्राईंग रूम में पति और बेटा कोई फिल्म देख रहे थे ... इस वार्तालाप का कोई प्रभाव उन पर नहीं पड़ा था ... कुछ नया भी नहीं था ... उसकी आँखों में आँसू आ गए ... जिस बेटी को इतना लाड़ किया जिसे ससुराल भेजने के ख्याल मात्र से ही रूह काँप जाती है उसका इतना निष्ठुर स्वभाव!! नाश्ता बनाती और खिलाती अपने आप से बातें करती रही ... गुनगुन के कमरे में नाश्ता लिए पहुंची तो वो बिस्तर में मुँह लपेटे सोने की एक्टिंग कर रही थी ... उसने नरमी से कहा "उठ बेटा नाश्ता कर ले" गुनगुन ने हाथ झटक कर कहा "मुझे भूख नहीं है ... तंग मत करो ... आप जाओ यहाँ से प्लीज" आँसू गालों तक झलक आए थे ... गुस्से में थाली लिए वापिस आ गयी। पति ने प्रश्नवाचक आँखों से देखा ... कोई जवाब न मिलने पर कठोर आवाज में बोले "हद करती हो बच्ची के साथ बच्ची बन जाती हो माँ कैसे भी बच्चों को खिला देती है और तुम हो कि ..." उसके सब्र का बांध भर गया तमतमाकर बोली "नहीं हूँ मैं माँ ... इतनी बेचारी माँ नहीं होना है मुझे मैं, मैं भी एक इंसान हूँ ... नौकरी में भी करती हूँ और मेरी भी एक ही छुट्टी होती है। अपने लिए एक पल का समय

भी निकाल नहीं पाती हूँ और तुम सबको मेरे स्नेह, मेहनत और समय का कोई मूल्य नहीं है।" कह कर अपना नाश्ता किए बिना ही बिस्तर पर पड़ गयी। सिरदर्द होने लगा था, आज लग रहा था कि उसने अपने अमूल्य समय को नष्ट कर दिया है। जब तक उसकी आवश्यकता होती है सब फरमाईश करते रहते हैं और जब उसका काम खत्म तो एक ऐसी मौन मुद्रा .. . मानों कह रहे हो नो थैंक्स ... अब तुम्हारी कोई जरूरत नहीं ... मन अवसाद से भर आया।

बार–बार बजती अलार्म की आवाज मोबाइल पर लगातार संदेशों के आने की सूचना दे रही थी। उसने फोन उठा कर देखा ... ओहो!! कॉलेज के मित्रों के व्हाट्सप ग्रुप पर लगातार मैसेज आ रहे थे ... कोतूहलवश देखा कि आज मिलने का प्रोग्राम बनाया गया था और सब बारी–बारी अपने घर से निकलने, रास्ता पूछने, असमर्थता दर्शाने तथा अन्य दोस्तों को रास्ते से गाड़ी में पिक करने की सूचना दे रहे थे ... कल से 15 मिस्सड कॉल और कई मैसेज थे मेरे नाम के। शनिवार से ही मैं ऑफिस और दुनिया भूल कर घर की ही हो जाती हूँ ... इसीलिए मैसेज नहीं देखती ... सभी मेरे इंतजार में थे ... कईयों ने आग्रह करके तो कईयों ने उलाहना देकर जोर डाला था कि मैं जरूर आऊँ। मैं अपना चिरपरिचित असमर्थता दर्शाने का मैसेज डालने का उपक्रम करने लगी। लिखने लगी कि सिर दर्द है बहुत ... अगली बार जरूर आऊँगी ... मैसेज भेजते ही फोन बजने लगा जिसका डर था वही हुआ। उसकी अभिन्न सखी का फोन आ गया विडियो कॉल था। उसकी पुरानी आदत थी जब कोई बात मनवानी हो तो वीडियो कॉल ही करती ... फिर तानों, उलाहनों की बौछार और अंत में बड़ी–बड़ी आँखों में झिलमिलाते मोती ... ये उसका गहना थे। मानो पलों की ओट लिए ही बैठे रहते थे कि जाने कब उनकी बारी आ जाए ... जैसा कि फोन उठाने पर होना था वही हुआ ... और मैंने कहा "अच्छा देखती हूँ।"

देखती हूँ कहना जितना आसान है देखना उतना ही मुश्किल ... देखने पर देखा कि किसी ने देखा ही नहीं था कि दूध उबलकर खोया बनने की तैयारी में था ... सिंक में बर्तनों का ढेर पिता और पुत्र टीवी की टीआरपी बढ़ा रहे थे ... पुत्री चादर ओढ़ कर सोने का अभिनय कर रही थी ... क्योंकि पतली सी चादर में से मोबाइल की लाइट अपने चलायमान होने का संकेत दे रही थी ... सुबह के 10.30 बज रहे थे। दोपहर के खाने की कोई तैयारी नहीं थी ... ऐसे कैसे जा सकती थी? वह चुपचाप काम में लग गई .. . भीगे हुए राजमा उसने गैस पर चढ़ा दिए ... मैले कपड़े वाशिंग मशीन में डालकर किचन में आई। स्लैब साफ कर सिंक के बर्तनों को रगड़ने लगी ... उसने देखा कि कभी जो भारी तले वाली कढ़ाही



थी ... अब छीज रही है ... बहुत साथ दिया था इस कढ़ाही ने पिछले 25 साल से ... उसे अपनी जिंदगी भी ऐसी ही लगने लगी थी ... लड़के की तैयारी कर उसने कढ़ाही गैस पर चढ़ा दी ... खुद से बातें करने में जाने कब से डूबी हुई थी कि मशीन के अलार्म ने उसकी तंद्रा भंग की ... वो राजमा और चावल बना चुकी थी ... जाकर मशीन के कपड़े सूखने डालने लगी ... उसके फोन की घंटी लगातार बज रही थी ... जानबूझ कर उसे अनदेखा करती रही ... पति के टीवी कार्यक्रम में बाधा आ रही थी ... कहने लगे "कब से फोन बज रहा है उठाती क्यों नहीं?" उसने घड़ी की ओर देखा। 11.45 हो रहे थे ... वो जानती थी कि 11 से 11.30 बजे तक मिलने की बात तय हुई थी ... सब मिल गए होंगे। अब उसकी खोज हो रही होगी ...

उसे मौन देख कर पति फिर बोले "अरे भई ... उठाओ ना फोन!" उसने एक भरपूर नजर उन पर डालकर कहा, "क्या करूँ फोन उठा कर आज 11 बजे सारे मित्रों के मिलने की बात थी ... जा तो सकती नहीं ..." मेरा स्वर भारी हो उठा। पतिदेव ने लापरवाही से कहा, "तो चली जाती किसने रोका था?" स्तब्ध रह गई थी। सीधा कमरे में जाकर सिर पकड़ कर बैठ गई। उफ्फ किसने रोका था? ठीक ही तो कह रहे हैं ... उसे किसी ने नहीं रोका था। यह जरूरी नहीं कि स्त्री के पांव में हमेशा कोई और ही जंजीर डाले ... कर्तव्य की जंजीर वो खुद अपने पैरों में डाले बैठी थी ... लम्बे समय तक पंछी पिंजरे में रहे तो अवसर मिलने पर भी उड़ने का साहस नहीं कर पाता ... एक सच यह भी था कि उसे डर था कि कहीं उसका आग्रह ठुकरा ना दिया जाए ... आहत होने से डरती थी वो ... अपनी जिंदगी के कुछ लम्हे अपने लिए चुराने का तो हम है उसे ... बारह बज रहे थे ... उसने हाथ मुंह धोया ... बहुत दिनों बाद जींस और कुर्ती निकाली ... अच्छे से तैयार होकर खुद पर एक नजर डाली ... मुस्कुराई और पर्स हाथ में लिए घड़ी बांधती हुई दरवाजे की ओर बढ़ते हुए बोली "राजमा चावल बना रखे हैं। सलाद काटकर रख दिया है ... दही फ्रीज में है ... मैं शाम 5–6 बजे तक आऊंगी शाम की चाय के समय पहुंच जाऊँगी।"



अचानक वातावरण में एक परिवर्तन आया। पतिदेव और पुत्र टीवी का मोह त्याग कर उसे देखने लगे। कमरे से चादर से बाहर बिटिया ने झांका ... "कहीं जा रहे हो मम्मी?"

बेटे ने कहा "मम्मी में गाड़ी से छोड़ दू?"

पतिदेव बोला, "रिक्शे के लिए खुल्ले पैसे दू क्या?"

उसने एक उजली मुस्कान बिखेरते हुए कहा "नो ... थैंक्स"

हमरो बचपन

देवानन्द कुमार सिंह
एम.टी.एस.
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
मध्य रेल, मुम्बई–400001

बचपन यानी कि जिंदगी का सबसे खूबसूरत पड़ाव, जिसकी यादें हर कोई अपने दिल में संजोकर रखना चाहता है। बचपन की ख्वाहिशें, जिद सब अपनी होती थीं। बचपन की यादों में सबसे ज्यादा खास स्कूल लाइफ की यादें होती हैं। जिंदगी में स्कूल लाइफ का होना और ये समय बीत जाने पर बाद में बैठ कर उसके बारे में सोचना, सच में बहुत मज़ा आता है। वो यादें कभी हंसाती हैं तो कभी रूलाती हैं। सोचते थे बड़े होकर ज़िंदगी अच्छी हो जायेगी लेकिन हमें कहाँ पता था कि बचपन ही अच्छा था। बड़ा होने पर जिम्मेवारियों से पीछा ही नहीं छूटता। स्कूल में तो बहाने बनाकर जिम्मेवारियों से बच भी जाया करते थे।



जैसे – सर कल बिजली नहीं थी, सर कॉपी घर पर छूट गयी वगैरह–वगैरह। बेफिक्र हम थे, बेफिक्र हमारी बातें थी और बेफिक्र सी ज़िंदगी थी।

काश, आज एक बार फिर बचपन में जाने का मौका मिल जाता तो क्लास के पोडियम पर खड़े होकर दो का पहाड़ा पढ़ता – दो एकम दो, दो दूनी चार और दो तिया छे...। आज कितनी भी सेक्सपियर की रचनाएं पढ़ लें, लेकिन एक था राजा, एक थी रानी वाली कहानी वाला मज़ा नहीं आता। मासूम से हम थे और मासूम सी हमारी हरकतें थी। कोई डांट भी दे तो रोने लगते थे और जरा सी में ही खिलखिलाने लगते थे। उस समय न जाने स्कूल क्यों काटने दौड़ता था। स्कूल न जाने के कितने बहाने बनाते थे – कभी देर तक सोये रहना, मम्मी के बार–बार जगाने के बाद फिर से सो जाना, कभी पेट दर्द होने का बहाना बनाना। और आज है कि खुद सुबह जग कर ऑफिस चले जाते हैं, बहाना भी नहीं बना सकते।

हिंदी के नोट्स में ही कुछ पन्नों के बीच में एक पेज मोड़कर संस्कृत का नोट्स बना लेते थे। शायद सभी ऐसा ही करते होंगे। क्लास का मॉनीटर बनने में एक अलग सा गौरव महसूस होता था। होम वर्क्स की कॉपी कलेक्ट करना, सभी क्लास में बच्चों से उत्तर सुनते समय अपने दोस्त को बैठा देना। यह सब आज सोच कर बहुत मज़ा आता है। दूसरे का लंच बॉक्स खाना, डेस्क पर सिर नीचे करके सोते हुए अपने पास वाले दोस्त से फुस–फुसाकर बातें करना दिल को बाग–बाग कर जाता है।

हम भी कभी हंसा करते थे बेपरवाह अंदाज में और आज हंसने में भी तमीज देखा करते हैं। फिर भी कभी–कभार बच्चों के संग लौट जाता हूँ अपने बचपन में। उनके साथ कौवा–उड़, लूडो में बेईमानी करने से कभी नहीं चूकता। आजकल आम के पेड़ पर मंजर कब आते हैं, पता ही नहीं चलता। पहले तो छुप–छुप कर आम तोड़ने का मज़ा ही कुछ और था। पहले शक्तिमान सीरियल आने का इंतजार करते थे, अब तो नेट्फ़्लिक्स, अमेज़न पर कभी भी देख लेते हैं। अब तो केवल बारिश के मौसम में कागज की नाव बनाकर अपनी तंहाइयाँ बाँट लेता हूँ।

बचपन में चोट लगने पर रोते हुए माँ के पास आता और उनकी हल्की सी फूँक से ही दर्द छू मंतर हो जाता था। कभी तो ऐसा भी होता था कि पापा किसी गलती के लिए हमें पीटते थे तो हम रोने लगते तो चुप होने के लिए फिर एक बार पीटते थे। लेकिन एक बात ये भी थी कि उसके तुरंत बाद पापा हमें चॉकलेट भी दे देते थे।

पहले दोस्ती और दुश्मनी केवल दो उँगलियों का खेल था। दो उंगली मिला लेने से फिर दोस्त बन जाते थे। दोस्ती में न कोई स्वार्थ था, न ही घमंड। सभी लड़ते थे, झगड़ते थे, लेकिन फिर एक हो जाते थे। लेकिन अब ऐसा नहीं होता है। आज तो बात–बात पर अनबन हो जाती है।

दौलत भी ले लो, ये शोहरत भी ले लो
भले छीन लो मुझसे मेरी जवानी।
मगर मुझको लौटा दो बचपन का सावन
वो कागज की कश्ती वो बारिश का पानी।।

कैसी ये उलझनें



सुश्री कल्पना वर्मा
कनिष्ठ अनुवादक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)
कोलकाता शाखा कार्यालय, पोर्ट ब्लेयर

प्रेम, मोह, प्रीति और माया,
भला कोई मनुष्य इससे बच पाया,
हृदय, द्वेष, राग और अर्पण,
मनुष्य जीवन के सच्चे दर्पण।

कभी भाग्य जीवन की कलम बनता है,
कभी जीवन भाग्य पृष्ठ लिखता है,
कोई मानव बनकर भी दैत्य है,
कोई दैत्य मानवता की पराकाष्ठा है।

कोई चाँद पर लकीरों को ढूँढता है,
किसी को लकीरों पर चाँद नज़र आता है,
कोई शाम को गुलाबी किए मदमस्त है,
किसी की गुलाबी शाम भी स्याह है।

कोई अकेलेपन का शिकार है,
किसी को सुकून की रोटी भी नसीब नहीं,
कोई दुनिया की सैर को तरसता है,
किसी को घर का एक पल भी नहीं।

कोई औलाद के लिए दर–दर भटकता है,
किसी की औलाद दर–दर भटकाती है,
कोई प्रेमी के प्रीत में पागल है,
किसी का प्रेमी खूब रूलाता है।

कहीं तश्तरियों में खाना बिखरा है,
कोई दाने–दाने को मोहताज है,
कहीं किसी को रातों–रात शोहरत की चाह है,
कोई रातों–रात गुमनामी में खो जाता है।

कोई ईंट–ईंट को जोड़कर आशियाँ बनाता है,
किसी का आशियाँ भूकंप में मलबा बन जाता है,
कोई चूर–चूर होकर भी हार नहीं मानता,
कोई बिना परिश्रम किए हार जाता है।

किसी की वाणी में माधुर्य है,
किसी का व्यवहार मुग्ध कर जाता है,
कोई खून के रिश्ते में होकर भी दूर है,
कोई पराया जाने कब अपना बन जाता है।

नया पाठ जीवन के हर मोड पर,
नयी राह नए स्वप्न दिखाता है,
मानव सोच में ही रह जाता है,
हर सुबह एक नया आगाज आता है।



नया साल नयी आशा : कोविड के साथ जिंदगी की भाषा

सय्यद शैबान फैज़ल
लेखापरीक्षक
कार्यालय महानिदेशक, लेखापरीक्षा (केंद्रीय)
पोर्ट ब्लेयर

जब शुरूआत हुई 2021, तब था माहौल डर का
न था कोई इलाज, और न भरोसा था कल का

वही घर के चार दीवार थे
जो आप के समाज के हर किरदार थे

न किसी के यहाँ आना, न किसी के यहाँ जाना
तब खुद से था घर का हर काम करवाना

बाज़ार और स्कूल हुए बंद, पढ़ाई हुई ऑनलाईन
पाल्यूशन हुई कम, वातावरण हुई सुपरफाईन

अब आफिस भी आ गये घर
और दूर हुई बॉस की डर

मीटिंग भी होने लगे बिंदास
जब इसकी ड्रेसकोड बन गयी कुछ खास

ऊपर होते थे ब्लेज़र और टाई
चाहे नीचे हो बेअर थाई (Bare Thigh)

पर वहीं बंद हुए बहुत से कारोबार
जिससे आये बहुत से आंसू ज़ार–ओ–ज़ार

गरीबों की बढ़ी मुश्किलें
जब बंद हुई फैक्ट्रियां और मिलें

तभी आगे आये कुछ मदद के हाथ
तो किसी तरह गुज़रे उनके दिन और रात

वक़्त के साथ साथ उम्मीदों की किरणें आने लगे
अब वेक्सिन और इलाज के साथ वायरस जाने लगे

ज़िंदगी दोबारा रफ्तार पकड़ने लगी
जब पाबंदियां धीरे–धीरे छटने लगी

आफिस, स्कूल, बाजार फिर से हुए फुल ऑन
जब वायरस कुछ दिनों के लिये बरतने लगा मौन

लोग होने लगे थोड़े से केयरलेस
भूल गए दो गज़ की दूरी और चलने लगे मास्क लेस

जब लोग मना रहे थे पार्टियां और त्योहार फुल ऑन
तभी ओमिक्रोन बन कर आया वायरस का नया डॉन

लोग हुए उदास और फिर से उमड़ने लगे गमों के बादल
था नये साल का मौका और करना था कुछ हलचल

उदास न हो ए बनी–आदम
हौसला रख और, फिर से अपना ले कोविड नियम हरदम

यही ज़िंदगी का है कारवां
यकीन रख ऊपरवाला करेगा हर मुश्किल आसान

जल्दी खतम होगा ओमिक्रोन का भी फीअर
यही उम्मीद के साथ कहता हूँ मैं हैप्पी न्यू ईअर।

अनुरोध



सुश्री नीतू सिंह
वरिष्ठ लेखाकार
कार्यालय महालेखाकार (ले.ह.)
हरियाणा, चंडीगढ़

गर तोड़ा है शीशे की तरह दिल!
टुकड़े तो उठाता जा
ख़ाक में मिलाने वाले
ख़ता तो बताता जा

मिल जाएंगे तुम्हें दिलदार बहुत से
खातिर किसकी जिएंगे हम
रास्ता तो बताता जा

सिला दिया है मोहब्बत का
कुछ और सितम ढ़ाता जा।
गर पूछेगा कोई
कैसे उजड़ा ये चमन
क्या कहेंगे
बहाना तो बताता जा

कुछ हसेंगे हम पर
कुछ शोक करेंगे
इस तिमिर में अब न
चिराग जलेंगे

कुछ प्यार की लाज निभा दे
कुछ तो साथ निभाता जा।

गोमाता के दोहे



डॉ. प्रवीण सोनी
73/318–ए, टैगोर लेन,
शिप्रा पथ, मानसरोवर
जयपुर–302020

पीपल कोऊ वृक्ष ना, नदिया नाहिंन गंग।
ऐसे ही पशु गाय ना – भरती जीवन–रंग।।1।।

गाय हमारी मात है, हम याकी संतान।
आज कष्ट में परि गई, झेल रही अपमान।।2।।

जाके बछड़ा खेत में काम करें दिनरात।
अन्न उगै, विपता हटै, मन में मोद समात।।3।।

गाय–दूध अमृत सरिस, दही–छाछ रस–पूर।
घी की समता को करै? शक्ति देत भरपूर।।4।।

नंगे पामन कृष्ण ने खूब चराईं गाय।
लकुटी–कामर–कलेवा देति जसोदा माय।।5।।

साँचेई गैय्या सदा शुचिता की भण्डार।
तृप्त करै इंसान कूँ बहा दूध की धार।।6।।

सतयुग, त्रेता–द्वापरउ गैय्या कौ सम्मान।
परि कलजुग में आइकें बदलि गयौ इंसान।।7।।

माता ते ममता घटी, लालच गयौ समाय।
और कसाई बनि गयौ जननी कूँ कटवाय।।8।।

गोसेवा ते बढ़ि सखा नाएं कोऊ पुन्न।
जो सेवा कर गाय की उनकौ जीवन धन्न।।9।।

गाय–दूध लघु बालकन देवतु जीवन–दान।
याके लाभन को कहै? समझौ अमृत–पान।।10।।

गऊ मूत्र सेवन करें नासि जात हैं रोग।
सोवत ते जगि जाय तौ भारत बनै निरोग।।11।।

गैय्या के दर्शन करें अथवा हो स्पर्श।
नर पवित्र है जातु है, मन में बाढ़ै हर्ष।।12।।

गऊ माता की देह में देव कोटि तेतीस।
अस पवित्रता जानि कें पालत रहे महीस।।13।।

गायु–खुरन की धूरि हू नर कूँ करै पवित्र।
धन्य विधाता आपकूँ, रचना करी विचित्र।।14।।

गाय प्रकृति की सहचरी करै पुण्य की वृद्धि।
जीवन में सुख–शांति हो, नित ही बढ़ै समृद्धि।।15।।

गोबर गैय्या मात कौ ईंधन कौ भण्डार।
शुद्ध देहरी कूँ करै, जीव विषैले मार।।16।।

गाय–पीठ ब्रह्मा बसें और गले में विष्णु।
मुख में रूद्र विराजते याते बड़ी सहिष्णु।।17।।

मध्य बसें सब देवता और पूँछ में नाग।
गऊ–मूत्र–गंगा बसै जेहि सबते अनुराग।।18।।

नेत्रन सूरज–चाँद हैं, स्तन–वेद–निवास।
रोम–कूप में महाऋषि, पूरन करती आस।।19।।

गऊ न होती धरा पै, जीवन लगतु कुरूप।
शक्तिहीन अति कृष सकल, रंक होय या भूप।।20।।

गो समान कोउ धन नहीं, गंगाजल सम नीर।
संत न होते धरा पै, को जानत पर–पीर।।21।।

देवराजऊ करत हैं गईयन ते अति प्रीत।
गऊ–दान गोदा बने, लयौ सबन मन जीत।।22।।

गऊ–दूध ते ई भयौ इन्द्रदेव–बल–पुष्ट।
या कारन ठहरतु नहीं सम्मुख कोऊ दुष्ट।।23।।

जा नर के घर पावती दुख बिचारी गाय।
सो जीवत दुख पावही अंत नरक कूँ जाय।।24।।

जो नर जग में चाहते लाभ निजी संतान।
मेरौ तौ मंतत्य ये, रखें गाय कौ ध्यान।।25।।

गो–रज पाप नसावनी छूमंतर सब कष्ट।
गईया की सेवा करत, बुद्धि न होवै भ्रष्ट।।26।।

गो–गोबर के ऊपरा जो नर लेवै काम।
शुद्ध होय वातावरण, मन पावै विश्राम।।27।।

कुष्ठ रोग, गठिया–फ्लू नासतु है गो मूत्र।
याकौ सेवन नित करौ यही स्वास्थ्य कौ सूत्र।।28।।

गोधन ही है प्रबल बल, कम न आँकिए वीर।
याकी सत्ता ना घटै जबलों नदियान–नीर।।29।।

गौएं ही कल्याण निधि औ जीवन–आधार।
नित आभार जताइए, मत समझौ इन भार।।30।।

जाप गोमती मंत्र कौ जो नर कर दिन तीन।
निःसंतान कूँ पुत्र हो, धन पावै धनहीन।।31।।

सब देवन की मात है, विश्वधात्री गाय।
करै उर्वरा भूमि कूँ तबै फसल लहराय।।32।।

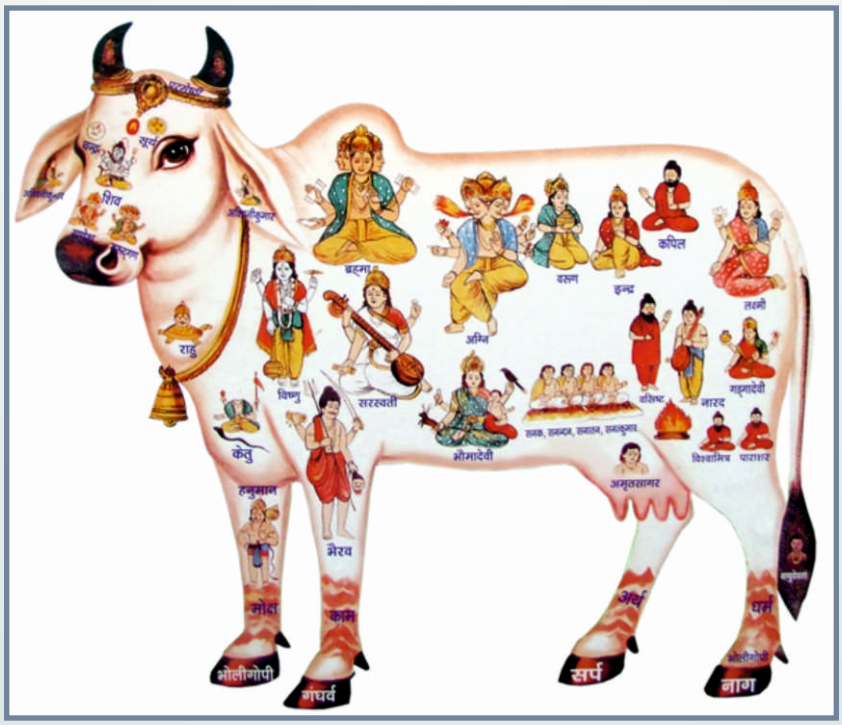
बहुला, नन्दा, सुभद्रा, सुरभि, सुशीला–नाम।
लोकमात इनकूँ कहें, क्षीर सिंधु तब धाम।।33।।

ब्राह्मण औ गो एक हैं, इक कुल के द्वै भाग।
दोउन श्रद्धा राखिए औ राखिए अनुराग।।34।।

गाय शब्द छोटौ बहुत परि बढ़ि लाग अकास।
याकी सेवा के बिना जग कस होय विकास।।35।।

निज माता ते ऊ बड़ी त्यागमयी है गाय।
तन–मन न्योछावर करै, सूदौ–सरल सुभाय।।36।।

गाय–भूमि–विद्या त्रयी कहलावति अति दान।
इन तीनों के दान कौ फल है एक समान।।37।।



कामधेनु गाय का काल्पनिक चित्र

समझ



मेहरबान सिंह नेगी
वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी (से.नि.)
भूखण्ड-191, (एफ 2), सेक्टर 4, वैशाली,
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश-201010

हर अबोध धरा पर जन्म लेने के बाद
कभी भूख में रोता है
कभी दूर पीकर सोता है
उसका शरीर बड़ा होता है
अपने परिवेश से शनैः शनैः
ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से परिचित होता है।

वह एक दिन
जब नासमझी से जगता है
दुनियादारी को शनैः शनैः समझता है
वह अपने अनुभव इंगित करने लगता है
भूख प्यास गरम सर्द दर्द छुवन गुदगुदी
मां की ममता प्यार दुलार झिड़की
मां मम आ खा समझ जाना
सुर से सुर मिलाना
चिड़िया का उड़ना
कुत्ते का भौंकना
बिल्ली की म्याऊं
बन्दर की ख्याऊं
गाय का रंभाना
अप्रिय स्वर से भय खाना
मां के पास लपक कर आना
अजनबियों से डर तो मां से चिपक जाना
अनुभूति अनुभव का द्वार ज्ञान का प्रकाश है
शुरूआती भाषा परिभाषाओं के रूप का आभास है।
कहा तुमने जो जाने जाना।

कहूं तो क्या मैं लफ्जों में अज़ब से ऐसे मंज़र को!
तुम्हीं कह दो लबों से दो गज़ब के भाव अंतर को।।

तू संग तो ही पूनम है
नहीं संग तो अमावस है
तू संग तो भी खटपट है
नहीं संग तो नई रट है।

समन्दर में उठा तूफां दिल में जब दहलता है।
सही दीदार हो जाए तो ही ये दिल बहलता है।

मचाता हलचल है बादल
जब रिमझिम बरसता है
यही सावन है भादों भी
पपीहरा पीपी तरसता है।

मिलूं जो मैं तुमको तो तुम लुक छुपके हंसते हो।
कह कहके पगली–दीवानी जाने क्यूं तंज कसते हो।।

कहे दुनिया पगली–दीवानी
तो मुझको गम न होता है
हुई दीवनी जिसके लिए मैं
बबली को बावली कहता है।

चले आओ मिल बैठ बातें दो हम संग कर लेंगे।
समझौता भी हो जाए मुलाकातें जो दो कर देंगे।।

मिलूं ना जो तो तुम भी
कोकिल को तरसते हो!
करूं क्या मैं इस दिल का
जिसमें तुम्हीं बसते हो!

मैं कवि दिल पे मरती हूं कवि तिल–तिल पे मरता है।
नहीं मालूम है मुझ को जमाने से फिर क्यूं डरता है!!

ले लो इल्जाम सिर अपने
जो मेरे आधे कत्ल का तुम
खिलखिलाके मैं हंस दूंगी
रहूंगी ना यूं कभी गुमसुम।

मचलती मैं छलक जाऊं मचल के मैं पूरा मर जाऊं।
मरने से पहले वसीयत तन की तेरे नाम कर जाऊं।।

दो बूँद



पंकज अरोरा
लिपिक
कार्यालय महालेखाकार (ले. व हक.)
हरियाणा, चंडीगढ़

दो बूँद ...?
दो बूँद बारिश की आस।
किसान की दो बूँद की आस,
खेत को दो बूँद की प्यास,
एक आँसू है, एक पसीना,
दो बूँद बारिश की आस।
बीज को दो बूँद की प्यास,
फूल और फल बस दो की आस।
सुख व खुशी बस दो की आस।
दो बूँद बारिश की आस।

इंद्र की बारिश की आस,
सूखे को बारिश की आस,
बच्चे को दूध की प्यास,
बस दो बूँद बारिश की आस।

पोलियो में दो बूँद,
इलाज सिर्फ दो बूँद,
अमृत भी दो बूँद,
जहर भी दो बूँद,
बस दो बूँद बारिश की आस।

दो बूँद से अमरता,
दो बूँद से तबाही,
दो बूँद से दुनिया का नाश,
दो बूँद जिंदगी का नाम।
बस फिर क्या समझे?
समझदारी की दो बूँद,
नासमझी पर है भारी।
बस दो बूँद बारिश की आस।

उठो जागो और कर्म करो,
दो बूँद की आस,
टूटने मत दो।
पालो अमृत को,
जीत लो विश्व को,
ताकत है सिर्फ दो बूँद
बस दो बूँद बारिश की आस।

सत्य और प्रेम का संदेश,
समझो और जानो,
विश्व को सचेत करो,
जियो और जीने दो।
दो बूँद की आस,
मिटने मत दो।
बस दो बूँद बारिश की आस।

मंत्र फूँककर,
विश्व विजेता बनो।
धर्म युद्ध जीतकर,
कल्याण पथ पर चल पड़ो।
आस सिर्फ दो बूँद,
दो बूँद जीवन के।
सुख व शांति बस दो बूँद,
दो बूँद बारिश की आस,

दो ही बूँद प्रेम की प्यास,
प्रेम की प्यास, दो बूँद बारिश की आस .....।

धरती का दर्द



मुनीष भाटिया
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, चण्डीगढ़

मैं अभागी धरा कुरुक्षेत्र की
आँचल मेरे में ही
रचा गया कभी महाभारत था
कण–कण मेरा लाल हुआ
कितने लालों के बलिदान से
दागदार हुआ दामन मेरा
भाइयों के कत्ल–ए–आम से
रिश्ते हुए पराए सब अपने भी
कसमें झूठी और वादे टूटे
सत्ता की विचित्र लड़ाई में
भाई बने आपस में शत्रु
मानवता हुई कलंकित थी
राज सत्ता की लड़ाई में
गर किया अधर्म किसी मानव ने
मुझको ही क्यूँ चुना गया
कलंक दोष किसी पापी का
मुझ पर ही क्यूँ मढ़ा गया
सत्य रहता असत्य पर भारी
सिद्धांत रहा ये सदा अटल
कुरुक्षेत्र धरा पर ही मानव को
हरि से ये अमर संदेश मिला
धरती मेरी को कहे मोक्षदायिनी
पर मुझ पर हुए पापों का मोचन
होगा किस गंगा जल से
ये राज हरि ना बता गए
अशांत जग है मोह माया से
उचित अनुचित के भेद से अनभिज्ञ
मानवता चक्रव्यूह में फिर से आज है

खेल सघन और टेढ़ी चालें
राजनीति की समझ ना आई हैं
मेरी धरती के लहुलुहान से
इंसान सीख ना पाया है
सत्ता लालसा के मोहजाल में
हुई ना कभी जन–भलाई
दंभ द्वेष के कटु संगम से
ये सबक विस्मृत कर रहा है
सत्य अहिंसा से ही संभव
जीत मानव कल्याण की है
नहीं रखा कुछ रक्तपात में
पर महाभारत की तैयारी में
फिर से मानव व्यस्त क्यूँ हैं
आतंकवाद के छद्म युद्ध से
और विस्तारवाद के सनकीपन में
आग सत्ता खूब लगा रही है
बनेगा कुरूक्षेत्र फिर मेरे जैसा
इक धरती का टुकड़ा भी
लाजिमी इतना है कि
परमाणु युग के इस महाभारत में
दर्द–ए–दास्ताँ सुनने धरती की
मानव संभवतः बचेगा ना कोई।

प्रयोगवादी कविताएँ



संजय कुमार सिंह
कनिष्ठ अनुवादक
कार्यालय महालेखाकार (ले. व हक.)–।
मध्य प्रदेश, भोपाल

सफलता–असफलता

सफलता के पीछे असफलताओं की
एक लम्बी कहानी है
गैजेटड अफसरों की आत्मा तो
आजकल ज्यादा रूहानी है।
जब तक चिता पर नहीं जाता
एक इंसान का पार्थिव शरीर
तब तक संघर्ष की दास्तान
हर दिन सभी को निभानी है।
आपके अपने दोस्त बनते ही अफसर हैं
आसमान को कुछ यूँ देखते
ऐसा लगता है कि देवताओं से
उनकी प्रतिस्पर्धा पुरानी है
एक ही दफ्तर और एक ही घर में
दो सभ्यताएँ अब हैं बसती
इतने अहंकार से तो वजीर ए आजम
को भी शर्म आ जानी है
गिर–गिर कर उठाता हूँ
अपने शरीर को मैं अब
कर्म करता हूँ अनवरत,
जब तक यह जवानी है।
रिश्ते नातों और दफ्तरों में
ज्यादा तालुक्कातों का क्या फायदा
हकीकत और यूटोपिया को
एक समझना नादानी है।

हमारे बाबूजी

झुके हुए कंधे और लड़खड़ाते
कदमों से चलते हुए
सीढ़ियों से फिसलते हुए,
बाबूजी का आज बूढ़ा होता देखा है
जिसके कंधों पर चढ़कर देखी थी
दुनिया सारे भाईयों ने
आज उस मजबूत नींव को
रिटायरमेंट का इंतजार करते देखा है
देखते–देखते इंसान की कमसिन नमी
कैसे झुड़ियों में बदल जाती है
आज बहुत अरसे बाद बचपन को
मैंने मरते देखा है
रखता है एक इंसान बहुत शिद्दद से
एक घर की बुनियाद
उस घर को दस घरों में बदलते
आज मैंने देखा है।

दो कविताएँ

ए.एम. सालवे
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान निदेशक वाणि. लेखापरीक्षा
बेंगलूर–560001

मेरी तनहाई के कुछ पल

मेरी तनहाई के कुछ पल ऐसे गुजरे,
फिज़ा में अकेला हो जैसे
कुछ सवाल आते हैं मन में,
कुछ जवाब दे जाते वो जैसे
तड़पता दिल एक लम्हे के लिए,
वो वस्ल हिसाब मांगता वो जैसे
सन्नाटों में लहरों की तरल जैसे,
आहटों का कत्ल वो जैसे
सह रहा है जुल्म कोई बे–चेहरा वो जैसे
हर तरफ देखो तो दिल में तन्हाई छाई होती है,
जैसे ज़िंदगी ने जख्म दिये वो जैसे
रोज रौनक–ए–बाजार में हम तो,
गुजर जाते अकेले हो जैसे
शहर–दर–शहर भटकता हूँ मैं अकेला,
जैसे कोई मुसाफिर हो जैसे
रोज रोज आईना–ए–आगोश–ए मोहब्बत में मिलते,
जिंदगी में चेहरा–ए–कातिल वो जैसे
हिज्र भी हासिल हुआ तो ख़राब हुई जिंदगी,
जैसे कोई रियाज बनी हो जैसे
ऐसी नफरत थी जिंदगी में जैसे कोई तेजाब वो जैसे

दिल के जख्मों को देखा न करो यारो

दिल के जख्मों को देखा न करो यारो
मरहम लगाकर उसे सिया न करो यारो
दिल टूटते हैं ख्वाब न देखा करो यारो
जो शहर छोड़ आये उसे याद न करो यारो
ऐसे बेवफा सनम न मिले है जिन्दगी में यारो
कभी इनसे वफ़ा न करो यारो
इंतजार करे उसके आने का,
वो वक्त पिया न करो यारो
रात भर आसमान देखो वो गम पिया न करो यारो
बड़े वादे किये उस बेवफा ने
उस शख्स का नाम न लिया करो यारो
इतना कमजोर नहीं एक दिल वो
मशायरे दिया न करो यारो

जीवन और तुम



योगेश कुमार मिश्र
हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.)
असम, गुवाहाटी

(1)

जीवन क्या है
बुलबुला सा
अभी पैदा ही हुआ हो मानो
अपने चरम की ओर
जाता फूटने को बेकरार
और अंत ...
यही है न जीवन
इसी में कितनी लड़ाई
मन मुटाव
तकलीफ
आँसू खुशी के
कभी सिसकियों के
बस यही है
घूमना गोल
एक वृत पर एक चक्कर
और जीवन का अंत
और यह अंत
देता है
नए जीवन को उद्‌गम

(2)

।।योगी।। तुम वह दीपक तले अंधेरा हो
जिसे ताने हज़ार दिए जाते हैं
लेकिन उस अंधेरे में कोई जुगनू
अपनी रोशनी से कुछ देर करता है उजाला
उसके उजाले को दीपक का प्रकाश नहीं
उसके आस पास का अंधेरा चाहिए
उसमें उजाला है, प्रेम है, सौंदर्य है
पर उसके बोध को
थोड़ा तमस
थोड़ा असत्य
थोड़ा बनावटीपन चाहिए
सफ़ेद झूठ मीठा है
नग्न सत्य विद्रूप
कड़वा और तकलीफदेह है।

तुम केवल मेरे हो
और मैं केवल तुम्हारा ही में जो
रस और भीनी भीनी खुशबू है
वह इस सत्य में कहाँ कि
दिल धड़कता बार बार
हर बार अलग लोगों के लिये
मनुहार लड़ाई शिकवे गिले ...
सब झूठ हैं पर
लज़ीज़ हैं।

सत्य नीम है, करेला है, हितकर है।
अंधेरा ढँकता है सत्य को
दीपक नग्न करता है बदसूरती को।
इस वजह से
तुम दीपक तले अंधेरा हो
असत्य हो
मीठे हो
सुस्वादु हो
हाँ, हानिकारक तो हो ही!



सुश्री मनजीत शर्मा 'मीरा'
सहायक लेखा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व हक.)
हरियाणा, चण्डीगढ़

दो ग़ज़लें

ग़ज़ल – 1

जो मुराद है तेरे इश्क की, वो है रूह–ए–दरिया के पास में
न बुझेगी ये वो प्यास है, चाहे डूब जिस्म–ए–लिबास में।

न शराब में हैं वो मस्तियां, न वो आंख में रहीं सुर्खियां
कोई जाम ऐसा पिला मुझे, न रहूं मैं अपने हवास में।

कभी फूल सा कभी खार सा, ये बला–ए–इश्क अजीब है
इसे दूर से ही सलाम है, कोई रंज ना हो क़यास में।

किसी गैर से न नज़र मिला, न नज़र मिला किसी गैर से
तेरी हर नज़र पे मेरी नज़र, तू है मेरी नज़रों के पास में।

न वो नींद ना वो ख़्वाब है, न वो प्यार है न वो यार है
कहां खो गया है सुकून–ए–दिल, तेरी याद में तेरी आस में।

नहीं ऐब तुझमें कोई मगर, तेरी सादगी भी कमाल है
मुझे लूटा है इसी ऐब ने, मेरे पूरे होश–ओ–हवास में।

किस काम की हैं वो दौलतें, जिसमें नहीं है कोई चाहतें
तेरा इश्क जिसकी नमाज़ हो, वो नवाब है इफ़लास में।

ग़ज़ल – 2

ये कौन मेरी रूह को छूकर गुज़र गया।
मैं सोचती ही रह गई जाने किधर गया।

जिसके लिए मैं आब का इक कतरा भर रही
उसके लिए ही आंख में दरिया उतर गया।

जब से हुआ वो दूरतर मैं होश में नहीं
सबकी दुआ का सिलसिला भी बेअसर गया।

गुफ़्तार की थी मैं धनी दिलदार के लिए
वो ही जुबान–ए–दिल मेरी खामोश कर गया।

यूं तो बड़ा ही था हसीं मंजिल का रास्ता
तन्हा सफर का क्या करूं जब हमसफर गया।

ज़ज्बात का था वलवल जब तक वो ख्वाब था
सच की जमीं पे गिरते ही सब कुछ बिखर गया।

वहम–ओ–यकीं के बीच से मुश्किल था लौटना
'मीरा' तेरा ईमान था जो पुरअसर गया।



आँखों देखी बाबा आदम की धरती : अफ्रीका

लागोस, नाईजीरिया – हाई कमिशनर से मुलाकात और राजनीतिक उथल पुथल के बीच योगाभ्यास

भाग-3 (कड़ी जोड़ने के लिये कृपया पिछले 138वें अंक को देखें)



कमलजीत सिंह रामुवालिया
प्रधान निदेशक

आज 30 मार्च सोमवार का दिन सुबह से ही काफी गरम लग रहा था। नाईजीरिया का बड़ा शहर लागोस, समुद्र तट पर एक बंदरगाह से महानगर में विकसित हुआ है। अतः यहां गर्मी का ज्यादा होना स्वाभाविक है क्योंकि भौगोलिक स्थिति से यह उष्णकटिबंधीय जलवायु क्षेत्र में स्थित है।

पहले की तरह होटल इंटर कांटिनैंटल में नाश्ता करने के बाद मैंने दूतावास में अपना कार्य शुरू किया। मुझे वहां बहुत गर्मी लग रही थी। बिजली बार–बार जा रही थी और दूतावास बिजली की आवश्यकता पूरी करने के लिए डीजल के जनरेटर सेटों पर चल रहा था। मुझे बताया गया कि एक जेनरेटर सेट को मरम्मत की काफी आवश्यकता थी जिसे ठीक होने में एक सप्ताह



विक्टोरिया द्वीप, लागोस का एरियल दृश्य



दूतावास भवन के पास एक नाईज़ीरियाई महिला

से अधिक समय लगेगा और एक जेनरेटर सेट के साथ पूरे दूतावास का काम चलाना मुश्किल हो गया है क्योंकि वीजा और दूतावास संबंधी सेवाएँ हर हाल में परिचालित की जानी है। यहां की बिजली की पूर्ति की समस्या मुझे अपने मुल्क की याद दिलाती है कि यहाँ के लोग भी हमारी तरह बिजली की कमी और लोड शैडिंग के आदी हैं।

हवा में ऊष्णता की मात्रा ज्यादा होने से बहुत ज्यादा घुटन हो रही थी। मैंने उन्हें इस अंतरिम अवधि के दौरान एक जेनरेटर सेट किराए पर लेने का सुझाव दिया जो ऐसी सेवाएँ लेने की उचित प्रक्रिया के बाद प्रतिस्पर्धात्मक कीमत पर होना चाहिए। उन्हें यह विचार काफी व्यावहारिक लगा। जैसे कि मैं महसूस कर रहा था कि गर्मी असहनीय हो रही है क्योंकि एयर कंडीशनर अप्रभावी हो रहे थे, तो मैंने दिल्ली शहर से इमीग्रेट हुए टिफिन कैटरर श्री गुप्ता द्वारा भेजा गया भारतीय लंच करने के बाद होटल के कमरे पर वापस जाने और वहीं से काम करने के बारे में सोचा। परदेस में अगर ज्यादा दिन रहना हो तो अपने देश के खाने के लिये हर किसी का मन जरूर तरसता है। अगर वो खाना मिल जाये, तो एक अजीब सा सुकून और संतुष्टि की अनुभूति होती है। श्री गुप्ता की बिजनेस करने की मेहनत और लगन को मैं दाद देना चाहता हूँ कि परदेस में किस तरह भारतीय लोग दिन–रात मेहनत करके, चाहे कोई भी पैसा–धेला न हो फिर भी जीरो से चलकर एक बहुत बड़ा बिजनेस किसी न किसी दिन स्थापित कर ही लेते हैं। उस देश की न तो हमारे जैसी बोलचाल की भाषा है और न ही कोई सामाजिक सांझ। ऐसे में एक कामयाब बिजनेस



दूतावास परिसर में वीजा इत्यादि के लिए लोगों का जमावड़ा

स्थापित करना हिमालय पर्वत को सर करने जैसा है जिसके लिये सिर्फ मेहनत, लगन और ऊपर वाले की कृपा ही रंग ला सकती है।

रात्रि भोजन का आयोजन श्री जगदीप कपूर एस.एस. द्वारा किया गया था जो वीजा और दूतावास संबंधी सेवाएँ भी देखते थे। उनका घर काफी सुसज्जित था और फर्श भी काफी साफ सुथरा था, लेकिन उन्होंने घर में लगे 15–20 साल पुराने एयर–कंडीशनरों के न बदले जाने पर खेद भी व्यक्त किया। जब अगले दिन मैंने एच.ओ.सी. से यह बात साझा की तो उनका उत्तर काफी रोचक था। उन्होंने कहा कि हमें दूसरों की



रिटा. मेज़र जनरल मुहम्मद बुहारी, जो राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार थे, उनका चुनावी बिलबोर्ड

आवश्यकताओं का ध्यान रखना होता है और दूसरों को भी इसी तरह ध्यान रखना चाहिए। कुछ कमियाँ हमेशा रहती हैं और इन्हें सहन करना होता है। हालातों के साथ कभी–कभी समझौता भी करना पड़ता है ऐसा शायद इसलिये भी हो सकता है कि दूतावास के बजट में कटौती की जाती हो। खैर, कारण कोई भी हो, गिला शिक्वा जरूर था। जीवन का यह रंग भी न हो तो जिंदगी क्या है।

31 मार्च मंगलवार का दिन नाईजीरिया के लिए महत्वपूर्ण होने वाला था क्योंकि आज चुनाव परिणाम घोषित किये जाने थे। अटकलें लग रही थी कि सत्ता परिवर्तन होने की संभावना ज्यादा थी।

कार्यालय से वापस आने के बाद गर्म मौसम से निज़ात पाने के लिये मैंने एक घंटा होटल के पूल में बिताया। मेरे लिए यह एक अच्छा व्यायाम भी था। वहां स्थानीय क्षेत्र से या किसी अन्य अफ्रीकी देश से आया एक जोड़ा भी था। मलेशिया से आई एक अन्य स्लिम महिला भी वहां थी, उसे पानी बहुत ठंडा लग रहा था, हालांकि यह ठंडा नहीं था। तैराकी की लुत्फ उठाने की बजाय वे अपने जलपान इत्यादि में अधिक रूचि रखते लग रहे थे, क्योंकि वे कभी–कभार ही पानी में डुबकी लगा रहे थे। खैर, हर इंसान का लुत्फ लेने का अपना–अपना तरीका ही होता है।

शाम को चाय पीने के बाद, हम विक्टोरिया होटल में डिनर के लिए गए, यह एक भारतीय रेस्तरां था और वहाँ मुख्य कर्मचारियों में से कुछ व्यक्ति भारतीय मूल के थे और अधिकतर स्टाफ स्थानीय नाईजीरिया का था। डिनर का आयोजन श्री मोहन लाल, एक दूतावास अधिकारी ने कराया था जो मुख्यतः सभी संपर्क संबंधी



उस समय के पदस्थ राष्ट्रपति श्री जोनाथल गुडलक का चुनावी बिलबोर्ड

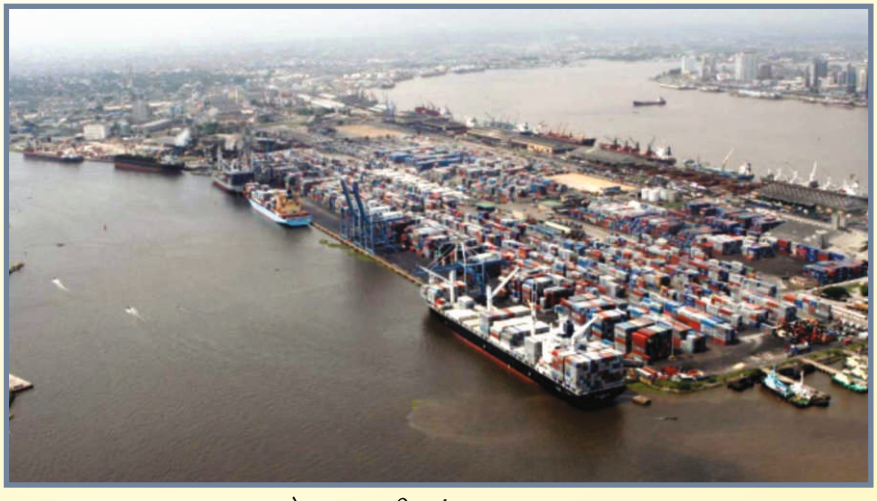
काम के साथ–साथ सारी भाग–दौड़ भी कर रहे थे परंतु तनावपूर्ण काम करते हुए भी वे खुश रहते थे। उनका यह रवैया बहुत अच्छा लगा। वह किसी भी जिम्मेवारी को बोझ नहीं बल्कि ऐज़ाज समझते थे।

शाम तक नाइजीरिया के राष्ट्रपति चुनावों के परिणाम स्पष्ट थे और पदस्थ राष्ट्रपति श्री जोनाथन गुडलक ने श्री मुहम्मदु बुहारी से हार स्वीकार कर ली जो एक पूर्व मेजर जनरल थे जो 1999 से सत्ता में नहीं थे। जोनाथन के इस संदेश के साथ तनाव कम हो गया था और किसी हिंसक घटना की सूचना नहीं आई। मीडिया ने व्यापक रूप से चुनाव के परिणाम दिखाए। अंतर्राष्ट्रीय मीडिया के प्रतिनिधि भी चुनावों को कवर करने के लिए आये हुए थे और उनमें से बहुत सारे हमारे वाले होटल में ही ठहरे हुए थे। झाडू के चुनाव चिन्ह के साथ एपीसी ऑल प्रोग्रेसिव कांग्रेस ने स्पष्ट बहुमत से चुनाव जीत लिया और पीडीपी पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी की हार तीन मुख्य कारकों बेरोजगारी, असुरक्षा और भ्रष्टाचार के कारण हुई थी।

यद्यपि पदासीन राष्ट्रपति जोनाथन अर्थव्यवस्था में अरबों की एफडीआई लाए थे और उन्होंने अर्थव्यवस्था में कुछ सफलताएँ भी हासिल की, लेकिन वह सुरक्षा और भ्रष्टाचार पर नरम और अप्रभावी रहे। इसके अलावा, देश के उत्तरी भाग में धार्मिक नफरत के आधार पर एक चरमपंथी आतंकी समूह 'बोको हराम' के उदय और सरकार की घटती विश्वसनीयता को रोकने में सरकार की विफलता रही यद्यपि उन्होंने चुनाव के दिन दावा किया कि उन्होंने आतंकी समूह के मुख्यालय को नष्ट कर दिया है और इनका सफाया करने का अभियान जारी था। परंतु जनता को समझाने की कार्रवाई में काफी देर हो गई थी।

1960 में स्वतंत्रता के बाद, यह आठवां चुनाव था और यहाँ चुनाव के बाद कानून और व्यवस्था को कायम रखने की समस्या अक्सर बड़े स्तर पर पैदा हो जाती है। और इसी बात का अंदेशा इस बार भी था कि इस चुनाव में राष्ट्रीय और विधानसभा चुनावों में बायोमेट्रिक कार्डों का पहली बार प्रयोग किया गया था। हमें बताया गया कि भ्रष्टाचार सरकारी कार्यालयों की कार्यप्रणाली का एक हिस्सा है और यहां विभिन्न प्रकार के माफिया भी मौजूद हैं और यहाँ कच्चे तेल की भी बहुत चोरी होती है। देश में मुश्किल से 5000 मेगावाट बिजली का उत्पादन होता है और लागोस जैसे वाणिज्यिक हब में भी बार–बार बिजली कट लगता रहता है। उद्योग अधिकतर डीजल से उत्पादित बिजली पर निर्भर करते हैं जोकि काफी महंगा पड़ता है।

मुख्य प्राइवेट मल्टीनेशनल कंपनियों और कारोबार दोनों स्तरों पर और कुशल एवं अर्धकुशल स्तरों पर भी भारतीयों की काफी मौजूदगी है। भारतीय समुदाय सार्वजनिक प्रोफाइल को कम रखता है और अपने काम पर ध्यान ज्यादा केंद्रित करता है। मूल जनसंख्या



लागोस समुद्री बंदरगाह का दृश्य



बंदरगाह की तरफ कतार बनाये हुए समुद्री जहाज

के साथ उनका सामाजिक संपर्क भी ज्यादा नहीं है। यानि कि उन्हें मुख्यतः काम से मतलब है बाकी गतिविधियां ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं है।

आज 1 अप्रैल बुधवार, जैसा मैंने कल रात्रि सोचा था, मैं जल्दी उठ गया। पिछले कुछ दिनों से चल रही गले की समस्या से अभी मुझे निज़ात नहीं मिली थी। परन्तु पहले के मुकाबले मेरा गला थोड़ा बेहतर था लेकिन अभी भी थोड़ी खराश परेशान कर रही थी। मैंने अपने लिए लिप्टन येलो लेबल चाय तैयार की और अटलांटिक महासागर और विक्टोरिया द्वीप पर बारिश के बादलों को देखते हुए चुस्कियाँ लेकर चाय पी। कुछ बादल काफी गहरे थे। रात में हल्की–फुल्की बारिश हुई थी। मैं पोर्ट की तरफ आते कुछ समुद्री जहाजों को और जहाजों की एक लंबी कतार को देख सकता था जिन्होंने या तो लंगर डाल रखे थे या धीरे–धीरे पोर्ट की तरफ बढ़ रहे थे। लगभग सुबह 7 बजे मैंने अपने मुख्य अधिकारी के साथ पब्लिसिटी के विषय पर चर्चा की। यह हमारा विशेष पड़ताल का विषय था। उसके बाद मैंने जिम जाने का सोचा। मैंने साइकिल चलाकर 165 कैलोरी बर्न की तथा चेस्ट एवं शोल्डर प्रेस एक्सरसाइज की। फिर आई योगा करने की बारी। योगा शुरू किया लेकिन स्ट्रेच के कारण कुछ बेचैनी महसूस हो रही थी ऐसा प्रायः तब अनुभव किया जाता है जब आप योगा को लंबे समय के बाद या पहली बार योगाभ्यास करते हैं। यह शरीर की सामान्य प्रतिक्रिया थी अतः मैं थोड़ी देर ही प्राणायाम कर पाया। परन्तु यह एक अच्छी शुरूआत थी और उस देश से वापस आकर इसे जारी रखने के बारे में सोचा। इस तरह की रूटीन बनाना, सेहत के लिये लाभकारी रहता है बशर्ते कि ज्यादा या ज़ोर से न करें, बस आराम से करें।

यह सुबह के नाश्ते का वक्त था मैं लिफ्ट से नीचे बुफ़े वाली जगह पर गया और मुसली, फ्लेक्स, बादाम, किशमिश, शहद, सोया मिल्क के मिश्रण और थोड़े से क्रैनबेरी जूस के साथ नाश्ता किया, जूस चाहे थोड़ा खट्टा था परन्तु सोचा आज दिन में कोई खटास नहीं होनी चाहिए। चूंकि मुझे उच्चायुक्त से आज मिलने की उम्मीद थी, मैंने अपने बैग से एक छोटी स्मारिका



हाई कमिशनर श्री ए.आर. घनश्याम, आई.एफ.एस. के साथ, श्री चौधरी, लेखक एवं श्री कपूर

निकाल कर साथ रख ली और मिशन पर पहुँचने के लिये यात्रा शुरू की। ऐसी स्मारिकायें, मैं सभी देशों, जहाँ–जहाँ मुझे अफ्रीका की इस यात्रा पर जाना था, वहाँ स्थित एचसीआई यानि हाई कमिशनरों को भेंट करने के लिए अपने देश से साथ लाया था।

मुझे बताया गया कि हाई कमिशनर नाइजीरिया की राजधानी अबूजा से आ रहे हैं। वो कुछ आधिकारिक कार्यों से फुर्सत होकर हमारे लिये विशेष समय निकाल कर मिलने वाले थे। वो विक्टोरिया द्वीप पर स्पाइस रेस्तरां में दोपहरी भोज की मेजबानी करेंगे। ये रेस्तरां शाम को डांस और लाइव बैंड का आयोजन भी करता था। जब हम वहाँ पहुँचे तो देखा कि मेहमानों के मनोरंजन के लिए कुछ कलाकारों ने शाम को पार्टियों के लिये पहुंचना भी शुरू कर दिया था। यहाँ मुख्य शेफ एक नेपाली था और उसे सही मिक्स एवं मैच और विविधता के साथ अच्छा भोजन तैयार करने की महारत हासिल थी। यह मुख्यतः भारत के अभिनव व्यंजनों वाला उच्च गुणवत्ता का फूड रेस्तरां था। टेस्ट प्लेटर के लिए कुछ ट्विस्टिड कुकिंग के साथ तैयार किया यह भोजन वास्तव में बहुत अच्छा था और तरो ताज़ा करने वाला था।

हाई कमीश्नर श्री ए.आर. घनश्याम जी के साथ हमारी मुलाकात आधिकारिक होने के बावजूद काफी अनाधिकारिक रही और यह हम सभी के लिए और स्वयं उनके लिए भी तरो ताजा करने वाली थी। उनका व्यक्तित्व अपने पद का अभिमान न करने वाले, जमीन से जुड़े हुए एक व्यक्ति के रूप में था। इतने बड़े पद पर होने पर भी यह सादगी और विनम्रता होना अपने आप में एक आदर्श नमूना है। उन्होंने अपने बहुत से कूटनीतिक अनुभवों को हमसे साझा किया, उनको सुनकर काफी अच्छा लगा और वे प्रेरणादायक व्यक्ति थे। हज यात्रा के लिए कंप्यूटर के माध्यम से चयन करने की प्रणाली को बेहतर करना और उनके द्वारा प्रणाली में किए गए सुधारों और बदलावों से संबंधित मामले में न्यायधीशों से प्रशंसा प्राप्त करना, उनके द्वारा की गई महत्वपूर्ण सेवाएं रही। उनकी मेजबानी लाज़वाब थी। दसतरखान लग गया था। दोपहर का भोजन इतना लजीज और शानदार था कि हमने इसी कारण रात का भोजन न करने का निर्णय किया क्योंकि लगभग शाम के तीन बज चुके थे और सोने के समय तक हमारी भोजन करने की कोई इच्छा नहीं होने वाली थी।



विदा के समय हाई कमिशनर, श्री वी. नेगी, प्रशासन अधिकारी एवं लेखक

शाम को हमने दूतावास कार्यालय में पूरे दिन का अपना कार्य समाप्त किया और होटल इंटरकांटिनेंटल के 9वें तल पर स्थित कमरा संख्या 903 में वापस आ गए। कमरे में एक छोटे फ्रिज के रूप में एक छोटा बार भी मौजूद था जो हमेशा बंद रहता था और इस जलपान के विषय में किसी से पूछने का मेरे पास समय भी नहीं मिला। मुझे दरवाजे की घंटी सुनाई दी और वेटर फ्रिज में रखे मौजूदा स्टॉक को लेने आया। उसने गिनती शुरू की, मैंने उससे कहा कि स्टॉक की स्थिति पहले जैसी ही है क्योंकि मैंने उसमें से कुछ भी इस्तेमाल नहीं किया है। जब मैंने उससे इन वस्तुओं की कीमत पूछी तो उसने पैंटरी टॉप के पास रखी हुई एक लिस्ट की ओर इशारा किया। इस लिस्ट में देखा

ITEM		QUANTITY	PRICE EACH
Johnie Walker Black Label	5d		N1800
Johnie Walker Red Label	5d		N1800
Smimoff Vodka	5d		N1800
Barcardi Rum	5d		N1800
Jack Daniels Whiskey	5d		N1800
Baileys	5d		N1800
Cognac	5d		N2500
White Wine	187ml		N2200
Red Wine	187ml		N2200
Star Beer (can)	330ml		N1100
Gulder Beer (can)	330ml		N1100
Heineken Beer (can)	330ml		N1100
Malta (can)	330ml		N800
Mineral Water	500ml		N800
Perrier Sparkling Water	330ml		N1500
Sprite (can)	330ml		N800
Coca Cola (reg)	330ml		N800
Coca Cola (light)	330ml		N800
Red Bull	330ml		N1500
Fruit Juice	250ml		N900
Out of Africa Macadamia Nut			N1100
Out of Africa Macadamia Mixed Nut			N1100
Pringles Snack			N950
Orbit Spearmint Gum			N700
Mars Chocolate Bar			N950
Kit kat Chocolate Bar			N800
Milk Chocolate Bar			N950
All prices are inclusive of Tax			TOTAL

मिनी बार का रेट कार्ड हैरान करने वाला था



होटल के मिनी बार में उपलब्ध विभिन्न पेय जल

तो पता लगा कि उसमें वस्तुओं के दाम इतने ज्यादा थे कि मानो आसमान छू रहे थे। जब मैंने पूछा कि इतने अधिक दाम क्यों हैं तो उसने जवाब दिया कि क्योंकि ये होटल के अंदर मुहैया करवाए गये हैं। बाहर आप इसे बाजार मूल्य पर ही खरीदते हैं। मैं रेटकार्ड पर लिखी कीमतों को देखकर आश्चर्यचकित था, जैसे कि 500 मि.ली. एक्वाफीना मिनरल पानी की कीमत 600 नीरा अर्थात ₹200 के बराबर, 330 मि.ली. कोका कोला की कीमत 800 नीरा अर्थात ₹267 के बराबर और किटकैट चॉकलेट बार की कीमत 950 नीरा अर्थात ₹317 के बराबर थी। भारत में इसी आकार की चॉकलेट ₹30 से ज्यादा की नहीं होती, पानी की बोतल 10 से 15 रूपये और कोला वगैरह 40 रूपये से भी कम होता है। जब हमने दूतावास अधिकारियों से रोजमर्रा की वस्तुओं की कीमतों के बारे में पूछा तो उन्होंने बताया कि सामान्यतः यहाँ वस्तुओं की कीमतें भारत में ऐसे पदार्थों की कीमतों से तीन गुना होती हैं। वस्तुओं की कीमतों का इतना फर्क बहुत अचंभित करने वाला था। खैर, आज की रात को हमें कुछ भी खाना नहीं था तो मैंने पहले से बचे हुए एक सेब से ही रात का डिनर किया।

क्रमशः अगले अंक में ...



वसंत ऋतु के आगमन पर दो बालाएँ सरसों के पीले फूलों वाले खेतों में किकली करती हुई



लोहड़ी के अवसर पर पूजा–अर्चना करते हुए लोगों का समूह

पंजीकरण सं.–2 एल (9)/8747177/87(90)

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले
वतन पर मरने वालों का यही बाक़ी निशां होगा



अमर शहीद

भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव

के बलिदान दिवस (23 मार्च) पर कोटि–कोटि नमन

ऐ मेरे वतन के लोगों, जरा आँख में भर लो पानी।
जो शहीद हुए हैं उनकी, जरा याद करो कुर्बानी॥

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली–110124